ॐ नमःश्री ज्योतिःस्वरूप परब्रह्म परमात्मा सूर्य्यनारायणाय नमोनमः ॐ नमः ॥

ललनचन्द्रिका का
निवेदन

विदित हो कि यह पारावार रहित घोर संसार में एक से एक महान् विद्वान् ज्ञानवान् गुणवान् चतुर सुजान लोग हो गये हैं यथा श्री ब्यासदेव जी महाराज महान् कुशल कवि कि जिन्हों ने अठारह पुराण रचकर जगत् को मुक्ति मार्ग व हरिभक्ति का प्राप्त होना सूचित किया अथवा शुकदेव जी महाराज कि जिन्हों ने भागवत द्वारा राजापरीक्षितको मोक्षपदवीका प्रधान बनाया अथवा बाल्मीकि जी जिन्हों ने अपने बुद्धि बिक्रमसे बाल्मीकीय रामायण कल्पित कर इस जगत् के उद्धारणार्थ एक नौका बनायदी इत्यादि अनेकों मुनी अनेकों गुनी अनेकों कविजन अनेकों बुध सुजन अपनी अपनी युक्ति बुद्धिबल से सनातन उस परब्रह्म परमात्मा के गुणानुवाद गाते ही चले आते अरु नहीं अघाते हैं तो फिर इससे यही जानाजाता है कि इस असार संसार में यह महादुर्लभ मनुष्य चोला पायकर केवल परमात्मा के गुणानुवाद ही गान करना कथन करना स्मरण करना व सुनना यकसार है और सब असार है क्योंकि हरिभजन का वो प्रताप है कि साक्षात् हरिस्वरूप जीव को बनाय इस जगत् के आवागमन के महान् दुःखों से छुड़ाय देता है ॥ अतएव ॥ इसी कारण से इस ललन सरीखी मतिवाले ललन ने अपनी तुच्छ लघु बुद्धि के अनुसार आप महाशयों की परम अनुग्रह वा आशीर्वाद से यह ललनसागर में का एक चतुर्थ विभाग कि जिसमें बारह खरि अकार से हकार पर्य्यंत वर्ण सम्बंधी शब्दों में अनेक

भावालंकार नायकाभेद संपन्नित अनेक रसों से चुचुहाते हुये जमक प्रिय विधानिक पूर्व्वार्द्ध में तो अनूठे अनूठे कवित्त और उत्तरार्द्ध भाग में अन्योक्तिक कवित्तों की श्रेणी अमित भाव सुख सृजेणी, यथा, पक्षीविलास, व, प्रसून प्रकाश, बाना किराना, व, मसालादि अनुमाना, विटप वर्णना, व, साग भाजी विषर्णना, व्याख्यान तरुफलान, व, रंग गणना विधान, पात्रण शैली, व, नखशिख गैली, तंडुलादि अनाज जाति वर्णन, व, प्रकरण वस्त्रन, संख्या मिष्टान्न, व, निमकीन सामान, पात्र सृजायक शस्त्र सूचनिका, लोह पात्रस्य गणनिका, आभूषण प्रसंग, व, रत्नादिकनु तरंग, गोटा किनारी बाना, व, भूमिका बिसातखाना इत्यादि अनेक प्रसंगों में अनेक नायका भेद, अनेक रस भावालंकारों में अतिशय रँगीले ढँगीले, व, छबीले फबीले, व, चटकीले मटकीले, व, रसीले सुख सरसीले प्रबंधों में अनोखे अनोखे कवित्त मुद्रित हैं बनाया अब आप समस्त गुणज्ञ कविजन व महाशयों सज्जनों व सर्व्व साधारणों से मुझ अल्पज्ञ की ये सविनय प्रार्थना है कि कदापि किसी पद में व कोई शब्द में, व, कहीं अर्थ भाव प्रबंध में, या, छापे ही में छपजाने की अनुचिता से कहीं पर अशुद्धता हो गई होय तौ आप महाशयों को ज़रूरी कपट रहित हो उचित है कि मुझे अपना लघु (छोटा) ललन जानकर क्षमापन करें अथवा पत्र द्वारा ज्ञात करा देने का उद्योग करैं मैं उनको अनेकों आशीर्वाद व धन्यवाद देकर अपने आप को कृतार्थ करूंगा ॥

अग्रे प्रार्थनावत् सर्व्व सज्जनों को प्रकट किया जाता है कि पुस्तकैंतो कवित्तोंकी अनेकों छापी गई हैं परन्तु इस प्रकरण संबं-

धिक कि जिसमें सिलसिलेवार समस्त स्वर व्यञ्जनिक शब्दों सम्पन्नित कि जिनमें क्रिया तक अन्य वर्ग की न छुइजाय ऐसी पुस्तक कवित्तों की आज तक कोई नहीं देखने में आई थी सो हे महाशयो मेरी इस जीजान मारी महागूढ़ मेहनत पर ध्यानधर आप सज्जनोंको मुझे यही आशीर्वाद सच्चे हित चित्त से देना चाहिये कि ऐसे ऐसे अमित प्रकार के अपूर्व्व सुखदायी पदार्थ आपकी सेवा में मैं सदैव सनातनही निवेदनकर अपने आप को कृतार्थ समझा करूं ॥ यथा ॥

दोहा ॥

सुजनन की आशीश से होत सुजन अल्पज्ञ ।
यहि कारण विनवत ललन कृपा करहु सर्व्वज्ञ ॥ १ ॥
कवि न कछुक पंडित न कछु बुधिबल विद्या हीन ।
ललनमती अघ कर्म्मबश सकल कलामति छीन ॥२॥
औगुन गठरी शिर धरे मन माया में मेल ।
ललन बनों विहरत चहूं विषय असत रचि खेल ॥ ३ ॥
गुरु गोविंद की कृपा बश धौं तुव आशिष पाय ।
ललनहुं की बनिजाय कछु कह अचरज अधिकाय ॥४॥
हूं द्विज दीन अकिंचनहि बुधि विद्या हतमान ।
मेरिहु सब बनिजा जो तुम द्रवहु ललन महि जान ॥५॥ इति ॥

आपका

पंडित ललनपिया शर्म्मा सारस्वत अष्टवंश भारद्वाजी
फर्रुखाबाद मुहल्ला मित्तूकूंचा निवासी ॥

अब इस ललनचन्द्रिका के संकेतिक नियमों को सरल विधिसे सूचित करते हैं॥

इस पुस्तक में जो कि टीका कवित्तों का किया गया है उसका यह नियम संकेत रक्खा है कि पहिले तो कवित्त लिखा है और जिस आशय पर जो कवित्त बांधा गया या बँधा है सो आशय प्रसंग में मुद्रित कर दिया है पश्चात् कवित्त में जो जो मिलेहुये शब्द हैं उनकी संधि प्रकरण से रूप खोलदिया और + इस तरह का चिह्न लगायदिया है तिस पीछे उसी कवित्त का टीका किया गया है, और फिर, सरल से सरल विधि शब्दों का अर्थ समझ लेने की यही रक्खी गई है कि कवित्त और टीका दोनों के शब्दों पर अंक चिह्नित कर दिये गये हैं ताकि सर्व्वसाधारण भी जिस शब्द का अर्थ जानना चाहें तो अङ्क गणनाके मिलान करने से हरेक पद का भाव रस व अर्थ जान सक्ते हैं क्योंकि यह प्रसिद्ध बात है कि जो जानै सो मानै॥ जब तक किसी पद का अर्थ व भाव न जाना जाय तब तक कुछ उसका स्वाद नहींआवता और न कुछ मनको आनंद प्राप्त होता है। इसी हेतु अपनापरिश्रम सुफल करने के वास्ते और आप महाशयों के प्रसन्नार्थ टीका करके यह पुस्तक प्रतिष्ठित रईस लखनऊ के मुंशी नवलकिशोर साहब (सी, आई, ई) के सुशील पुत्र भार्गव कुल मुकुटमणि धर्म्मपारायण मुन्शी प्रागनारायण साहब की सेवा में मैंने निवेदन करदी है सो उन्हीं की सहायता व अनुग्रहसे प्रकाश की गईहै यह ललनसागरके दश हिस्सोंमें का यह एक चतुर्थ भागहै॥

यह ललनचन्द्रिका क्या है आनंदमन्द्रिका है पीयूषवृन्दिका है इसकी चसक लेते ही हृदयाम्बुज प्रफुल्लित हो उठता है॥ लीजिये लीजिये इस रसको भी पीजिये और सुख से तृप्त हूजिये॥

ललनचन्द्रिका का

समर्पण ॥

प्रियवर

कविता रसिक शिरोमणि

श्रीमान् महामान्याधीश गोद्विज धर्म्मपालनीय धर्म्मधुरीण धर्म्मावतार अखिल गुणग्राही गुणि गुणहित उत्साही प्रतिष्ठित प्रधाननीय परम सुखद स्थल मल्लापूर ज़िला खीरी अवध शारदा समीप निवासी श्री वर यशेश ठाकुरेश राउ साहब श्रीमुनेश्वर बख्श सिंह समीपेषु॥

महाशय

यह तो मैं जानता हूं कि ऐसे तो आपने अनेकों क्रीट कुंडलादि आभूषण पहिर डाले होंगे परन्तु फिर भी मैं आप को अनन्य हरिभक्त गुणग्राही जानकर यह एक छोटी सी गरीबामऊ प्रेमपुरित उत्साह अंकुरित यथोचित मुकुटमौरी सटीक ललनचन्द्रिका रूपी भेंट जिसमें कि अनेक चित्र विचित्र हरि चरित्र रूपी अनमौलिक काव्य संबंधिक ललित रत्न मुद्रित हैं आप की सेवा में निवेदन करता हूं सो इसे आप प्रीति पूर्व्वक प्रमोद मानयुति अंगीकार कर अपने भक्ति शिरोमणि मुकुट की चन्द्रिका बनाय पहिरियेगा ॥ यथा ॥

दोहा ॥ तव प्रसाद सत्संग फल प्रथम कमाई मोर ।
अन धनदा पितु ललन के करत समर्पण तोर ॥१॥
गौर और विधि करिय कछु गुनिन गरीब निवाज ।
तौ तब ललनै का न फल हो सहजहि सुख ताज ॥२॥

अथ आशीर्वाद ॥

चिरंजीव हो ललन वृधि कुल जिय कोटि बरीस ।
फूलहु फलहु हमेश लहि मम अशीश बकसीस ॥३॥

वही आपका पंडित ललन पिया शर्म्मा
सारस्वत अग्रवंश भारद्वाजी
फर्रुखाबाद मुहल्ला मित्तूकूंचा निवासी ॥

ललनचन्द्रिका का मङ्गलाचरण ॥

बंदना श्री गणेशजी की ॥

(१) सवैया किरीट छन्द ॥

[१] आदि [२] गणेश बुधेश [३] सुखेश [४] विशेष [५] सुवेष [६] यशेश [७] जनायक।
[१०] वेश [८] कलेश [९] अँदेश [११] दली [१४] अभिषेक [१३] अनन्द [१२] हमेश [१५] करायक ॥
[१६] देश [१७] नरेश [१८] धनेश [१९] खगेश [२०] दिनेशरु [२१] शेष [२२] अजेश [२३] धियायक । [३१] जै
[२४] ललनेश [२५] जनेश [२६] तपेश [२७] महेश [२८] उमा [२९] सुत [३०] सिद्धिविनायक ॥ इति ॥

टीका ॥१॥ [१] प्रथम (पूजनीय) [२] गणनके स्वामी, बुद्धि [३] व सुखके स्वामी, [४] अत्यन्त करिके, जेसुन्दर [५] वस्त्राभूषण तिन्हैं धारण किये हुये, [६] कीर्तिके स्वामी, (जो) [७] जाने जाते हैं॥ (और) [८] दुःखादि [९] चिन्ता रूपी, [१०] स्थल के दूर [११] करनेवाले, (व) [१२] सदैव [१३] सुख का [१४] तिलक [१५] करावनेवाले ॥ (और) [१६] संसारमें [१७] राजाओं, [१८] कुबेर [१९] गरुड़, [२०] सूर्य्य, अरु [२१] शेषजो पृथ्वी भार धारी (व) [२२] ब्रह्मादि (देवतों करके) [२३] बन्दनीय॥ (और) [२४] अल्पज्ञों (व) [२५] सेवकों के स्वामी, [२६] यज्ञ मंत्रादि के स्वामी [२७] महादेव [२८] पार्वती जी के [२९] पुत्र जो गणेशजी महाराज [३०] सर्व्वसिद्धी देनेवाले (उनकी) [३१] जय यानी क्षेम होय ॥१॥ इति ॥

ललनचन्द्रिका प्रारम्भः ॥

बासुकिशय्या ॥

अवर्ग ॥ कवित्त ॥ २ ॥

१ ६ ४ ३ २ ७
आली आवलोकी आज अबला अनोखी असि आनन
६ ८ ९ १० ११ १३ १४ १२ १६
अनूप अमि आकरीहि आभा ही । अंजन अँजाये अक्षु अजब
१७ १५ १८ २१ २२ २० २६ २३ १९
अदा अधीक अरु अवलोकन हुं अलबेलि आला ही ॥ अधर
२५ २६ २७ + २९ ३० ३१
अनूठे अलगारन अरुणताई अमृतावली अगार आदरहिं आ-
२८ ३२ ३३ ३४ ३६ ३६ ३७ ३८ ४०
था ही । अंगअंग अतन अभूषण अनन्त अँगे ललन अधिप
३९ ४१ ४२
आभा अकथित आंकाही ॥ इति ॥

सखि प्रति हरि वचनम् ॥

अथ प्रकरण संधि ॥ अमृत+अग्रे+अवली=अमृतावली ॥

१ २ ३ ४ ५
टी० ॥२॥ (हे) सखि आज मैंने ऐसी अद्भुत सुन्दरी देखी (कि जिसका)
६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३
अत्यंतसुन्दर मुख अमृत समूह की शोभा को प्रगट करै था ॥ (और) नेत्रों में अंजन
१४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२
लगाये (तिसकी) अतिशय आश्चर्यमय शोभा और सुन्दर अनोखी चितवन भी
२३ २४ २५ २६ २७ २८
थी ॥ (और जिसके) अजूबा होंठोंपर अत्यन्तकरके ललिआई (मानो) वे अनुमान
२९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४
सुधा पंक्तियों का स्थल सुशोभित हो रहा था ॥ (और जिसके) प्रतिअंग में कामदेव
३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०
(कीफवन) अनेक (रत्नजटित) गहिने पहिरेहुये प्यारीप्यारी शोभा की स्वामिनी
४१ ४२
कि जो कहने में न आसके जचती भई ॥ इति ॥

सखि शीक्षा॥

अवर्ग॥ कवित्त॥ ३॥

आज अवलोको आली अलबेलो आचरण आनिआनि
अबला अगार अधिकारी को। अगम अगाध अन्य आभहि
अकिंचनासि ओछे अपनाये अंग आपदा अगारी को॥ अङ्क
अंगना अपन अनादरै अग्र अग्र अतनै अँगावै अरी ऐसन
अनारी को। आदरादराहि अलगावत ललन असि अकुलदे
अब सौ में अरसी अचारी को॥ इति॥

सखि प्रति सखि वचनम्॥

अथ प्रकरण संधि। आदर+अग्रे+अदराहि=आदरादराहि।
अकिंचन+अग्रे+असि=अकिंचनासि॥

३॥ प्रसंग॥ एक सखी अपनी परम सहेली से अपने हितू गोपाल लाल की सच्ची मित्रताई अरु हित की सगाई की सदैव बड़ाई किया करती थी एक दिन कहीं उसने रसिकशिरोमणि भक्तवत्सल कृष्ण-चन्द्र भगवान् को किसी अन्य सखी के गृह जाते हुये देख अपनी हितू से आन हरि का उरहना दे चिताया देती भई कि तैं तो हरिकी बड़ी प्रशंसा किया करती थी॥

टी०॥३॥(हे) सखि इस समय (तू) और और सखियों के घर जानेवाले

का अद्भुत बरताव देखा। (जो)पराये रूपहीका अधिक से अधिक ऐसा लोभी (व दरिद्री) है (तिस) हलके मनुष्य से प्रीति करने में शरीर को आगे चल दुःख(ही मिल-ताहै देखु पहिले तो)॥ अपनी सगी दिखावते पीछे फिर अपमान करैहैं (सो इसमें तेरा कुछ दोष नहीं है) हे प्यारी कामदेवही ऐसा प्रबल है जो ऐसे नादान को अंगीकार कराय देता है। सन्मानदैकर(जो)परित्याग करै(तौ)ऐसे नादान रसरहित बिचार करने वाले को परबसहुँ में भी दूरही से प्रणाम करना चाहिये ॥ इति ॥

अथ सखि शृंगारिके पटरंग वर्णन ॥ रंगानुमान संख्या ॥२४॥

अवर्ग ॥ कवित्त ॥४॥

आबी आफताबी अबरई अंजनी अजीब अँबिरि अँगूरी आसमानी अमरूदिया। आँबई अमौआ अकरोटी अगरै अनूप आगी अलवानी अफ़सानी अछ अलिसया ॥ अरुण अँजीरी अर्गजी अपूर्व अम्बरीहु अड़की अतेव अलुबुखारिया अनारिया।

\+

अलिकया अनन्त अम्बराभिराम अँग अंग आभरन अँगे असि ललना अजूबिया ॥ इति ॥

\+

अथ संधि प्रकरण अम्बर+अग्रे+अभिराम=अम्बराभिराम॥

इस कवित्त में कोई क्लिष्ट शब्द न होने से इसका अर्थ नहीं किया गया क्यों-कि केवल अवर्गी रंगों के नाम मुद्रित हैं तिन्हैं सभी जानते होंगे ॥ इति ॥

अथ सखि शृंगार वर्णन ॥ वस्त्ररंगानुमान संख्या ॥१६॥

अवर्ग कवित्त ॥ ५ ॥

आली अलमस्त अंग आँगियां अनूठि अति अरुण अँगूरी औ अँजीरि अम्बईसी हैं। अंबरी अबीरी अमरूदी अरु अर्गजीहु अड़की अनारी असगोटी आगईसी हैं ॥ आछी अलवानी आस-

मानी अलिसया अजीब आबी आफताबी अंजनी अगरईमी हैं । अति अभिराम आभरन अप्सरा अनूप ललनप्रिया अपूर्व अदा अर्व्बईसी हैं ॥ इति ॥

सखि प्रति सखि वचनम् ॥

प्रसंग ॥ ५ ॥ श्रीरामचन्द्र महाराज के विवाह में जनकपुर की सलोनी सुकुमार सखियाँ इस प्रकार शृंगार साज सुहावती भईं कैसी शोभा है कि ॥

टी० ॥४॥ (हे) सखि अतिशय शोभा से भरी हुई देवांगना (कि जिनके) मद से भरे हुये शरीरों पर (इस कवित्त के तीन चरणों में मुद्रित जो रंग हैं इन इन रंगों की) अत्यन्त अनोखी अँगियां (व) अतिशय सुन्दर आभूषणों (से शोभायमान और फिर कैसी हैं कि) बाल्यावस्था यानी छोटी उमर की प्यारी अर्व्बनतरह की अद्भुत शोभाओं से (शोभायमान होती भई) इति ॥

आशीर्वाद ॥

इवर्ग ॥ कवित्त ॥ ६ ॥

इँगित इमहिं इतिहास इहिदेशनादि इतरलोकान ईश इक-छत राजहो । इकाइक इकटक ईश्वरीहि इच्छासन इत्थमहिं इन्द्र इव इकबाल बाजहो ॥ इन्दीवरनैनी इन्दुआननीहु इन्दुतनी इन्द्रासन इन्द्र इभु इदानी इकाज हो । इलमहु इमारत इजारदार इखित्यारैं ललन इच्छाहूवत ईक्षण दराज हो ॥ इति ॥

अथ संधि प्रकर्ण ॥ इहि देशन+आदि=इहि देशनादि १ ॥ इन्द्र+आसन=इन्द्रासन ॥ २ ॥

नृप प्रति बुध वचनम् ॥

दो० ॥६॥ (हे राजन हमारे इस) व्याख्यान का यही प्रयोजन है (कि) इन देशनको आदि दैकर सम्पूर्ण भुवनौंके मनुष्यों के स्वामी है निष्कंटक (चक्रवर्त्ती) राज्य करो। (और) यही प्रकार परमेश्वर की दृढ़ कृपासे एकाएकी (शीघ्र) सुरपति समान भाग्यशाली होहु॥ कमलके सदृश नेत्र (व) चन्द्रमा सरीखा मुख ऊख (गन्ना) के समान दुबरीपतरी (रसीली रंगीली स्त्री व) सुरराज सरीखा आसन (व) पुरन्दर के बाहन सम ऐरावत हस्ती इसीसमय यहफल प्राप्तहोय। (और) विद्यारूपी सुन्दरगृह आपकी मलकियतमें बशीभूत होय (व) तुम्हारी इच्छानुसार बहु पुत्रों का दर्शन होय॥ इति॥

अथ सखि समूह शृंगार छबि वर्णन॥

अथ रंगानुमान संख्या ॥४॥ नामानि ॥ इमली १ ईशपातिया २ ईंटिया ३ इलायचिया ॥४॥

इवर्ग कवित्त ॥७॥

इन्दुमुखि इन्दुतनि इन्दुभालि ईंगुरीहु इतिरी इठैली इक
इकअलकावली। इमृतसरीइमारती इजार इच्छित इरानियाँ
इजार के ईमिलो इवासली॥ इन्दीवरनैनी इमु इंजनी इलीम-
दार इक्षुबदनाहूँ इलेमासियाम्बरामली। ईशपातियारी ईंटिया
इलाचियाहु इस्नेमालिया इमान ललनेश इरिकयाकली॥ इति॥

प्रसंग ॥ ७ ॥ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् के बिवाह

में भीष्मक नरेश नगर की सलोनी सुकुमार सखियाँ जिस प्रकार शृंगारसज श्रीकृष्ण मुरारि की शोभा देखने आवती भईं तिन की छटा वर्णन ॥ इति ॥

अथ संधि प्रकरण ॥

अलक + अग्रे + अवली = अलकावली ॥ इव + अग्रे + असली = इवासली ॥ इलोमासिया + अग्रे + अम्बर = इलोमासियाम्बर + अग्रे + अमली = इलोमासियाम्बरामली ॥ इश्किया + अग्रे + अकली = इश्कियाकली ॥

टी० ॥७॥ (कोई) [1]चन्द्रमुखी (कोई) [2]मयंकवत्शरीर की द्युतिवारी (कोई) [3]निशाकर सदृश अमृतयुत मस्तक पर लाल [4]बेंदी लगाये (कोई की) [5]इतर लपेटी [6]घूंघुरवारी [7]हरेक [8]अलकोंकीपंक्ती। (कोई के तनपै) अमृतसरदेशके [9]बनावटकी [10]सुत्थन (जिनमें) [11]मनमाने [12]ईरानदेशीय [13]असली [14]इमली कैसे हरेरंग के [15]कमरबन्द (शोभायमान)॥ (कोई) [16]ऐसी [17]कमल सरीखे नेत्रवाली [18]सुरमा (व काजर लगाये कोई) [19]वेदपाठिनी (कोई) [20]गन्नासरीखी दुबरी पतरी [21]बनेचुनेसुन्दरवस्त्र (आभूषण धारण किये)। (कोई) [22]ईशपाती रंग के (कोई) [23]ईंटसरीखे रंग के (कोई) [24]इलायची के रंग से (वस्त्र धारण किये) [25]पतिव्रता (सुधर्म्मा) [26]पुत्रवती (कोई) [27]चटकीली मटकीली चतुरसखी (सुहावती भई) ॥ इति ॥

नायकानां छबिवर्णन

उवर्ग कवित्त ॥ ८ ॥

अथ रङ्गानुमान संख्या नामानि ऊदा १ उन्नाबी २ उरदई ॥ ३ ॥

[1]उत्तूदार [2]ऊदिया [3]उरोजिनी [4]उरोजौं [5]उत [6]उन्नती [7]उतंगता [8]उमंगती [9]उरातरी। [14]उलहे [11]उरुज [10]उमराई [12]उमुदाई [13]उग [15]उभ्रउभ्र [17]उभ्भरान [16]उत्तमोजिआररी॥ [26]उद्यत [21]उनाबी [20]उभ्र [19]उरदी [18]उछाहनीहुँ [22]उलकापु-

२३ २६ २४ २७ २८ २९ ३०
रीक ऊजनी उसूल उत्तरी । ऊजरोनमात्ति भाह उर्वशी उजागरीक
३१ ३२ ३३ ३४
ललना उला उम्रऊपर उदाररी ॥ इति ॥

अथ संधि प्रकरण ॥ उत्तम+अग्रे+उजियार=उत्तमोजियार॥१॥
ऊजर+अग्रे+उनमत्त=ऊजरोनमत्त २ ॥

प्रसंग ॥८॥ श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् की बरातिनु देवांगनों की छबि वर्णन कैसी शोभा है कि किसीके तो ॥

सखिप्रति सखि वचनम् ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
टी० ॥ ८॥ उन्नूकरी हुई ऊदेरंगकी अँगियाँ कुचौं पर हद्धी व उचाहट बढ़ती हुई
९ १० ११ १२ १३
(जोस भरी) प्रकाश होती हुई । (और जिनके) अमीरी ऐश्वर्य अच्छाई से भरे
१४ १५ १६ १७ १८
हुये सुहायमान प्रकाश है हैकर सुन्दर छटा को प्राप्त सुशोभित होतेहुये॥(और)उत्सा-
१९ २० २१ २२ २३ २४
ही(मन पसन्दी) पोशाक सुन्दर उन्नावी रंग की उलकापुरकी तरंदाजी (व)उत्तर
२५ २६ २७ २८ २९ ३०
के पहिराव की शोभायमान । गौबर्णमस्तानी शोभा अप्सराओं की शोभा-
३१ ३२ ३३ ३४
यमान पुत्रों करके सुशोभित वित्तबाहर उदाराचित्त (देखाती हुई)॥इति॥

उवर्ग कवित्त ॥ ९ ॥

उरोज वर्णन ॥

३ ४ २ १ ५ ६ ७ ८
उनमत्तता उदित उन्नती उरोज धहु उग्र उमराइया उरूज उ-
९ १० ११ १६ १२ १३ १४ १५ १७
लहेउतै । उर्वरा उदर उतपन्ने उभु उमलान उदै उमुदाइयां उमंग
१८ २० १९ २३ २१ २२ २७ २५ २६
उचहे उतै ॥ उक्तिकै उमेश उभै उत्तम उजागरहि उत्तमांग उपरन
२४ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३६
ऊदे उमहे उतै । उर्वशी उरै धौं उडनाह उदयागिरिहि उचरै ल-
३४ ३७ ३६
लन उपमेशहैं उहे उतै ॥ इति ॥

अथ संधि प्रकरण ॥ उमा+ईश=उमेश ॥१॥ उत्तम+अंग्रे+आंग=उत्तमांग ॥२॥ उपमा+अग्रे+ईश=उपमेश ॥३॥

नायका प्रति नायक वचन ॥

प्रसंग ॥९॥ कोई एक नायक किसी सुरूपवती सखी की सुन्दरताई देख कर एक नायका से पूछै है कि उस सुन्दरी के ॥

टीका ॥ ९ ॥ [१] कुचोंपर [२] हद्दों (व) [३] मस्तानापन [४] प्रकाशित है [५] अथवा [६] सुन्दर [७] अमीरी [८] ऐश्वर्य [९] शोभायमान हैं। (अथवा) बीज [१०] उपजाऊ धरती रूपी [११] हृदपर [१२] दो [१३] कमल [१४] प्रकाश है [१५] उपजे हैं (अथवा) [१६] सुन्दरताइयों की हद्दी [१७] उच्चता [१८] को प्राप्त हैं ॥ [१९] अथवा [२०] यह कहिये कि [२१] द्वै [२२] सुन्दर [२३] शिवमूर्त्ति शीशपर [२४] ऊंची [२५] पाग [२६] दिये सुशो-[२७] भित [२८] शोभायमान हैं । (कि) अप्सरा [२९] के उरोज [३०] हैं अथवा [३१] चन्द्रमा [३२] के (द्वै) [३३] उदय थल हैं याने प्रकाश होने के पर्व्वत हैं (अथवा) [३४] ललन (पिया कवि) का [३५] कथन है कि [३६] वही [३७] निज उपमा के स्वामी (की मूर्त्ति हैं) ॥ इति ॥

नायकानां शृङ्गारवर्णन ॥

अथ रङ्गानुमान संख्या ॥ ३२ ॥

घनाक्षरी कवर्ग कवित्त ॥ १० ॥

कुन्दनी कपूरिआ कदम्बिआ कपासी कल क्युलई करीली काकरेजी कंजई कराल। कत्थकी कमखीं कारि कीरी कुल क्यों-ड़ईहु कल्लगहूई कनीजी कस्तुरी काही कमाल ॥ का[illegible]नी कु-सारी कांचकी कचूमरी कशीशि कत्थै कचनारी कपसी कनेरि कौड़ियाल। कोकी कारचोबी किर्मिची करेलि केशरीहु कोऊ के ललन कपड़े कुसुम्भि कज्जराल ॥ इति ॥

प्रसंग ॥१०॥ इस कवित्त में भी कोई गूढ़ार्थ न होने के कारण से टीका नहीं किया क्योंकि इसमें केवल रँगी हुई पोशाकौंके कवर्गी रंगोंके नाम वर्णन हैं ॥ इति ॥

सुरसवारिकखगनामानि वर्णन ॥

अथ खगानुमान संख्या ॥ ३२ ॥

कवर्ग कवित्त ॥ ११ ॥

कोकिला करारी कुर्री काकातूहु कीर काक कौड़िल कटाई कठफुर्वा किनयानुरी। कांकुल कुरंगी करियलिया करोरी कंध कञ्जरी ककेरि केरि कांकड़ा कुजानुरी ॥ कुमुही कुलंग कटनास कुञ्जली कपोत कलपुँछी कुम्हारी ककरील कर्करानुरी। कन्दुल कराकुल कर्वानक कल्हर्क कल ललन कहत कोई कृष्ण कोई कान्हुरी ॥ इति ॥

प्रसंग ॥११॥ इस कवित्त में केवल देवतों की सवारी के कवर्गी पक्षियों के अनेक नाम वर्णन हैं कोई गूढ़शब्द नहीं है इसीसे इसका अर्थ नहीं लिखा॥इति॥

अथ कपोत जाति वर्णन ॥

अथ जाति अनुमान संख्या ॥ ३१ ॥

कवर्ग कवित्त ॥ १२ ॥

काबिली कमाऊ केरि कालेहू कलांख कल क्योंड़ई कमखीं काही कल्सिरे किनारिये। कल्दुमे कपासी काकरेजी कञ्जई कराल कड़ी बाज कागदीहु कासनी कपूरिये ॥ क्योलई कशीशी कचकमरे कौड़ील कुल किर्मिची कुसुम्भी कलपोटिये कुम्हारिये। कप्सिआहु किस्मिसी कमरबन्द कुन्दनीहुँ करथई ललन किस्म कौ कपोत कुम्रिये ॥ इति ॥

प्रसंग॥ १२॥ इस कवित्तमें केवल ककाररूपी कबूतरोंकी जाति वर्णन हैं॥ अर्थकी कुछ आवश्यकता नहीं है सर्व्व साधारण भी समुझसके हैं इसीसे टीका नहीं कियागया॥

कुचि वर्णन॥

शङ्काभाव॥

कवर्ग कवित्त॥ १३॥

कुमकुम कँदलइ केरि कलई कनक कलश कि कामदेव कञ्ज कुचि कर्कसी। कैधौं कामरिपु कैधौं कन्दुक कलित कैधौं कान्ति के कँगूरनहिं केरि कान्ति कलसी॥ कुविधिक कृतिक कन्दर्प्प के नगारे कैधौं कैधौं कक्कमण्डल कुलाखि कर वटसी। ललन कनिष्ठिक कनिष्ठिक कि कुम्भ कम्बु कैधौं कामिनी की काय कौनकर कृत्तसी॥ इति॥

अथ दूती प्रतिनायक वचनम्॥

प्रसंग॥ १३॥ किसी सुन्दरी के कुचिकी शोभा देखकर नायक को शंका होने से नायका प्रति प्रश्न करै है कि॥

टी०॥ १३॥ कँदला कियेहुये कुमकुमा (हैं या) सोने के कलशोंपर कुंदन की कलई है अथवा मन्मथ (व) कमल (या) कठोर स्तन हैं॥ अथवा (दुइ) शिवमूर्त्ति व सुन्दर गेंदें या शोभाके शिखरोंकी सुन्दर सी छटा हैं॥ अथवा कामदेव के औंधे (व उलटाये धरेहुये) नगाड़े व ब्रह्माकी उलटी (व उलटीकज्वट

से औंधाई धरी हुई) तोंबी[२९] हैं अथवा[३०] छोटी[३१] छोटी प्यारी[३२] (सुन्दर) कलशी[३३] (अथवा चिकने चिकने) शंख[३४] या[३५] सुकुमारी[३६] के उरःस्थल पर[३७] किसके[३८] हाथ की कारीगरी[३९] है ॥ इति ॥

अथ सखि शृंगार वसनरंग वर्णन ॥

रंगानुमान संख्या ॥२१॥

खवर्ग कवित्त ॥१४॥

खासी खामी खस खासी खीमखापी खापराई खासी खासईक खीरी खारुआई खाकीसी। खीरई खजूरी खीलदार खपरील खुली खुशरंग खानेदार खूबै खड़ियारोसी ॥ खंती खामसूई खंजनी खफीफ खाजलई खैरिया खँधारी खारी ख्युरी खरबूजीसी। खुसहाल ललना खुशीन निधि खींच खींच खिलतैं खड़ीं खरीसी खालिक खयालीसी ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ १४ ॥ इस कवित्तमें निम्न लिखित खवर्गी रंगोंकी पोशाकैं पहिरकर श्रीकृष्णचन्द्र भगवानूके विवाह में भीष्मक नगर की सलोनी सखियां जिस प्रकार से सुहायमान होतीभई तिनके कपड़ोंके केवल रंगरूप वर्णन हैं ॥ कोई ऐसा शब्द नहीं है जोकि समझ में न आयसके इसीहेतु इसका टीका नहीं कियागयाहै॥इति॥

नायकानां शृंगार वर्णन ॥

रंगानुमान संख्या ॥ २३ ॥

खवर्ग कवित्त ॥ १५ ॥

खारुई खुलासा खकाई खजूरिया खोरति खासे खामसूई खुले खापरी खँभारिया। खीली खोपराई खाकी खिर्नी, खर्बुजी खरी लिखी मखापी खैरुआहु खाली खस खासिया ॥ खंजनी खसीस खीरी

खंती खीरिया खमीरि खाकसीऊ खाजलई खुमेई खमीरिया । खुशी हाल खिलैं खींच खींच कै खड़े ललन खारदार खाँड़े खनकावैं खल मारिया ॥ इति ॥

अथ संधिविवर्ण ॥ खरा+अग्रे+इति ॥ खरेति ॥ १ ॥

प्रसंग ॥ १५ ॥ इस कबित्त में श्रीकृष्णचन्द्र महाराजके बराती व योधान की अनेक खवर्गी रंगकी छबीली पोशाक वर्णनहै इसीकारण से सरलता जानकर इसका अर्थ नहीं किया ॥ इति ॥

नायकानां शृंगार वर्णन ॥

अथ रंगानुमान संख्या ॥ २४ ॥

गवर्ग कवित्त ॥ १६ ॥

गुंजई गुलाबी गुलखैरा गुलम्हेंदियादि गुले सपतालू गुल्दुपैरिया गिरंटई । ग्युँहाँ गिरुआरे गुलेचीनियाँ गुमीले गुलछब्बी गंदुमी गुलेहजारी गुलतुर्रई ॥ गुलेनार गुल्फिरंगि गंधकि गोलई गूढ़ गुलाबासि गोमे गाजरी गहीरगंगई । गन्नई गँभीर रंग गेंदई गसेसु गात ललन गुपाल गुण गावें गति गर्मई ॥इति॥

अथ संधिप्रकरण गुलम्हेंदिया+अग्रे+आदि = गुलम्हेंदियादि॥१॥

प्रसंग ॥ १६ ॥ इस कबित्त में सखियों के गकार रूपी रंगोंकी रंगाबिरंगी पोशाकों का वर्णन है कोई गूढ़ार्थ न होनेसे टीका नहीं किया ॥ इति ॥

नायका छबि वर्णन ॥

गवर्ग कवित्त जलहरण दंडक ॥ १७ ॥

गोरेगोरे[१] गातुरी[२] गुराई[४] गहरी[३] गँभीर गोलगोल[५] गालन[६]

गुलाब गुम गति गइ। गोरी गुलबदन गजब गजगामिनिसी गहे गरबीली गुनगूढ़ आमनी गुनइ॥ गोलमोल गोरोदर गुल गुल गादीगुल गुलूबंद गुंजिका गरे गहिर गुहरइ। ललना गिरंटपट गात गुलेजारिया से गहिगहे गण्डेदार गोट गुठ गजरइ॥ इति॥

अथ संधिप्रकरण॥ गोरा+अग्र+उदर = गोरोदर॥ १॥

सखिप्रति हरिवचनम्॥

प्रसंग॥ १७॥ एक सुकुमारी सखीको देख श्रीप्रभु एक दूतीसे उसकी प्रशंसा करते भये कि वह॥

टी०॥१७॥(कैसी सुन्दरसखीहै कि जिसके) उज्ज्वल उज्ज्वल शरीरपर अधिकसे अधिक सुन्दरता गुलाई लियेहुये कपोलोंकी ललिआईपर गुलाब के फूलकी रंगत व शोभा लज्जित होतीहै॥(फिर वो कैसीहै)सुन्दरी(कि जिसका)फूलोंसा कोमलतन (औ) अनूठी हस्तीसी चालढाल धारण कियेहुये (और) समस्त गुणोंके समूह से भरीहुई सोहावनी हुई॥ (और जिसका) सुडौल गौरवर्ण पेट (मानोगुलगुली) कोमल पुष्पोंकी गद्दी (अरु जिसके) गलेमें गुंज (व) गुलूबन्द नामक गहना अमोलिक मोतियोंका (सोहायमान)॥(फिर वो कैसीहै कि जिस) स्त्री के शरीरमें छबिकार चटकीले रंगके रेशमीवस्त्र (जिनमें) किनादार गोटा गजरा टँकेहुये (सोहायमान है)॥ इति॥

नायकानां छबि वर्णन॥

घवर्ग कवित्त जलहरण दंडक॥ १८॥

घोरघोर घांघरे घिरील घुँघरील घनि घुटना घुमारदार घि-

रित [7]घुमाउघन । घुनुकघुनुक [11]घुनुक [10]घूँघुरु घमोरैं [9]घंटिक्षुद्र घनन घनन
घननाना घननाना नन ॥ [12]घुँघुटा [14]घिरान घन [13]घोरि [15]घुमड़न घर [16]घुसि
घुँघुवारी [18]घातैं [17]घरनीअजगरन । [19]ललन [20]भिया [21]घमण्डघाती
[22]घबरानघटीं [23]घोटलु घुटे [25]घँमील [24]घँमसन [26]घेतलन ॥ इति ॥

टी० ॥ १८ ॥ (कैसी सखियाँ सुन्दर शृंगार सजे हैं कि) [1]बड़ेबड़े [2]लहँगा [3]घुँघचीके रंगसरीखे [4]पहिरेहुये (अरु) [5]बहुतसी [6]घेरदार [7]अत्यंत फैलाव के [8]पैजामे (वइजारैं पहिरेहुये) ॥ (और बहुतोंकी कमरमें) [9]करधनी (जिनके) [10]घुँघुरुवों (ववोर या वटानोंकी) [11]घुनघुनाहट निम्न लिखित शब्दों सी यथा घननघनन घननाना घननाना नन होरहीहै ॥ (और बहुतों के शशिमुखपर) [12]घूंघुट की [13]अतिशय [14]झाई (मानों) [15]श्यामताका घर (तिसमें) [16]लहिराती हुई टेढ़ीबेंड़ी (घूंघर-वारी) [17]नागिनीसी [18]अलकैं चोट करै हैं ॥ (और फेर कैसी स्त्रीहैं) [19]भोलीभाली [20]मनोहर [21]अभिमानरहित सावधानचित्त (कायम मिज़ाज़) [23]जिलाकरेभये [24]महा [25]चिमित्कारी [26]उपानह (पहिरेहुये सोहावती हुई) ॥ इति ॥

देव सवारीन के चवर्गी पक्षी नामानि वर्णन ॥

अथ खगानुमान संख्या ॥ १५ ॥

चवर्ग सवैया ॥ १६ ॥

चकवा चकई चिरुटा चिरई चढ़ चाल चकोरन चाँगलिया ।
चिमगादर चिकुट चर्ष्य चढ़े चअना चुउँ चूं चपला चिरिया ॥
चँदरा चिनियाँ चिनकौ चिकुड़ी चखैं चट चबुक चिर्मिखिया ।
[1]चउवाह [2]चितौन [4]चुभी [3]ललनै [6]चहुँदेव [7]चखैं [8]चक [9]चातुरिया ॥इति॥

प्रसंग ॥ १९ ॥ श्रीमाधो मुकुंद मधुसूदन बनरे के विवाह की शोभा देखनेके तईं देवता अपने २ बाहनोंपर जो इस सवैया के तीन चरणों में देवतों की सवारी के अनेक चवर्गी पक्षियों के नाम मुद्रित हैं तिनपर सवार होकर नृप भीष्मक नगर को आवते भये इसी से इस सवैयाके त्रिपादका अर्थ नहीं किया अग्रे चतुर्थ पदका भाव लिखते हैं ॥

टी० ॥ १९ ॥ (देवगण निम्न लिखित पक्षियोंपै बैठेहुये) कृष्णचन्द्र[१]भगवान् की(करुणानिधि) चितवन[२] प्यारी[३] रीतिसे चुभीहुई[४]का चतुर[५] (सयानी) देवसैन्या[६] रसग्रहण[७] कर चाकित[८] होतीभई (छकित होतीभई) ॥ इति ॥

नायकानां शृंगार छटा वर्णन ॥

अथ रंगानुमान संख्या ॥१३॥

चवर्गकवित्त ॥२०॥

चुन्नई[१] चकोतरई[२] चम्पई[४] चमंकवत[३] चूनई[५] चुनर[६] चारु[७] चंदनी[९] चुभीलियाँ[८] । चीकने[१०] चनाकी[११] चीर[१६] चिंचिनीक[१२] चोरैं[१३] चित चन्द्र[१५] चाँदनी[१४] चमेलि[१८] चादरैं[१७] चुहीलियाँ ॥ चाँवली[१९] चिरायतई[२०] चूरिया[२२] चमाकेदार[२१] चारखनू[२३] चाकल[२४] चौतनियाँ[२६] चहीलियाँ[२५] । चम्बुली[२७] चिनावी[२८] चुस्त[३०] चोली[३१] चटकीलि[२९] चुभीं[३२] ललना[३५] चतुर[३४] चोरैं[३६] चित्त चखीलियाँ[३३] ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ २० ॥ (श्रीकृष्णचन्द्र भगवान्‌की ससुराली सलोनी सुकुमार सखियों की शोभा वर्णन करते हैं कोई कोई तो) ॥

टी० ॥ २० ॥ चुन्नी सरीखे रंगकी (व) चकोतरा के रंगसी (व) आबदार चंपई रंगकी (व) चूनासे रंगकी (व) चन्दनके रंगसी सुन्दर मनचुभतीहुई चूनरैं (धारण कियेहुये और कोई कोई)॥ साफ चनाके रंग सरीखे (व) इमली के रंगसे मनहर लेनेवाले (व) चमेली के रंगसे चन्द्रचांदनी सरीखे शोभायमान रूपसे (और कोई) रंग चुचुआतीहुई चादरैं (पहिरेहुये) ॥ (और कोई कोई) चावलकेरंगसे (व) चिरायतीके रंग सरीखे छटादार चूड़िया नामक वस्त्र (ग्रहण किये और कोई) चारखाना की घेरदार सोहावने सलुआ अथवा झूलानामक फनोई (सजेहुये और कोई कोई के मानमें) चंबुल देश (व) चैनादेश की रंगाविरंगी तंग अँगियां कसीहुई चंचल सयानी सखियां चित्तोंको चोरावती भई॥ इति॥

कुलटा नायक ॥

छवर्ग सवैया ॥ २१ ॥

छहरी छिति पै ललनै पनकी छवि छाजतियाँ छहरांय छला
छइ । छनकैरि छुये छहँछोर छड़ीलिहि छलछटीलि छतीसि
छकागइ ॥ छमकैंरि छमाक्यहिदार छड़ाछड़ छागलियाँ हुँ छ-
जीलि छलापइ । छपकाहु छलैं छनकीब छला छन छैल छ-
भंकिछमंकि छटा नइ ॥ इति ॥

सखिप्रति हरिवचनम् ॥

प्रसंग ॥ २१ ॥ एक नवयौवन वाली सखी कि जिस की चाहनामें महाराज का मन रमित होरहाथा उसके

रूपकी प्रशंसा किसी एक दूती से करते हुये कैसी वो सलोनी नारि है कि जिसके शरीरपर ॥

टी० ॥ २१ ॥ लड़कपन की सोहावतीहुई प्रभा (और) छलों से भरीहुई सोहायमान पृथ्वीमंडल में विख्यात। (फिर वो चौकन्नी व होशियार कैसीहै कि जिसके) छांहके छोरको छूतेही भागजातीहै (याने अपनी छांह किसी को नहीं दबावने देतीहै) लाखों में एकछटी होशियार दुबरी पतरी शरीर की शोभासे मनको छकितकर जातीभई ॥ (और जिसके पैरोंमें) आवाजदार छड़ा नामक आभूषण (व) सुहावनी छागलैं नामक आभरण मनको छलनेवाली सोहायमान ॥ (और हाथों में आभूषण) छाप छल्ल आदि (व अँगुलियों में) बाजने छल्ले मन हरलेते हैं (इसभांति) छबीली की शोभा नई भांतिकर प्रकाश होरही है ॥ इति ॥

नायकानां छवि वर्णन ॥

अथ रंगानुमान संख्या ॥ १० ॥

॥ जवर्ग कवित्त ॥ २२ ॥

जोगिया जचील जाफरानि जामुनी जमंक जालई जँभीरिया जँगालि जामदानियाँ। जुग्नुई जुहान जरबख्तिया जुलूसजोते जर्कसी जुलूसी जाली जौजुई जुगानियाँ ॥ जूफई जमाके जोर जोंकई जमीनी जोट जागी जोमती जहूर ललना जवानियाँ। जोति की जुन्हाई जानों जामिनीश जग्मगात जोबन जमीली जूथ जुवती जुरानियाँ ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ २२ ॥ श्रीरामचन्द्र महाराज के बिवाह में जो जनकपुर की सुकुमारियां जमाहुई रहीं तिनकी शृंगार शोभा वर्णन कैसेकैसे बसन आभरणोंसे सुहावती भई कोई कोई तो ॥

टी० ॥ २२ ॥ जचेहुये जोगियारंग (कोई) जाफ़रानी (व) जामुन के रंग सरीखे बैंजनी बसन पहिरेहुये (कोई) जालीके जँभीरी रंग सरीखे (कोई) नीले जंगाली जामदानी बसनके ॥ (कोईकेजुगुनू) पटबिजना सरीखे चमकदार दिखाई परैं (व) जरी जरबफ्त कामके शोभाभरे हुये (कोई) जालीपरके बनेचुने (कोई) जौजई रंगके (कोई अमोल) पुरानीचालके ॥ (कोई) जूफई रंगके पट पहिरेहुये (कोई) गाढ़े जोंकई रंगके (कोईके) मटीले रंगके जोड़े मदसे भरीहुई शोभा(नाज़ो अदा)तरुण स्त्रियां ॥ (जिनकी) छबिकी फबन मानों चन्द्रमा के समान सोहायमान रूप भरी (यहिभांति) वृन्द अबलानके जमाहोतेभये ॥ इति ॥

शठ नायक ॥

जबर्ग कवित्त ॥ २३ ॥

जुलमी जनावै जोर जागती कलाहि जासु ज्वानियाँ जमीलो जोम ललना जशोदाको । जासन जुहारबोहु जानिये जुलूम जीय जोरे जो जमात जोहै जूवतीनु जुवा को ॥ जौबनजुलूसी जोय जाइये जमून जनि जोहि जौन जायगो जो जादवेश जराको । जौबन जवालक जमंकैगो जमैसो जब जोरलेगो जुगतहि जुदवैगो जुदाको ॥ इति ॥

सखि प्रति सखि वचनम् ॥

प्रसङ्ग॥ २३ ॥ एकसखी अपनी परमसहेली से नन्दललनकी बुराई करती भई कि ॥

टी० ॥ २३ ॥ यशोदाजी का कुँवर ज्वानीके मदसे भराहुआ जिसकी (आज कल) प्रारब्धकला जोरहै अतीकरनेवाला जुलुम जोते फिरैहै ॥ उससे दंडवत् प्रणाम करना भी (मानो) मनको विपत्ति बिसावनाहै जोकि ग्वालसमाज संग लिये तरुण स्त्रियों को ताकता फिरैहै ॥ (हे) सुरूपवती नारि (तू) यमुनाको न जैये जोवो मोहन (तुझे) जराभी देख लेयगो॥ (तो) दूसरोंकारूप बिगारनेवाला यमराज के समान घेर लेयगो (और) यदि अपनाप्रयोजन काढ़लेयगो (फिर पीछेसे) प्रीति छोड़देयगो (याने जोड़ा बिछुराइ देयगो)॥ इति ॥

निर्गुणब्रह्म भगवत्प्रधानता वर्णन ॥

जवर्गकबित्त २४॥

जुलुम जवालकौ जवालीजूथ जंगजित जतन जतनमय जुक्ती जंत्र जरमाँ । जग्मग जितेन्द्रिजशीजोहेना जुहात जग ललन जुलूस जोति जोतिराज नरमाँ॥ जापनेश जोगियानु जीवनेशु जादौपति जापत जहान जन जननि जठरमाँ । जीवटजवर जरदार जोरावर नर जांचो जौनजौन जिये जानौ जनगरमाँ ॥इति॥

टी० ॥२४॥ (वो प्रभु सर्व्व शक्तिमानहै जो) अभिमान नाशक समर में दुष्ट समूहका जीतनेवाला (और) चतुराई (व) मंत्ररूपी धनमें हरएक बिधिसे व्याप्त॥ तेजस्वी विषय रहित कीर्तिवान (कि जिस सरीखे) वैभवका छोटा व थोड़ा चि-

मित्कार भी (कोई) देवता व जगत के मनुष्य में ढूंढ़ने से नहीं दिखलाई देता है ॥ (फेर प्रभु कैसा है कि) जपौंका स्वामी योगधारियों का जीवनधन यदुवंशियों का रक्षक (जिसका कि) संसारी मनुष्य माता के गर्भनिवास में (अत्यन्त खेदपाय) स्मरण करते हैं॥ दृढ़ हिम्मतवाला ऐश्वर्य्यवान पराक्रमी (ऐसा जो) परमपुरुष (उसको) जाननेवालोंमें जिसजिसने स्मरणकियाहै (उन्हीं पुरुषों को) जीवित जानना चाहिये ॥ इति ॥

मध्यानायका ॥

झवर्गकबित्त २५ ॥

झांझरी झरोखे झुकि झूमझूम झांकिझांकि झमक झकानी
री झपट झिझकीलीसी । झीनिही झकोरनी सुझीनोही झगा
झमंके झुलनी झमाकेदार झिलमिली झकीलीसी॥झांझझनकार
झारि झनक झकोरी झम झोरती झुमाय झोंक झोरनी झपीली
सी । झुकतीझुकाती झट झांकिही झकाय झक झपकै न झांकी
झरिललनाझरीलीसी ॥ इति ॥

दूतीप्रति नायकवचन ॥

टी० ॥ २५ ॥ (एकसखी) झँझरी के छिद्रों से झुककर मस्त है है देखिदेखि जल्दी से सकुचाती हुई छविकीरमक देखावती भई । हलकीसी ओढ़नी (व) सुन्दर सोफियाना सलूका (और) टिमाकदार सुन्दर बनीचुनी अँगिया पहिरे ॥ (और पगोंमें) शब्द करती हुई झांझोंके शब्दकी झकोरन (हृदयको, शीघ्र झ-

झकझोरती (व) मोहित करती (और) फहरान चूनरी से लसित। शीघ्रही झुँक झुँक एकबार सुन्दर शोभा दिखाय (वो) पुत्रवती फिर न देखाती भई॥ इति॥

धीरानायका॥

टवर्गकवित्त २६॥

टेढ़नुटिढ़ाई हूरी टूटती टिढ़ाईसन टूटीजो टिमांकु टांकसौं टकै न टोभिये। टांकुनी टटोल टेंकटेंक टेव टोली टंचु टोना साहिया टकोर टूमै टिकु टोमिये॥ टांठैगीटांठेही टीपुटीपु टीकती न टपु टावरी न टांचु वीरिटोंकन टटोलिये। टकुटकु टोटा टारूटोलाहू टुकोनों टीकटोहुटुक नंदललनहिं टंटा टारिये॥ इति॥

सखिप्रतिसखिवचनम्॥

प्रसङ्ग॥ २६॥ एकसखी अपनी मानवती सहेली से जिसकी पतिसे लड़ाई होगई थी उसको शिक्षा देती भई कि हे सखि देख कहीं॥

टी०॥ २६॥ खोंटोंकी खोंटाई कहीं क्रोध करने से जाती है टूटीहुई जोके (प्रीतिहै सो) मानरूपी टांके से नहीं सीं सकैहै (नमानैतौ) सींदेखु। (औरजोतू) टोनासाही कहिये जो बेदाग निश्छलकी ठसक रक्खा चाहती हो (तो) इससमय चित्त स्थिरकरु (फेरि) धीरे धीरे समूह शुभ प्रकृतियोंको ग्रहण कर (जिससे कि मनकी फटीहुई प्रीति टँकजायसो) सूजी ढूंढ़नी चाहिये॥ (क्योंकि अपनी प्रीति अपने आपही) मज़बूत करने से मज़बूत होयगी लिखरखु लिखरखु मैं तुझसे कहती हूं भूल मत (हे) प्यारी लड़कपनको न ग्रहणकरु (मेरी) शिक्षापर ध्यान

धरु देखु देखु प्रीतिरूपी हानी को दूरकरु (अरुफिरनू अपने) मोहल्लेको भी अं-गुरी नचानेवाला समझ तनक ईश्वरका स्मरण करु इस लड़ाई पर धूरडारु (दूरकर) इति ॥

अधीरानायका ॥

ठवर्गकवित्त २७॥

ठालेही ठूलेहीमांझ ठूंठीही ठिकावै ठप ठगईठगौनी ठानो ठीकरा ठठाऊंगी। ठगनी ठगोरी ठाहे ठींकती ठठैगी ठंठ ठोंकठोंक ठोली ठीक ठोंकरी ठिकाऊंगी॥ ठाकुरी ठिकावै ठुकरावै ठावै ठाली ठठ ठाँठरीठठैन ठड़ीठौरै ठुनकाऊंगी। ठानिये ठठोली ठहरायजो ललन ठीक ठकुरानी ठाकुरसों ठेंग ना ठगाऊंगी॥ इति॥

प्रसङ्ग ॥ २७॥ एकदूती किसी सखीका फजीता करनेको उसके भवन में आय कुछ कहती भई उसका कथन सुन क्रोधित ह्वै वो बोलती भई कि अरी प्रपंचिनि तू मुझै॥

दूती प्रतिसखिवचनम् ॥

टी० ॥२७॥ बिना बातही में वृथा दोष लगावै है फरेबों से छलनेवाली (जो मुझसे) प्रपंच फैलावैगी (तो) ईंट (पथरा) झुरायमारूंगी। (अरी) बदचलनी फरेबिनि नारि कुचाल फैलावती है झींकती फिरैगी मारे (लातोंकी) ठोकरों से सीधी करदेउँगी॥ ठकुराइत दिखावैहै पैरोंसे पृथ्वी खोदे डारैहै झूंठमूठका जाल फैलावैहै ये झांखर सरीखा शरीर लिये खड़ी है सो इसीजगह ता[illegible]डा-

रौंगी (मसककै घरदेवँगी) । (उससे) हँसीकर जो कोई बिल्कुल नादानहो(मैंतो) श्यामा श्यामकी शपथ खाती हूं (मेरातो) सींगभी (तुझसे) नहीं ठगावनेवालाहै (जोतू कहतीहो कि यह कुछ मुझे देदिवायकै दबजाय सो ऐसा वर्त्ताव मुझसे कभी न होयगा) इति ॥

दूतीनिन्दा ॥

डवर्गकवित्त २८ ॥

डहकै डकैती डींग डोलै डौलडाल डटे डोंगपनो डारुरी डिगाये
हू डिगैयेना । डोमनी डिबोनी डील डांकिनी डरोनीडर डोरिहि
डराय डुतजायगी डुबैयेना ॥ डिंभैगीवो डंभन डटीली डूंगरिन्न डंभ
डुकीडुकीना डगरीडगरी डसैयेना । डिगैतौ डाकोरजीपै ललना
डिगाउरीजो डोंगिहू डुबायनाहिं डिगरी डुँड़ैयेना ॥ इति ॥

सखिप्रतिसखिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ २८ ॥ एकदूती किसी सुकुमार सलोनी यौवनाङ्गना को देखि उससे स्नेहकर अपना प्रयोजन निकालने के वास्ते रोज़ उसके घर जानेलगी पश्चात् किंचित् काल के कहीं दूसरी दूतिका ने भी उसके रूप की सुन्दरताई देखपाई और उससे मिलनेकी युक्ती फैलावती भई भेदलगावने पर उसे मालूम हुआ कि इस सुरूपवती से तो किसी दूसरी दूती से मित्रताई होरही है अतएव उसके निकलावने के वास्ते उपाय कर सुन्दरी समीप जाय ये कहती भई कि यह प्रपंचिनि जो

कि तेरेपास आया करती है हे प्यारी तू इसे नहीं जानती है यह जो तुझसे ॥

टी० ॥ २८ ॥ बड़ी बड़ी बातैं माराकरती है (सो अपनी) घात लगाये फिरै है अरीप्यारी लड़कपन मतकरबैठिये इसके चलायेपर चलनजइये । शरीर की ख्वारीकरायदेनेवाली (ये) म्लेच्छिनी कुरूपिनी (जिसके देखने से) शंका भी शंकितहोय है दूसरेसे प्रीति पुरवाय आपअलगहोजायगी (इससे अपने कुल की मर्य्यादा में) कलंकमतलगाइये ॥ वह पर्वतकेसमान फरेबों से भरीहुई अनेक झूंठी बातों को बनावेगी गली गली (घरघर) में बखानीभई है उसकेकब्जे में मत अइये । (और जो तेरा मन किसी पर चलायमान होई रहा होय तौ सुनु जो) मन चलायमान करै तौ प्यारी श्रीकृष्ण महाराजपै मोहितहो याने श्रीकृष्ण जी से मिल (तौ तेरी) नैया पार होजाय तथा आवागमन से छूटजाय मनोकामना को प्राप्त होजाय याने (डिगरी फ़तेयाब होजाय) ॥ इति ॥

प्रौढ़ा धीरानायका ॥

ढवर्गकबित्त २६ ॥

ढीलकै ढँगीले ढंग ढोटाको ढपोरशंख ढाँकढोंक ढाई ढीठ ढिठई ढपारकै । ढांढतो ढपोरै ढुलढावतो ढबीलो ढब ढीलेही ढबैगो ढबि ढाबहि ढुँढारकै ॥ ढोरिये ढिंढोरो नाहिं ढोंगपने ढारढुर ढाढस ढहाई ढोंग ढोंगिया ढिढारकै । ढांकेहि ढँकैहै ढोल ढीलरो ढँगी ललनि ढांढीहूंढँढी न ढंग ढुरको ढवारकै ॥ इति ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ २९ ॥ एकसखी अपनी नगर निवासिनि मिलापिनिसे कृष्ण महाराज का उरहना दै कहती भई कि ॥

टी० ॥ २९ ॥ नन्दके ललन नासमुझ नादानने सुन्दर चालचलनों को छोंड़कर कुचलनों को धारणकर नटखटने अपनीबँधीहुई मर्यादाको बिगाड़ रक्खा है। अपन मतलबी दाँव घात लगाये (युवतिन के पिछाड़ी लगा) अनुचित करता चारोंतरफफिरै है (सो हेसखी अबमुझे कोई) मेलका मकान ढूंढ़कर (गोकुल का बास) छोड़तेही बनेगा ॥ (इतनी बात अपनी सहेलीसे कहतेतो कहगई परन्तु फेर कृष्णके भयसे शंकित है उससे यह उपदेशिक प्रार्थना करती भई कि कहीं) मूर्खताकी ओर ढुलकर (इसबातकी कहीं) मुनादी न पीटदीजिये (याने किसी से कहना मती क्योंकि आजकल में) छल रचनेवारे नटखटनागरनटके मारे सावधानीकरके रहितहोरहीहूं याने चित्तसावधान नहीं है (क्योंकि अपना) फटा ढोल मढ़ानेही से ठीक बोलताहै याने अपनी जाती हुई लाजपर अपने आपही परदा डारना उचित होताहै प्यारी मैं बहुतही ढूंढ़हारी (परन्तु कोई) सीजा मकान मिलने का नहीं लगा है (इसीसे चुपचाप बैठी हूं) इति ॥

नायकानां श्रृंगार वर्णन अथरंगानुमान संख्या २१ ॥

तबर्गकबित्त ३० ॥

तीखेतीखे ताखी तीव्रतूसिया तमाली तिली तामबूलिया तरीफि तोंबई तलीसिया । तोरी तामखूई तूनी तीतुरी तयूसी तूली तोफा तिल्समाती तासुबादलाई तूतिया ॥ तांत्रीक तेजपाति तो

[२३] तोसकी [२४] ललन [२५] तेज [२६] तीतुली [२७] तिलोरिपखी [२८] तामड़ई [२९] तेलिया। [३०] ताजे ताजे [३१] तेवरा [३२] तमंकते [३४] तरंग [३३] तूल [३५] तेजसी [३६] तपेस्वी [३९] तन [४०] तोपे [३७] तरुणि [३८] तिया ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३० ॥ श्री सौभाग्यदशरथ नृपनन्दन क्लेशकन्दन रघुनन्दन के विवाह समाजमें इसप्रकार सोरहु शृंगार बत्तीसो आभूषण रत्नकार सखि सुकुमार छबिदार सँभार सुधार पुरनारि आवती भईं कोईकोई तो ॥

टीका ३०॥ [१] तेज [१] तेज तावी रंगके (व) गहिरे [३] तूसी [४] रंगके (व) घोर [५] स्याह रंगके (व) [६] तिल सरीखे रंगके (व) [७] पानके रंग सरीखे (व) [८] उत्तम [९] तोंबी के रंग सरीखे (व) [१०] तलीसके रंग सरीखे ॥ (व) [११] तोरई के रंग सरीखे (व) [१२] तमाकू के रंग के (व) [१३] तुन रंगसे (व) [१४] तीतुर रंग सरीखे (व) मोर या [१५] तयूसी रंगके (व) [१६] तूलीवसन (व) [१७] सुन्दर [१८] बनेचुने [१९] जरीतास बादलाई कामदार [२०] तूतिया रंगके ॥ (व) तांबे रंग [२१] के समान (व) [२२] तेजपात के रंग सदृश (व) [२३] तोसक सरीखी [२४] छपावट के प्यारे (व) [२५] बढ़िया [२६] तीतुली के रंग सरीखे (व) [२७] तिजोरी पंख सरीखे (व) [२८] तामड़ई रंग के (व) [२९] तेन के रंग से ॥ नई [३०] तरताजी बनीहुई [३१] पोशाकैं [३२] शोभा की [३३] अत्यन्त [३४] फबन से भरी [३५] सुरूपवती [३६] मतानमती [३७] युवाअवस्था में प्राप्त [३८] अवना [३९] अंगन [४०] पै धारण किये हुये सोहायमान होती भई ॥ इति ॥

तुरंगरंग वर्णन ॥

अथ रंग व जाति अनुमान संख्या ॥ २३ ॥

तवर्गकवित्त ॥ ३१ ॥

तांबई तयूसी तूसी तावी तेलिया तराल तोताई तमाली तूनी

तीतुरी तिलंगहैं। तोफई ललन तीव्र तोंबई तिलक्खा ताजी तत्त-रा तभीस तोपे तुन्दत तरंगहैं॥ तीतुली तँजेबी तूलि तामड़ा त-रैल तुर्की तेंदुई तुपकी तरवारी तनेतंगहैं। तकत[१] तमकत[२] तड़कत[३] तुरकत[४] तुनकत[५] तनकत[६] तरकत[७] तुरंगहैं[८]॥ इति॥

प्रसङ्ग॥ ३१॥ श्रीकृष्ण महाराज के विवाहमें जौन आयेहुए थे तिन बरातियों की सवारी के घोड़े जो कि इस कवित्त के तीन चरणों में रंग वर्णन हैं इन इन रंगों के घोड़े सुन्दर जीन तंगादि साजों से सजेहुए सुहायमान होते भये इसी कारणसे तीन पादों का अर्थ नहीं किया (अग्रे चतुर्थ पादका अर्थ लिखते हैं कैसे घोड़े रहे) (कोई तो) चारोतरफ़[१] देखतेहुये (कोई) तेजचालसे[२] दौड़ते हुए (कोई) उछालैं[३] भरते हुए (को-ई) बाग तोर[४] (कोई) हींसनेवाले[५] (कोई) क्रोधी[६] व रिसहे (कोई) जोमभरे[७] लड़नेवाले (लड़ाका) घोड़े[८] इस इस भाँति (सुहावते भये)॥ इति॥

विप्रलब्धानायिका॥

थवर्गकवित्त॥ ३२॥

थोरी[१] थिरु[२] थोरी[३] थिरु[४] थाहत[७] हू[५] थाह[६] थम[८] थानहिं[९] थपायकै[१०] थि-

रौंगीहौं थिरौंगीहौं । थलक थुराउनाहिं थूनिहीं थपाकु थुआ थोक थापरा थमात थायही थपौंगीहौं ॥ थिरकुल थारो थिर थोरहू नतू थपक थाथोही थपाको थाहू थँहूं नाथुरौंगीहौं । थूथूथू थुका-येहू थवैगी तौ थुरील नाहिं थानापती थांम थप ललनै थँलौं-गीहौं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३२ ॥ (एकसखी अपने सनेही श्रीकृष्ण भगवान् से मिलनेको अत्यंत व्याकुल रही इतनेमें एक दूती जो कि उसे जानती थी आवती भई उस की बिह्वलताको देख उपदेश दे हिम्मत बँधाय ये कहती भई कि प्यारी तू इतनी क्यों घबराई जाती है)॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ ३२ ॥ तनक सावधान हो धीरज बांध मैं खोज लगावती हूं ठहरजा तेरे घरपै बोलायबैठार तब मानौंगी तब मानौंगी ॥ (दर्शीहुईबातकी कुदर न कर याने किसीको) प्रगट न करु (जैसे) मिट्टी के ढेर के सहारे की लगाईहुई टेकनी व थुनीपर बड़ा छप्पर इस्थित होजाताहै (उपाय ऐसीही वस्तु है) मैं भेद लगाय ही कर तब निचली ह्वै बैठोंगी ॥ (और) तेरो (जो) चंचल (श्रीकृष्ण-मित्र) बिराजमान हैं तू (उन्हें) देखु थोरा न समझिये (यानी उनका हर एक कामिनीपर मन चलायमान रहता है इसीसे मैं जौन) बड़ाचतुर भेदी विदित है (उसे) ढूंढ़ती हूं कोई यतनकरने से बैठ न रहूंगी ॥ राम राम राम (छी छी छी) (हे) नादान फजीहतकरायेहू तो नहीं बनैगी (इससे अपना) मन रोक

चुपकी[४२] है बैठ प्यारी[४३] मैं उपाय करनी[४४] हूं (सिद्धिही होयगा गड़हा खोदती हूं पानी मरगया जो मरगया भरगया तो भरगया धीर्य्यरख) इति ॥

तुरङ्ग जाती व शोभावर्णन ॥

दवर्गकवित्त ॥ ३३ ॥

दुलदुल[१] दमीले से दमीले[२] दामवार[४] दीर्घ[३] दादुरी[५] दिलावर[६] दवंग[७] द्युति[८] दामेहैं[९]। दीनता[१०] दुराते[११] दरशाते[१४] दम[१३] खम्दराज[१२] दन्तिया[१५] दुपाद[१६] दर्प[१७] दामिनी[१८] दबामें[१९] हैं ॥ दुलरत[२०] दुलराते दौर[२१] दुलकी[२२] दुनाते[२३] द्वन्द[२५] द्वन्दते[२४] दताते[२६] दीप्ति[२८] दिब्यतामें[२७] हैं। दुम्मन[२९] दबावें[३०] दुबरई[३१] दूदहावें[३२] दृग[३४] दम[३३] दमकावें[३५] ललनता[३६] दिखरामें[३७] हैं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३३ ॥ (श्री अवध नरेश दशरथ महाराज धिराजके सुत मर्य्यादा पुरुषोत्तम अवतारीश्रीरामचन्द्र महाराज के विवाह में जौन जौन प्रकार के तुरंग आवते भये तिनका रंग रूप छल बल वर्णन कि कोई तो) ॥

टीका ॥ ३३ ॥ दुलदुल नामक[१] घोड़े बड़े बड़े दमदार[२] बड़े मोलके[३] मडीले[४] रँग[५] के हिम्मतदार[६] अत्यंत शोभाको प्राप्त हैं ॥ (कोई) सुस्ती को[१०] दूर करतेहुये[११] (चंचल) महा[१२] पराक्रमों[१३] को दिखाते[१४] हुये (कोई) युवाअवस्था को प्राप्त[१५] दो पैरों से खड़े[१६] होकर[१७] चपला[१८] की चंचलताको लज्जित[१९] करै हैं ॥ अपने स्वामियों का लाड़[२०] जनावतेहुये[२१] छिनमें दुलकी[२२] नामक चाल (व छिनमें) सर्प्पट[२३] चालको चल अनेक[२४] ऊधमों से ऊधम[२५] मचावते[२६] हुये सुन्दरता[२७] में सुहायमान[२८] होरहे[२९] हैं ॥ (कोई) पूंछों[३०] को

दबकाये हुये शरीरसे रुष्टपुष्ट छिनमें नेत्रों को चमकावते फिरावतेहुये लड़कपन को प्रकाश करै हैं ॥ इति ॥

अधीरानायका ॥

धृष्टनायकसंवाद ॥

धवर्गकवित्त ॥ ३४ ॥

धांधली धरौगे धाम धाओ धमकाओनाहिं धांकरीधुत्रैगी धोख
धांधके धँधैयोना । धायधाय धरधर धमकत धमाधमै धीमेहूधुरील
नतु धानपान ध्यैयोना ॥ धूंहधां धमैगी धूमधामधरधूमसोंह धूर-
ता धकौगे धूरि धूंधरी धुरैयोना । ध्यानीहीं धतीहै धूरधानीहौ
ध्वनैको धूर्त ध्यायेही ललन धर्म्म धूमीही धिकैयोना ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ३४ ॥ (एकसमय यमुना किनारे एक स्थलपर दशपांच सखियों का वृन्द खड़ाहुआ देखकर रसिक शिरोमणि कृष्णमहाराज उनके समीप जातेभये सो गोपाल लालजीको आवते देख और उनको चंचल रसिक जानकर सखियाँ इस प्रकार बोलती भईं कि महाराज) ॥

टीका ॥ ३४ (क्या कुछ) तकरार करनेवाले हौ अपनेघरको चलेजाओ धमकीमतदिखलावना (नहीं तो तुम्हारा) नीचपन बहाबहाफिरैगा (कहीं) झिगड़े के भरोसे (हमारे समाज के भीतर) न घुसि आवना ॥ (ऐसी) जल्दी जल्दी करकरके जोरशोरसे उछलते कूदते हौ (कि) कुछ शरीर का होश ही

१६ १७
नहींहै (कुछ हमैं) धानपान सरीखा कोमल मतसमझना ।।(जो नहीं मानौगेतौ)
१८ १९ २० २१ २२
भली चंगी तरह से मारधार मच जायगी मूर्खता करौहौ (कहीं मार तोर
२३ २४ २५ २६ २७
की) घोर धूरसे (रेणुका से) धुरिआय मत जैयो ।। (तुम्हारी) मकृति जानी
२८ २९ ३० ३१
हुई है फजिहतखोरा हौ कौन मुड़खपराव तुम से करै (क्योंकि) कुचाली (व)
३२ ३३ ३४ ३५ ३६
नादान को पूजेही से भलाई है (अपनी) बनीबनाईबात मतीबिगार डारियो ।।

इति ।।

अविसारिका नायका ।।

नवर्ग कवित्त ।। ३५ ।।

१ २ ५ ६ ७ ३ ४ ८ ९
नागरी नवेली नेक नागिनि नागिनि निशि नगरि निवास्युँ
१० १२ १३ ११ १६ १४ १५ १७ १९ १८ २०
नैन न्यूनरी नवाई तैं। नौकर निकर नृप नुक्श निहरत नित नू-
२२ २१ २३ २५ २४ २७ २६ २९
तनी नवीनी का निरखि नियराई तैं ।। निलयनिरासिक निवास
२८ ३१ ३० ३३ ३४ ३५ ३६ ३२ ३९
नीपनेहो नेमनेकियां नगीनी नेकनजरी नुमाँई तैं। ललन न-
४० ४१ ३८ ३७ ४२ ४३ ४५ ४४ ४७
रायण सौं नीरजनैनी नर्मूद नेह निबहन निधि नोखी निरखाई
तैं ।। इति ।।

प्रसङ्ग ।।३५।। कोई एक सुकुमार सलोनी सखी श्री कृष्ण महाराजसे मिलने की एक पहर रात्रिपर्य्यंत तक की अवधि बांध अपने घरको सिधारती भई दैवयोग से वो कुछ ऐसे फँसाव में फँसजाती भई कि वो अपने नियत किये हुए समयपर न पहुँचसकी तब महाराज निराश ह्वै अपने मकानके किवाँर बंदकर सोयजातेभये

इधर जब अर्द्धरात्रि का समय नियराना तब उस अबलाको अवकाश मिलनेपर याद आई कि मैं तो कृष्ण भगवान् से मिलने का वचन दे आई थी अगर मैं न पहुँचूं तो गोपाललाल जी कहीं मुझसे खेद न मानने लगैं मन में कहने लगी कि खैर देरहोगई तो होजाने देउ लेकिन महाराज के पास चलना निश्चय चाहिये ऐसा समझकर अकेले ही चलदेती भई कृष्ण द्वारपहुँचकर दरवाजा बंद देख सांकरी खटखटावती भई कि हरि सांकरी का शब्द सुनकर किवाँर खोल उसी सुन्दरीको अनुचित समय आई हुई देख बड़ा आश्चर्य्य कर उससे पूछते भये कि ॥

सखिप्रतिहरिवचनम् ॥

टीका ॥ ३५ ॥ (हे) नवीनि सुन्दरि (तैंनेऐसी) विकराल रात्री को कुछ भी नहीं ख्यालकिया (क्या) ग्रामवासियों के नेत्रों मेंतैंने धूल झोंकदीनी (जो कि तू यहां तक चलीआई और किसीने तुझे नहीं देखपाया अथवा) ॥ अनेक राज पहरुये (ऐसीऐसी) पेचींदाबातों व ऐबौं को हमेश देखाही करते हैं (सो तेरी हे) नवयौवनि क्याकोई नईरास्ता देखीभई थी (जोमेरे) तू पासतक चलीआई ॥ (मैं तो विल्कुल ना उम्मेद होगया था लेकिन तुझने मुझ सरीखे) बे उम्मेदवाले या बे आशवालेके मकान में सुंदर विश्रामलेने का प्रण पूराकिया (सो यह तो) तैंने बहुतभलाई करी (और) अनुग्रह प्रगट करी है (अरी) अनमोल कमल सरीखे नेत्रोंवाली प्यारे परमेश्वर की शपथ (करकहताहूं कि तुझ सरीखी) प्रीतिके निबाह की अद्भुत सागरी (मुझे एक) तुहीं देखपड़ीहै ॥ इति॥

कलहांतरितानायका॥

पवर्ग कवित्त॥ ३६॥

प्रीति पुञ्जपुष्करी पुनीत प्रेम पूरी पय पुनि पी प्यारे पहीं पराइये पराई क्यों। पावसेश पिकी पाय पूजी ना प्रपूर्ण प्यास पुष्पेश पराग पै प्रफुल्लता न पाई क्यों॥ पूतरी प्रवीनता पुरातन प्रवीनपन प्रबल पाण्डित्त पुञ्जी पुती पण्डिताई क्यों। पाले पोढ़ परीरी प्रपञ्ची पैन पण्डित पै ललनु प्रतीतु प्रिय पूरिही पराई क्यों॥ इति॥

प्रसङ्ग॥ ३६॥ (चन्द्रावलि सखी जोकि श्रीकृष्ण भगवान् को परमप्रियाथी और तैसेही चन्द्रावलि को भी भगवान् परमप्रियथे कभी आँखों ओट न होतीथी सो एकरोज भगवान् से रुष्टहोकर अपनेघर चलीआवती भई तिसकी एक परममित्र सहेलीने उसको इधर उधर फिरते हुये देखकर उससे पूंछतीभई कि हे प्यारी तू ऐसी होकर कि)॥

सखिप्रति सखिवचनम्॥

टीका॥ ३६॥ प्रीति जो कि स्नेह है (व) प्रेम जो कि सांचीलगन तिस की सुन्दर व निर्मल पूर्ण क्षीरसागरी फिर (आज अपने) प्राणप्यारे पिया से फटी फटी काहे फिररही है॥ (देख पपीहा एक स्वाति बुंद के कारण प्रभुसे स्नेहयुत रटलगाय पावस ऋतुमें मनोरथको पाय संतुष्टता को प्राप्त होता है तेरा कैसा पिया

है कि) पावस ऋतुका स्वामी कि जिस पावसमें कोटिन स्वातिबिंदु उपजते हैं (हे) मृदुबैनि पपीहनी (तिसको) प्राप्तकर (तेरी) प्रीतिरूपी सम्पूर्णतृष्णा नहीं पूर्ण हुई (अथवा देखु भँवरा पुष्पका सुगंधि रसग्रहण करके संतुष्ट होता है और फिर तुझे तो कैसा पिया मिलाहै जोकि) कोटिन रसीले पुष्पोंका रचने वाला (तिसकी) सुगंधी से तेरेमनको आनन्द नहीं प्राप्त हुआ ॥ (जो मैं कहूं तू कुछ नादानहै सोतो तू) चतुराई की पुतली (व) छोटेपन से चतुराई चालांकी से भरी है (और अबतो) अत्यन्त गुणोंकरके संपन्नित है (फिर तेरी ऐसी) बुद्धिमानी कहाँ खोगई ॥ (इतनी वार्त्ता अपनी सहेली की सुनकर चन्द्रावलि उत्तर देती भई कि तू नहीं जानै है कि मैं) छलबल रचनेवालों में तो अत्यन्त निपुण के अच्छीतरह से बशमें फँसीहूं तौ प्यारी (इसबातपर तू) ख्यालकर (कि) ऐसेनादानसे (भलाईही कबहोगी) ॥ प्रीति कैसे निबहेगी ॥ इति ॥

सखिप्रतिसखिशिक्षा ॥

फवर्ग कवित्त ॥ ३७ ॥

फेरेफेरे फतुओं फरेबन फबाती फुर फूलिही फिरै फनफनातिया फजीतीसी । फूहरपनादि फट्टई फली फितूरि फैल फनों फटकारी फन्द फारी फहरीलीसी ॥ फूंकफांक फूंकनीहुँ फाल फुरमावनीहुँ फोकटी फसाद फँसि फिरती फबीलीसी । फेंकु फंद ललने फणीश पति फांसु फेरि फँसरी फिकिर फुँकजावहीं फजीतीसी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥३७॥ एक सखि जोकि कुक्कुलव्रत पारायणि

और विमुखि नारायणथी उसकी परम मित्र सहेली उसे उपदेश देतीभई कि अरी कुचालिनि॥ ईश्वरका स्मरण कियाकर कि जिससे परिणाम बनै और भलाई होय वृथाके वास्ते अपनी अनमोल मनुष्य योनिको बरबाद न कर देखु अबभी सोच समुझु॥

सखिप्रति सखिवचनम्॥

टी०॥ ३७॥ मैं सांचकहतिहूं (कि तू) भलेचङ्गे छल कपटों से भरीहुई दुर्दशाकरीहुई फजिहत के समान अभिमानभरी डोलती है॥ (और) कुकर्म्मादि (व) झूठवचनादि (व) कलहरूपी गुणों से भरीहुई (और) सुन्दर गुणों से रहित (व) फरेबोंकी प्रवाह धारा (होरही है)॥ (व) झाड़फूंक करनेवाली (फाल) गुप्तहाल खोलनेवाली (निरर्थक) राहचलतू झगड़े करनेवाली सौखीन सरीखी (बनी) फिररही है॥ सो प्यारी (अब इन) कुचालचलनों को परित्यागकर श्रीकृष्णचन्द्रभगवान् को रिझाउ तौफिर (जो तू) चिन्तारूपी जाल में फँसरही है (उनसे) छूटहीजाय॥ (अथवा तेरी चिन्तारूपी फांसी मशाल के तरह जल भस्म होजाय)॥ इति॥

अधीरानायका॥

बवर्ग कवित्त॥ ३८॥

बीर बिगरैल बनवारी वो बिहारी बड़ बाटबिच बादनुबिवादनु बढ़ावतो। बावरी बनाय बिदराय बिचकाय बक बधुटी बिलोकतीं बिलोकतै बनावतो॥ बांधो वा प्रजेश बैर बिकट बिहद बिधि

२३ २४ २५ २६ २७ ३० २९
बरसाने बसिहौं बिषाद ब्रज ब्यावतो। बरण बताऊंगी बिवस्था
२८ ३१ ३२ ३३ ३४ ३५
वृषभानसुतै बाँकुरो ललन ब्रज बसिबो बिहावतो॥ इति॥

सखिप्रति सखिवचनम्॥

प्रसङ्ग॥३८॥ एकसखी अपनी परमसहेलीसे श्रीकृष्णचन्द्र का उरहना दै अपनी व्यवस्था कहती भई कि॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७
टी०॥ ३८॥ (हे) प्यारी कृष्ण बड़ा कुचाली है रास्ताचलते झगड़े करत
८ ९ १० ११ १२
है॥ (कभी मुझे) बुराभलाकह ओंठोंसेचिढ़ाय बकझक पागलसी बनाय
१३ १४ १५
देता है (सो ये दशा) ब्रजकी स्त्रियां देखाकरती हैं (औ मुझे भी) देखतेही
१६ १७ १८ १९ २० २१
बनआवता है॥ उस गोपाललाल ने (मुझ से ऐसी) महाभारी अथाह शत्रुता
२२ २३ २४
कररक्खी है (सो अब मैं) राधिकानगरी में जायरहूंगी (काहेसे कि अब)
२५ २६ २७ २८ २९
ब्रजके निवास से खेद होता है॥ (और) राधिकाजी महारानी से समस्त दशा
३० ३१ ३२ ३३ ३४
कहसुनावोंगी कि कुचाली नन्दको कुवँर व्रजमण्डलका निवास (मुझसे) छो-
३५
ड़ावता है॥ इति॥

प्रोषितभर्तृकानायका॥

बवर्ग कवित्त॥ ३९॥

२ ३ १ ६ ५ ४ ७ ८ ९
बानक बिगारो बिध बिलमो बिदेश बर बाबुल बखरी बैस वृ-
१० ११ १२ १३ १४ १६ १५ १७
थहि बिहातुरी। बीररी बिरहिनी बियोगिनी बिहाल बहु बिरहा
१८ २० १९ २१ २४ २५ २६ २२ २३
बिहद बिथा बक्र बगरातुरी॥ बेपरा बिहंगम बनायो वो बिधातही
३० २७ २९ २८ ३२ ३१ ३३ ३५ ३६ ३७
ने बनै ना बनाये बिधि बात ना बिसातुरी। बैरी बिनतन बेधना

३८ ३४ ३९ ४२ ४१ ४० ४३
बिलंद री ललन बावरीवनी बिना बिहारी बिलखातुरी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ३९ ॥ (कोई एक पति वियोगिनि से एक सखी अपने पियाकी वियोगरूपी दुःखकी अवस्था व- र्णन करती भई कि) ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

१ २ ३ ४
टी० ॥ ३९ ॥ ब्रह्माने मेरेसुखकाबनाव विध्वंसकरदिया (मेरा) पिया
५ ६ ७ ८ ९ १०
(था सो) परदेश छायरहा मातापिताके घरमें मेरी उमर निष्प्रयोजन बीती
११ १२ १३ १४ १५ १६
जाती है ॥ (हे) प्रिय वियोगवति मैं भी दुःखसेसंपन्नित अत्यन्त कुदशा को
१७ १८ १९ २० २१ २२
प्राप्तहूं (और) पिया के बिछोह का अतिशय कठिन खेद बढ़ताजाय है ॥ उस
२३ २४ २५ २६ २७ २८ २९
ब्रह्मा ने (मुझे) बिन पंखों का पक्षी रचा है (इसी से) न कोईयुक्ती चला-
३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७
ये चलै न कुछ प्रयोजन बनै है ॥ (अरु) हेप्यारी शत्रु कामदेवकी व्यथा अत्यं-
३८ ३९ ४० ४१ ४२
त वृद्धी को प्राप्त होरही है (सो मैं) प्यारे कृष्ण बिहून सुधिबुधि बिसराये हुये
४३
बिलाप को कररही हूं ॥ इति ॥

शस्त्रनामानि ॥ अथ शस्त्रानुमान संख्या ॥ ११ ॥

बवर्ग कवित्त ॥ ४० ॥

बल्लम बुलंदी बांकु बांकुरी बिछूह बूह बानेहु बखाने बृंद बंदु- खहु बारे हैं। बख्तर बलाके बाण बीषत्न बुझाके बृद्धि बहल ब- लाके ब्रह्म बाण ब्यवहारे हैं ॥ बिजई बिनाशी वपु वर्छे बर्छियां बिपुल ललनु बलीसुबीर बेहद बिहारे हैं। बाद बकवादन बढ़ैयाहू बिहूनबात बलभद्र बैरी बहु बदन बिदारे हैं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ४० ॥ श्रीरुक्मिणी महाराणी के विवाह

समरमें श्रीकृष्णमहाराज व बलदेवजी महाराज के सन्मुख जौन प्रकार करके शिशुपाली सैन्याके शूरवीर नानाविधानके अस्त्रशस्त्र लेकर आय लड़ेरहे उन अस्त्रों के इस कवित्त में नाम वर्णन हैं इसी से सरलता जान इसकी भाषा नहीं करी ॥ इति ॥

देवयान खगवर्णन ॥ अथ खगानुमान संख्या ॥ २६ ॥

बवर्ग कवित्त ॥ ४१ ॥

बदक बरीला बाज बनई बटेर बक बिनता बिरहि बृन्द बृषभ बिकासहीं । बाजे बुलबुल बया बिहँग बुँदीला बौधि बावर व बेसरा बिलंगनी बिलासहीं ॥ बटई बिपुल बगरेल बनमुर्ग बैरी बैगमा बिलाई बाघ बिमलित बाजहीं । ललन बिनोदवत बरगैलि बैजनादि बाजे बाजे बीर बांके बाहन बिराजहीं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥४१॥ इस कवित्तमें केवल कृष्णमहाराजकी बरातमें जो देवगण आये रहे उनकी सवारियों के अनेक खगादि नाम वर्णन हैं इसी से टीका नहींकिया॥इति॥

देवयान पक्षी वर्णन ॥ अथ खगानुमान संख्या ॥ १६ ॥

बवर्ग सवैया ॥ ४२ ॥

बैठ बकासर बंथर बीर बिसांतिनु बर्कुलं बृन्द बनाये । बिन्दुकि बाज बजूल बढ़ी बिगरा बुरुही बरटानु बकाये ॥ बायस बास बिराजबहू बिजहावर बाघ बिमान बसाये । बीन बजावत वै ललनेश बिहारि ब्रजेश बिनोद बढ़ाये ॥ इति ॥

टी० ॥ ४२ ॥ इस सवैया छंद में केवल देवसवारियों के पक्षियोंके नाम वर्णन हैं इस कारण से इसका अर्थ नहीं किया ॥ इति ॥

देवसवारिक पशु वर्णन ॥ अथ पशु अनुमान संख्या ॥ १२ ॥

बवर्ग कवित्त ॥ ४३ ॥

बांकुरे बराह सिंह बाघन बलीन बृन्द बिज्जुन बहूत बैठ बीर ब-
करानबर। बेहरैं बराह बिपक्षापरान बिकराल बीछी बिषवारन बि-
लारन बथानबर ॥ बेहद बली बृकोदरान बांदरानि बहु बिपुल बि-
नोदी बनमानुष बखानबर। बृषन बिराजैं बाजे ललन बिशालबाजे
वर्ण बर्ण बाहन बिलासिया बिमानबर ॥ इति ॥

टी० ॥ ४३ ॥ इस कवित्त में भी केवल देवबाहनों के नाम वर्णन हैं इसी से इसका टीका नहीं किया ॥ इति ॥

श्री रुक्मिणी शोभावर्णन ॥

भवर्ग कवित्त ॥ ४४ ॥

भोरीभोरी भामिनीहुँ भामनी भरील भाह भीनेभीने भूपनान
भूषित भलीभली। भक्भकी भभूकैं भूर भावनी भवाती भाहें भावों
भभकातीं भांतिभांति भर्म भर्मली ॥ भागवंत भी ललन भोगवति
भेषभल भाल भल्भलाहट भलाइयां भ्रमंतली। भानुहुँ भुलावैं भुर-
मावै भैरवीभटून भीष्मकजा भागवान भामा भक्तवत्सली ॥ इति ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टी० ॥ ४४ ॥ सोहावनी शोभा से भरीहुई अत्यंतसीधी सुकुमारि सुन्दर सुन्दर आभरण (पहिरेहुये) सुघररीतिसे दर्शातीभई ॥ अत्यन्त जागतीहुई सलोनी छबोंकी अनेक कलाओं के सारोंको दर्शावतीहुई बहुआश्चर्य्यों से संपन्नित सुहागमान ॥ नसीबवर निश्चय करके प्रिय सुखभोगोंको बिहारनेवाली उज्वलललाट

कीर्तीकी सुघराई से भरीहुई (कि जिसकी शोभाको देख) सूर्य्यनारायणभी विमोहित होजाते हैं (और) सम्पूर्ण देवांगना सुधिबुधि भूलिजायँ (ऐसी) भाग्यशाली भीष्मकराजाकी कन्या कृष्णभगवान् की प्यारी की (शोभादर्शाती भई) ॥ इति ॥

आनन्द संमुहिता नायका ॥

भवर्ग कवित्त ॥ ४५ ॥

भोरभयो भोरी भइ भापितरी भानु भाह भाग भौन भामिनिरी
भीरभटु भेरैगी । भुरमी भ्रमानी भरतारभग्नि भाँपहिगी भिटबो
भूलैगी भौंरि भौंरहू भ्रमैरैगी ॥ भलिभलिभांति भारी भौभयंक
भानतिहूं भग्वत भलाई भरै भाभई भँभैरैगी । ललानि भवेश भक्त
भजु भूरि भोगप्रद भंजौ भगवान भापु भीरु मभैरे रैगी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ४५ ॥ एकदूती किसी एक सुकुमारिसुन्दरीको घरकी चोराचोरी से उसे श्रीकृष्णमहाराज के रंगमहल में पधराय इस प्रकार शिक्षादेकर कि देखु हे प्रिये तैं मुंहअँधियारे गुपचुप अपने भवन को यहां से चलीजइये ऐसा कहकर अपने घर को जाय सुचित्त निद्रा में प्राप्त होतीहुई प्रातस्समय जागने पर कृष्ण भगवान् के समीप चलती भई भानुउदयपर हरिमंदिर में पहुँच क्या देखैहै कि वो सखी अबतक अपने भवन को नहीं पधारी है तब तो चकित होय उस सुकुमारि

प्रति यह कहती भई कि अबतक तू अपने घरको नहीं गई अरी उठ देखुतो ॥

सखिप्रति दूतिकावचनम् ॥

टीका ॥ ४५ ॥ अरी सीधेसुभाववाली सवेराहोगया सूर्य्यनारायण की किरणैं उदय होयआई अरीप्यारी (तू) घरको पधार (नहीं तो फजिहत होजायगी जो मार्ग में) स्त्रियोंकासमूह मिलजायगा ॥ कौनभूलमें भूलीहै (तेरी) ननँदी देखलेयगी (तौ फिर) हे रूपरसलोभिनि मधुकरी मिलना भूलजायगी यह कृष्णरूपी मधुकरभी हाथसे जातारहेगा ॥ अच्छीअच्छीतरहसे कहूं हूं कि अत्यन्त बड़ा भयदायक डरहै ईश्वरहि रक्षाकरै (आजकुछ तुझे) क्लेश मिलनेवाला है ॥ (इस से हे) प्यारी कृष्णचरण सेवकिनि (तू) सर्व सुखदेनेवाले (जो गोपाललाल हैं तिनका) स्मरणकरु (अथवा) कृष्णमहाराज सेही कह (कि मेरे ऊपर) जो आपत्य होनेवाली है उसे दूरकरो (यानी मेरी फजिहत न हो सो उपाय मुझे बतलाइये जिससे कि मैं निर्भय घर पहुँचजाऊँ) ॥ इति ॥

पक्षीनामानि वर्णन ॥ अथ खगानुमान संख्या ॥ १३ ॥

भवर्ग कवित्त ॥ ४६ ॥

भीनेभीने भ्रमर भ्रमंत भ्रंगिया भँभेर भीरभार भ्रंगराज भाट
भभेरातु हैं । भारथ भुँगेला भल भुरजैट भाद्रभाते भीना भुसकैटा
भांतिभांति भन्मनातु हैं ॥ भद्रकुल भोलेभोले भामनीक भामनीक भामिनी भ्रमाती भ्रम भुजँग भुलातुहैं । भावते ललन भजु
भगवंत भंज भार भव भय भूरि भाग भागते भगातु हैं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ४६ ॥ जिस समय कि श्रीकृष्ण भगवान्के समीप श्री रुक्मिणी महाराणीका भेजा हुआ हरीदास विप्र पातीले द्वारिका को चलता हुआ तो मार्ग में इस इस प्रकारके पक्षियों के मुखसे हरिकीर्त्तनरूपी शब्द सुनकर प्रसन्न होताभया ॥ इति ॥

उमाप्रतिशिव वचनम् ॥

टीका ॥ ४६ ॥ [कहीं तो] सुन्दरसुन्दर भँबरा [कहीं] लाखोरके वृन्द [कहीं] बहुत से भंगराजनामक पक्षी विचररहे [कहीं] भाटनामकपक्षी बोलरहे [कहीं] भारथ [व] भुरजैटा [कहीं] सुहावनेभाद्र [व] सुन्दरसेभुँगेला [कहीं] भीना [व] तरह तरह के भुसकैटा चहकरहे ॥ भोली भोली सूरतवाले भद्रकुल[व] सुहावनी सुहावनी भामिनी मनका खेद हरैहैं [कहीं] भुजंगा भ्रमण करते ॥ प्रीतिसे प्रिय घनश्यामको स्मरण करते हुये [कि जिस स्मरण से] संसाररूपी महाभयदायक पातक खंडखंड है नशिजाते हैं [इसप्रकार पक्षियों को देखकर द्विज प्रसन्न होताभया] ॥ इति ॥

पक्षी नामानि वर्णन ॥ अथ खगानुमान संख्या ॥ २६ ॥

मवर्ग कवित्त ॥ ४७ ॥

मोरी मोर मुनियाहू मैनी मैनाहू मराल मुरग मँडूक मान पुष्करी मुदामहा। मारची मछाकुल महूक मगाचिकनीहुँ मूमुरी मुसरिहा महरि मुंडिया महा॥ मालिनी मयूर पंखि मुरुक मनोहरीहु मुँगही महोवरी मुँचील मद्कुला महा। मांगली मन्हूसी मुरगावीहू ममाखमनुं ललन मतंग मोद मोहित महा महा॥ इति॥

प्रसङ्ग॥ ४७॥ इस कवित्त में केवल पक्षियोंके नाम वर्णन हैं इसीकारण से टीका नहीं किया॥ इति॥

प्रौढ़ारतिप्रीता नायका॥

मवर्ग कवित्त॥ ४८॥

मोह्यो मनमोहन मुरारि मन मोर मीत माधुरी मनोज मूर्त्ति मो-
हिनी महानरी। मृदु मुसक्यान मानों महा मार मानमनी मंजुल
मजान मिलि मुख मंजु मानरी॥ मालाकारिया मोहालि मुकतनु
मालमणि मालामालसे महँगि मोति मकुनानरी। मलथा महक्क
माथ मुकुट मुरलि मुख मधुवनमें ललन मुँहिं मुलकानरी॥ इति॥

सखिप्रति सखिवचनम्॥

टीका॥ ४८॥ अरी मित्र सुन्दर कामदेव [व] अतिशय मोहनी मंत्रों से भरी हुई सी सूरत। मीठी मंदहँसन साक्षात् अत्यन्त कामदेवकी छविकी पद्धति [आनसान] सेभरी सुन्दर सुखोंसे सम्पन्नित [ऐसा] शोभित वदन सुहायमान॥ जो किसीको नसीब न होसके ऐसे मोती मँणियोंके मालाओं के वृंद [व] अमितधनसे अमोल गजमुक्तों की [मालापहिरे]। [व] चन्दनसे सुगंधित [तन] मस्तकपर मुकट [क्रीट] आनन में बंशी [अधरोंपर धारणकिये] हे सखि [आज] मोंको वृन्दावनके बीच नन्दकुँवर देखाई पड़ा [उस] मन मोहनेवाले मोहनने मेरा चित्त चोरायलिया॥ इति॥

मानवती नायका ॥

मवर्ग कवित्त ४६ ॥

मानुमानु मानिनी मनोहरी मयंकमुखी मानके मनैबे में महातम महातु है। मानहुँ न मानहुँ श्रीमाधरीजी मोर मती मंदै मुदिताई मलिनता महिंगातु है ॥ मीतरी मिलापै में मजातु मजा मंजु महा मूजिवामूजिब मूल मनमां मुलातु है। माधो मोहिनी मुलायमी ललनि मेंदु मत मानुज में मुख्य मृदुताहि मामुलातु है ॥ इति ॥

श्री राधिका प्रति सखिवचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ ४६ ॥ एकसमय श्रीराधिकाजी महराणी कृष्णभगवान् से मानकर बैठतीभई कि एक दूती श्रीकृष्णमहराज की तरफ़से आनकर यह प्रार्थनाकर उपदेशिक वचन कहतीभई कि ॥ इति ॥

सखि प्रति दूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ४९ ॥ [हे] मानकरनेवाली [रूठनेवाली] चितचोरिनि चन्द्रवदनी [मेरी शीक्षा] ग्रहणकर ग्रहणकर [देखु] पद्धति युन सत्कार से बड़प्पन बढ़ैहै। [आगे] प्यारी मेरी सलाह मानने न माननेका [तुम्हैं अख्त्यार है परन्तु न मानने से] सुख घटता है [और] दुःख बढ़ता है ॥ [क्योंकि] [हे] प्यारी सुखप्यारै में अत्यन्त श्रेष्ठ आनन्द प्राप्त होता है [और मेरे कहने का] उचित अनुचित सार [आपके] हृदयमें मालुम होता होगा। [हे] प्रिये कृष्ण

चितचोरनि नम्रताको न दूरकर मनुष्य के तनमें [केवल] शीलही एक मूल पदार्थ है॥ इति॥

बैसिकनायका॥

कवित्त यवर्ग ५०॥

यादवेश यारबास येहिही यकीने यशु योवनयाकूत यावरीही युति यारभे। यदिहि युबाई योमी यत्न युक्ति यंत्र योगे यादतै युगुल यारी योगी येतबार भे॥ यातोही यकंती योंहीं यकायक यादगारि यक ना यामिनि याम योगयुग्मकारभे। येहोयों यरू-जन यथोचित यरूजकै ललन यदु युवती यरै यमानमारभे इति॥

हरिप्रति सखिवचनम्॥

टीका॥ ५०॥ [हे] स्याम सनेही [तुमको] यही भलाई करनी उचितथी [कि] हीरारूपीयौवनकी उमंगही पर मित्रबने॥ जबतो युवाअवस्था प्राप्तथी [याने मेरी ज्वानी चढ़ी हुई थी तबतो तुम्हारे] उपाय [व] चतुराईरूपी टोंना करनेसे [हम तुम] दोनों प्रीति करतेही विश्वास करनेके समतुल्य भये [याने यकीन करने के लायकहुये] अजीओ प्यारे यथायोग्य सुखरूपी ऐश्वर्य्यों को [मेरेसंग] भोगकर [अब तुम और और] यादवोंकी स्त्रियोंसे प्रीतिकर [ऐसे] बेनियत होगय हो। [कि] कहांतो इसप्रकार एकदमसेही [मेरी] सुरत बिसराय दीन्हीं है [कि अब कभी कोई] रात्रिके एक पहरके [वास्तेभी] नहीं दोनोंजने मिलसक्ते हैं॥ इति॥

शान्तिरस ॥

रवर्ग सवैया ५१ ॥

राम रसायन राचु रँगील रदैं रुज रंकित रांड़ रजोवति । राख-
हि रज्जु रघूपति सों रति रांध रमैं रिरियावति रोवति ॥ रास रहस्य
रमापति के रुचि राज रजै रमणी ललनै रति । रारि रुदैं रघुनायक
राजिवलोचन रामक रोजहि रोजति ॥ इति ॥

उपदेश ॥

टीका ॥ ५१ ॥ [हे] प्यारे सुखकाधाम [जो] रामनाम है [तिसको] भजु व [स्मरणकरु तौ] विधवा मासिकधर्म्मणी स्त्री के नीच दर्शन तुल्य [जो] दरिद्ररूपी रोग हैं [सो] दूरहोजांय । [और जो] रामचन्द्र महराज से प्रीति-रूपी लव [डोर] लगावै [तौ जितनी] विपत्ती हैं [सब] विलाप करती झीं-कती फिरैं ॥ [जो] परमेश्वर के गुणानुवाद में रमै [तौ] मनमानी नरदेव पदवी [व] सुन्दर स्त्री [व] संतानादि सुख [व] हरिपदभक्ती प्राप्तहोय । [और जो] कमलसरीखे नेत्रवाले सबमें वर्तमान रामचन्द्रमहराज [तिनका-प्रेमरूपी] व्रत धारण करने से [संसाररूपी जंजालकी] व्यथा मिटजाय है [आवागमन से रहित होजाय है] ॥ इति ॥

अनुकूल नायक ॥

रवर्ग कवित्त ५२ ॥

रामसोंह रावरी रटतु रोंप रोंप कर रंक रहूं रूपरस रसना रसी-
लीको । रीति रति रोचतही रोचतहौं रीतिरस राग रँग रंग रुचि

राखत रुचीली को ॥ ललने री रमणीक रमणी रमणकार रोष रांधि रद्दत री रागिया रतीलीको । रामक रसिकरति रामकि रुचिक रुख रोमरोम रमों रूप राधिका रँगीलीको ॥ इति ॥

सखि प्रति हरि वचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ ५२ ॥ किसी समय एकसखी श्रीकृष्णमहराजसे कुछ प्रीति मार्गका उरहना देतीभई तब मदनगोपाललालजी उससे उत्तरमें ये कहतेभये कि तू ऐसी बात मुझसे मतकहु ॥

टीका ॥ ५२ ॥ हे प्यारी [मैं तो] हाथ उठाय उठायकर परमेश्वर की कसमखात हौं [कि मैं तो सदैव] सुन्दर छवि [व] सुखरूपी मीठेवचनों का लोभी रहताहूं । [और जो मुझसे] मीतिरूपी बर्ताव वर्ते है [उससे मैंभी] मेमरूपीबर्ताव करताहूं [और] स्नेहरूपी आनन्दसे संपन्नितकर इच्छाकरनेवाली का मनोरथ पूराकरूहूं ॥ अरी प्यारी [मैं तो] सुशील स्त्रियों से प्रीतिकरनेवाला [और] हे सुकुमारि क्रोधरूपी व्याधा दूरकर [जो] प्रीतिवाली है [उससे मैं सदैव] प्रीति करताहूं । [व] मेमियोंकी मीतिमें रमनेवाला [व] वांछितार्थी की मनशा पूर्ण करनेवाला [ऐसे जो सर्व गुणोंसे संपन्नित मेरी परममिया] मेमवती वृषभानदुलारीका गुण [चालचलन मेरे] रोयाँ रोयाँ में रमिरहाहै ॥ इति ॥

प्रौढ़ा अधीरा नायका ॥

लवर्ग कवित्त ५३ ॥

लाड़िलो लड़ावै लाड़ लाड़िली लड़ाई लड़ै ललनी ललन

पन लेति लरिकांई को। लखुलखु लोचनहिं लहु लहु लाभालाभ लोक लाज लिपृ लंघु लच्छन लुगांई को॥ लाहत लड़ैती लाल लाहुनी लकीर लय लेनुलागि लली लुंगरील लम्पटांई को। लीपतु ललन लागी लातों लतियावै लेउ लालीहू लखाहु लठियाउ लँगरांई को॥ इति॥

सखि प्रति सखिवचनम्॥

प्रसङ्ग॥ ५३॥ एक समय ललितासखी महराजसे रूठकर मानकर बैठतीभई तो उसके मनावने को एक दूती जायकर यों उपदेशिक प्रार्थनाकर कहती भई कि देखु॥

टीका॥ ५३॥ [हे] दुलारी [तेरेसँग] लालजी तो [बड़ा] प्यारकरते हैं [और तू उनसे नित्य] मानकरैहै [झगड़ाकरैहै और] नादान लड़कपन का बर्ताव ग्रहण किया करैहै। [अपने] नेत्रोंसे देखु देखु हानिलाभका सोच विचार कर [और] संसारकी लज्जाको गहु [कुचलन] स्त्रियों सी प्रकृती दूरकरु [सोंचु] प्यारी गोपाललाल [तो] विश्वासरूपी लीक खींचकर [तेरेसँग] प्रीति करते हैं [और] नादान [तूअब] ओछे व खोटे चाल चलनों को ग्रहणकरैहै। ये देखु [अपने] प्यारेसे बढ़ीहुई प्रीति को पैरोंसे ठोंकराय मिटायेडारैहै [इन] खोंटी प्रकृतियों को छोंड़ कुछ भलाई [करके] दिखाउ [तब मैं जानूं तू चतुर है]॥ इति॥

उपदेश ॥

श्री हनुमान् ध्यान विनय ॥

लवर्ग कवित्त ५४ ॥

ललित ललाट लटों लसित लवन्नताई लोललोल लोचन लखन लोचवालहै । लाललाल ललिताङ्ग लहरी ललकि लाल लकदक लुगराहु लहरात लालहै ॥ लंकृत लँगोट लंक लालही लुँगील लस लैलहो लहातो लेप लेपित लदालहै । लाहुनि लहान लहु ललन लगाउ लत्र लाड़िलो लँगूरपति लकुटिया वाल है ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ५४ ॥ श्री हनुमान्जी महाराज की कैसी शोभा है कि जिनका ॥

उपदेश ॥

टीका ॥ ५४ ॥ सुन्दर उच्चभाल केशोंपर सुन्दरता सुहायमान सुभग सुभग नेत्र नम्रतावत् चितवन । अरुण अरुण सुन्दर शरीरपर मनभावती ललियाई सोहायमान अनमोल साजों से सजा अरुणवर्ण का पटुका धारण किये ॥ कमर में सुहावनी रक्त लुंगीकी कछनी काछे यथोचित् चिमित्कारिक (शरीरमें) अतिशय सिंदूर रंगका लेप लगाहुआ तथाचोलाचढ़ाहुआ । (ऐसे जो मन वांछितमद पवनकुमार हैं तिनसे हेमन) नादान आनन्द भरे आनन्दों को माप्तकरा चाहे (तौउनसे) सुरतलगाव [किनसे जोकि] प्राणजीवन वानरों के स्वामी गदा धारण करने वाले हैं ॥ इति ॥

लक्षितानायका॥

सवर्ग कवित्त॥ ५५॥

सुन्दरि सुजान स्यानसदन सलोनी सुठि स्यामसों सनेहिक सगाइऐ सगावैगी। सांवरे सुशील सन सुनऊं सँदेश सुनु सोंचु सागरी समुझ सुखन सजावैगी॥ सारी सुकुमारनी सनेहिन सलोनेहिं की सांझही सकारे सुनुगन सो सुनावैगी। संगहौं सिधाऊं ललने सरा सचाऊं सब संक सियराऊं सांची सबैहि सुझावैगी॥इति॥

सखिप्रति सखिवचनम्॥

प्रसङ्ग॥ ५५॥ कोई एक दूती किसी एक सुकनारि नौयौवना से बहु प्रकार चतुराई चलांकी से भरेहुये वचनोंकी रचना कर नम्रता से कहती भई कि॥

टीका॥५५॥ (हे) सुखवति सुन्दर रसीली शोभावाली चतुराईकी स्थली ज्ञानवती कृष्णमहराज से स्नेहकरनेके योग्य (जो) प्रीति है (सो) करैगी। (जो तू अंगीकार करै तौ मैं) सुन्दर सुभाववाले गोपाललाल से खबर करूं (हे) बुद्धि की सरिता ख्यालकर विचार देखु (जो मेरी शिक्षाको मानैगी तौ) बहुत से आनन्द प्राप्त होयँगे॥ (और तू किसी तरहका संकोच न कर यह) समस्त व्रज अबला कृष्णहिं की मिलापिनी हैं ये समाचार (तुझे) आजैकाल में मालुम होजायगा। (तू किसी तरहसे घबराइये मत) (हे) प्यारी मैं तेरेसँग चलकर सकल बर्ताव बताय (तेरा) डर मिटायदूंगी (तब तुझे मेरा कहना) सब सच्चा मालूम परैगा॥ इति॥

पक्षीनामानिवर्णन ॥ अथखगानुमानसंख्या ॥ २८ ॥

सवर्ग कबित्त ॥ ५६ ॥

संकुली सुगंधिका सुनारिका ससैनासिपा संबुलादि सूरीसन कुनि स्याहती तरा । सौंला सुरभृंगि सोनचिरई सुआसफेद सर्व्व सूली सनपिड़ुकी सुवाक सुंदरा ॥ सुभ्र सुकमारी सुरखाब सक्क· खोर सुठि सुतरमुरग सीलबाज्ज श्यामचिल्हरा । सीनेबाज्ज सारस सीमुर्ग सिकरा समूह श्यामा श्याम सुमिरैं ललन सुख सा· गरा ॥ इति ॥

टीका ॥ ५६ ॥ इसकबित्त में केवल पक्षियोंहीं के नाम वर्णन हैं इससे टीका नहीं किया ॥ इति ॥

कपोतजातिवर्णन ॥ अथ क०जात्यनुमानसंख्या ॥ २३ ॥

सवर्ग कबित्त ॥ ५७ ॥

सालिसी सुरंग सीमतनिये सजांहपुरी सेवती सिराजी स्याह सोसई सुहाने हैं । सुंदरासहावी सुहे सीनेबाज्ज सर्वती सुन्हैरासेख संदली सँजाफदार स्याने हैं ॥ सुर्ख सब्ज सिर्जे सुलेमानी सो· सनी सफेद सुर्मई सरोजी सुभ्र ललन सुध्याने हैं । सुन्दर सलो· नियाँ सकील सान सोहैंसुभ श्यामा श्याम श्यामा श्याम सोधैं सुख साने हैं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ५७ ॥ इस कबित्त में केवल कबूतरों की जाति वर्णन है इससे सरलताजान इसका टीका नहीं किया ॥ इति ॥

शृंगारवर्णन ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ २७ ॥

सवर्ग कबित्त ॥ ५८ ॥

साजि स्यातुरीसपेद सोसनी सुन्हैरी सब्ज्ज सर्दई सिंगर्फीसुर्ख

सोसनी सुम्फालुकी। सेवती सिंदूरी सूही सहतूती संतरई संदली सहावी सुलेमानी सपतालुकी॥ सीपिकी सिराजी सो सागौनी सर्ब्बती सुस्याह सूसी साठनी सुरंग सोसई सुढालुकी। सल्मकी सितारी सारी सोरह्र सिंगारवारी ललन सहेलि सोहैं सगरी सुचा-लुकी॥ इति॥

प्रसङ्ग॥ ५८॥ श्रीकृष्णचन्द्र महराज के विवाहमें जो भीष्मक नगरकी नागरी सर्व्व गुणआगरी रूपउ-जागरी शोभाकी सागरी भरी सुहागभागरी नानाप्र-कारके शृंगार साजकर आईरहीं तिनकी पोशाकों के केवल रंग इस कबित्त में वर्णन हैं इसी से टीका नहीं किया॥ इति॥

सखिशृंगार वर्णन॥ अथ रंगानुमानसंख्या॥ १५॥

सवर्ग कबित्त॥ ५९॥

सेवती सफेद सुर्ख संदली सुन्हैरी सब्ज सर्ब्बती सहावीसुही सुर्म्मई सुहानसो। सोज्ञनी सिराज़ी सुलेमानी सोसहीसी स्याह सारीं सुभकारीं सीससाजीं सखियानसों॥ सोलह्रसिंगार सुकुमार सो सम्हार साज सोहत समाज सर्व्व सुन्दरी सुजानसो। सिरसों सरीर सबी सुन्दर सरूप सुभ्र ससिही समान सान ललन सवा-नसो॥ इति॥

प्रसङ्ग॥ ५९॥ इस कबित्तमें भी रंगीन वस्त्रों के नाम व सखियों की सूक्ष्म शोभा वर्णन है कोई क्लिष्ट शब्द न होने के कारण से टीका नहीं किया॥ इति

विप्रलब्धानायका ॥

हवर्ग कवित्त ॥ ६० ॥

हहरे हिवारी हहकारनी हुजूम हवा हेरी हे हितूनि हियहूलत ह-
मार है। हमरे हितूहीरी हटायो हमसोंहिं हेत होनहार हाँसी हा ह-
जारन हँसार है ॥ हांसैं हगम्फोली हेलि मेली ललनौ हमेश हा-
लि ही हवेली हेचहोवती हिकार है । हिया हिलकावन हिलोरन
हनावत हौं हेरति हरी हिरात हांथ ना हजार है ॥ इति ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ ६० ॥ अरी सहेली (तुझने) देखा (यह जो) अतिशय उत्पातका-री (व) शीतकारी पवनके झरोखे झकोरे हैं सो मेरे हृदयको बड़ी पीड़ा होती है ॥ (काहेसे) प्यारी मेरे (जो) सनेही हैं (उन्हीने) मुझसे प्रीति दूरकर रक्खी है (सो मैं जानो हैं कि मेरी) हँसी होनेवाली है हँसनेवाले (जगमें) बहुत हैं हाय ॥ (वो मेरी) बराबरवाली (व मेरी) मिलने हिलनेवाली सनेहिनी (व) लघुवैसिनी भी (मुझे कृष्ण से रहित देख) नित्यप्रति दुरावैंगी (और मेरा जो) हृदयरूपी घर है (सो) कंपित होरहा है बुरी बदनामी होती है॥ (ऐसी) दुःखों की लहरोंमें (मेरा) मन बूड़ रहा है (कि) मैं कृष्णमहराज को खोजती फिरती हूं (अह) वो हजार (सहस्र) हाथ तक (करतक) नहीं दिखाई परै हैं ॥ इति ॥

पक्षीनामानिवर्णन ॥ अथ खगानुमानसंख्या ॥ १४ ॥

हवर्ण सवैया ॥ ६१ ॥

हंस हँसै हिंसकैं हिंसकनू हबुआंय हमीर हजारनहीं।
होरिल होर हवूहवकात हजारहु दास्तह हुदहुदहीं ॥
हस्नहुसेन हरेवनहुर्फ हरीहर हर्दिय हुक्करहीं।
हेलुहुकैं हलुआंगिहरी हरएक ललन् हरपैंहियहीं ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६१ ॥ इस सवैयामें केवल पक्षियोंके नाम व उनके बोलचालों का वर्णनहै कोई गूढ़ शब्द न होने से इसका टीका नहीं किया ॥ इति ॥

खगनामवर्णन ॥ अथ पक्षीअनुमानसंख्या ॥ २८ ॥

गवर्ग व घवर्ग कवित्त ॥ ६२ ॥

गण गउगाई गोरखा गरिल गौरियान गिद्ध गिरगिटी गूना गुंजरी गहागरी। गुलई गुँदीला गारादल गुलुबदनादिगाहे गिल गिल गिरदानियाँ गहबरी ॥ घाघर घुरीला घसियारी घमछई घामा घुग्घू घुनखावा घन्नई घरैलघोररी। घुड़हाघेतल घोसलीन घीसुँ घीघनेहि घनश्याम ललन घोषें घरी घरी घरी ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६२ ॥ इस कबित्तमें भी केवल पक्षियों के नाम वर्णनहैं इसीसे इसका अर्थ नहीं कियागया ॥इति

देववाहनीय खगनामानि ॥ अथ विहंगानुमानसंख्या ॥ २० ॥

चौवर्गी ॥ छ.ज.झ.ट, कवित्त ॥ ६३ ॥

छांकर छजोहें छैल छपका छबीलेछज छांगुजी छिकुई छिर्नखीनु छिन्नपंखीपर। जूथजमे जलासिंधु जुम्मस जलकुक्कुट जलमुरगाबी जुगुनूई जुर्रा जल्लगर ॥ झीनेझींगुरी झँगारझामकैं झँगा झमक झीनीझीनी झालरैं झकोरतीं झल्लाझलर। ढ्ढियां टिक्कुई ट-

टीरि टिपरैलि टिटिहरि ललनहुँ टीपटापटेरै टुकहरीहर ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६३ ॥ इस कबित्तमें भी केवल पक्षियोंके नाम वर्णन हैं कोई क्लिष्ट पद न होने से टीका नहीं हुआ ॥ इति ॥

सुरसवारिकखगनामानि ॥ अथ विहंगनामानुमानसंख्या ॥ ७ ॥

द्विवर्गा ठ.ड.कबित्त ॥ ६४ ॥

ठुमकु ठुमकु ठुमकत ठये ठीक ठीक ठोंकर ठवत ठर ठहरठहरके। ठिकरई ठेंगरीनु ठाठठठके ठठैत ठनक ठनक ठनकैं ठुनकठरकें ॥ डमरूली डूंमाडोंज डुँड़पुँछीडोंगरीनु डोलैं डोलडाल डटे डटाडट डरके। डांगरे न डांगरे डिगैं न डग डग डारे डोरीहि डाकोरजीसों ललन पियरकें ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ६४ ॥ इस कबित्त में देवगण ईश्वर का स्मरण करतेहुये जिन वाहनीय विहंगमोंपर सवार होकर हरिदर्शनार्थ आवते भये केवल तिन पक्षियों का नाम वर्णन है इससे टीका नहीं किया ॥ इति ॥

देववाहनीय पशुपक्षीवर्णन ॥ पक्षी व पशु अनुमानसंख्या ॥१२॥

चौवर्गा थ. द. ध. न. कबित्त ॥ ६५ ॥

थिरिक थिरिक थुन्नथुन्न थिरकैं ललन थिर्के थरर थरर थोम थूथुनंगथामियां। दिव्य दिव्य दिग्गज दुदंत दंतिया दराज देवदल दामिनते दुगुण दिपामियाँ ॥ धूतीहू धमंकै धाप धापीहू धपाहें धर धोबिन धमाकें धाके धूमधाम धामियाँ। नीलकंठ नरकुली नील बांदरान नाक नकुन्नानिकुही नाग नौअन निनामियाँ इति॥

प्रसङ्ग ॥ ६५ ॥ इस कवित्त में केवल सुरसवारियों

के पशु पक्षियों का नाम वर्णनहै गूढ़ार्थिक शब्द न जा-
नकर इसका टीका नहीं किया ॥ इति ॥

देवयानपक्षीनामानि ॥ अथखगानुमानसंख्या ॥ २३ ॥

द्विवर्गी प. फ. कवित्त ॥ ६६ ॥

पीलूहू परेवापाखी पनडुब्बिया पतारी पिडुखी पतेरा पाढ़ा पे-
पनु पयामहीं । पीलख पतैनाहुँ पतंग पिढुकी पिपीलपीन पुंज
पूंगे पैन पंडुक पुगामहीं ॥ फूलसूंघिहू फलेन फूलमुर्ग फुदकून
फांदे फीलमुर्ग फाकता फरे फड़ामहीं । फुलालैन फुलवरी फरा-
सीसि फर्दे पट फनुई फबील फबें ललनाभिरामहीं ॥ इति ॥

टीका ॥ ६६ ॥ इस कवित्त में भी केवल देवतों की सवारी के पक्षियों का नाम वर्णन है इसी से इसकी भाषा नहीं हुई ॥ इति ॥

सखिशृंगार प्रभावर्णन ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ ८ ॥

बहुवर्गी कवित्त ॥ ६७ ॥

झिलिमली झलकी झीनी झांगुली झमाकेदार झामई झमं-
क झक झाड़दार झाउकी । टूली टापटी ठठूअ ठप्पेदार ठीकरीहु
टसरी डोरई ढांकपाटनी ढराउकी ॥ ललना ढुधील दूबी ढोलई
दमंकवत दारमी दराज दाखियाहु दम्दमाउकी । धारे धूपछांहीं
धोती धानियां धमारधर धीहें धीरवंत धूमधाम धक्चकाउकी॥इति॥

प्रसङ्ग ॥ ६७ ॥ इस इस प्रकार सखियाँ श्रीगोपा-
ललाल के बिवाह में शृंगार साज आवती भई ॥

सखिप्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥ ६७ ॥ (कोईतो) बनीचुनी छबिदार सुन्दर महीन बसन की झँगुलिया

(कोई) [६]साफ [७]चमकदार [८]बेलबूटे छपी [९]झाऊ सरीखे रंगकी (सारी) [१०]पहिरेहुये। (कोई) [११]धूलीरँगकी (व) [१२]टापटी परकी (व) ठदुआ [१३]छोहुये [१४]वस्त्र (व) [१५]गेरुअई (कोई) सूती [१६]रेशमी टसरी (व) [१७]डोरिआ (व) [१८]ढाँकापाटन की [१९]सुडौल सांहुई॥ (कोई) [२०]सखीं [२१]दूधिया रँगसी (कोई) [२२]घासके रँगसी (कोई) [२३]जर्द [२४]चिमित्कारी (व) [२५]गहिरी [२६]गुलेसप्तालू (कोई) अनार के [२७]सुमन से [२८]गहिरी। धीर्यवान [२९]स्त्रीं [३०]न. [३१]नामकारके आभूषण संयन्वित रेशमी [३२]घूपछांहीं (व) [३३]तेज [३४]धनिआई रँगसी [३५]सारियां [३६]पहिरेहुये सोहावती भई॥ इति॥

खगनामानिवर्णन॥ अथ विहंगमानुमानसंख्या॥ २१॥

द्विवर्गी ल. र. कवित्त॥ ६८॥

लावा लमदुमी लेल लाललाल लालसर लामलहटोरा लहि बुड़िया लसालसे। लग्घड़ ललाम लिजुकुल लालसुआ लख लीलकंठ लिढुक लखोरहू लखातसे॥ रामचिरई रवीना रवरव राजरहिं रूरूरइदासी रामा राजते रसालसे। राधावरी राधावर ललन रटनरहै राजाजी रटत रामराम रसारामसे॥ इति॥

प्रसङ्ग॥ ६८॥ इस कवित्तमें केवल पक्षियोंके नाम वर्णन हैं इसीसे टीका नहीं किया॥ इति॥

सखिशृंगारवर्णन॥ अथ रंगानुमानसंख्या॥ १७॥

द्विवर्गी न. प. कवित्त॥ ६९॥

नर्गिसी नवीनियां नखूनिहू नईनईहि नैनसुखी नैनूनीमई नयावनीलकी। नीलीहू नरिंजीनोखी नर्यली निराली नीप ललना नुकीली नीकी नेहे नज़रीलकी॥ पीयरी पलासी पापुलैनियां पतंगी पुनि पोहकी पियाजी पाकपानकी पिपीलकी। पन्नई पुदीनि

की पिंडोरी पिस्तई पुनीत प्रीते पुःखराजी प्रियाँ पटका पुरीलकी ॥ इति ॥

सखिशृंगार ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ १७ ॥

चौवर्गी फ. व. भ. म. कवित्त ॥ ७० ॥

फलालैनि फुल्बरीक फरासीसि फाकताई फालसाई फावती फवन फहरानसी। बैंजनी बिशाल बूंदवार बादलाई बर बादली बदामिया बसंतिहू बखानसी ॥ भँवरीलि भाँगी भड़कीली भड़कीली भल भोरी भोरी भली भली ललना भुलावसी। मूंगई मजीठी मुलतानिया मयूरपंखि मासिया मलीदी मखतूलिया महानसी ॥ इति ॥

सखिशृंगार ॥ अथ रंगानुमानसंख्या ॥ १५ ॥

चौवर्गी म. र. ल. ह. कवित्त ॥ ७१ ॥

माठहू पिलामी मौठी मलमली मरीनि मंजु मोमई मजील मानिकीहु मोतिया महा। रोरिकी रँगेरे रंग रीति रीति राचे रुचि राखी राती रूपहरी राजतीं रहा रहा॥ लाल लंकलाटी लीला लसहिं ललीत लख ललन लहाते लाखी लूगरा लहिलहा। हरे हरताली हर्दि हिर्मिजी हजारहान हेमी हुरमतियाहु ही हमेल हीरहा ॥ इति ॥

सखिशृंगार ॥

अथरङ्गानुमान ॥ १६ ॥

दोहा ॥

माठ पिलामी मलमली मंजु मरीनि मटेल ॥
मोमी माजी मानकी महा मोतिया मेल ॥ १ ॥
रोरि रुपहिली रोचकी राखी रङ्ग रँगेर ॥

लाल लहरिया लीलई लाखी ललित लुँगेर॥ २॥
हरित हजारी हिरमिजी हरताली हरदेल॥
हेमी हुरमतिया हिये हीरन हार हमेल॥ ३॥ इति॥

कपोत जाति वर्णन॥

अथक० जात्यनुमान संख्या॥ २९॥

द्विवर्गी ख. ग. कवित्त॥ ७२॥

खाखी खूबसूर्त खिर्केबंद खुर्दनुखे खूब खैरिये खतंगे खिम्से खिनिंये खरेसे हैं। खीरिये खजूरी खोपरे खड़ील खाखसीन खंजनी खसीस खाजी खम्सई खुलसेहैं॥ गिराबाज गोले गुन्जागन्नई गुलाबी गण गेंदई गुटुरें गूंहँ गूँ गूँ गाजरेसे हैं। गंडेदार गुलेदार गुलेखार गंडुमीये गेहुयें ललन गूढ़ गुनन गरेसे हैं॥ इति॥

अथक० जात्यनुमान संख्या॥ ३०॥

कपोतजाति कवित्त॥ ७३॥

चीनी चप चित्तीदार चुर्हरे चमेलियेच चुन्नई चुटीले चंदानौ ललन प्रिया। चम्पई चँदनिये चौरीले चांदतारा चारु चितले छतीले जागजरचेहू जोगिया॥ जंगली जलौनी ज़रदक्खहु जलंधरीक झप्पेदार टाटीटारु टीकेदार टर्किया। ठाठिया ठियारे ठक्ठक् ठीकठीक डंडबाज डीलडौल डोंगे ढिठयारे ढवीढाखिया॥इति॥

अथक० जात्यनुमान संख्या॥ ३४॥

कपोतजाति कवित्त॥ ७४॥

तामड़े तिलक्खे ताखी तालमार तहेवंद तीरा तूसी तेलिया तमोलिया तमीले हैं। तीतुरी तिलेचाताजी थिरोड़ान ललन जूदेल्हीवार दोंगिया डुवाजहू दमीलेहैं॥ दुम्मेदरखंब दुपहरिये धुरील धूमे नीरजी निसाउड़ी निलाम्बरीक नीले हैं। पम्नई पिल-

क्खे पुंज पेशौरीक पांय मोज फाकसी फतोईदार फूल पग पीले हैं ॥ इति ॥

अथक० जात्यनुमान संख्या ॥ ३५ ॥

कपोतजाति कवित्त ॥ ७५ ॥

बिद्रुमी बदामी बहु बबरे बगूलईक भूरेभौंरई ललनु मंजु मोदते महासु। मूंगई मिथील मोठई मकोइ मोमियारु मोचेमानू मैनाज़ाद मोतीचूर मैदुमासु ॥ मासल मटीले महामखियारे मासी मुख मोजेदार मंगसी ममोलेहू मुँगेरियासु । मोजेगर्क रामपुरी येलचिये हू हेरेरे ललिसरे ललांख लप लप लाखीलाल लम्द्रुमासु ॥

इति श्रीपण्डित ललनपिया विरचित ललनचन्द्रिका पूर्वार्द्ध विभागसम्पूर्णम् शुभमस्तु ॥


श्रीकृष्णअ०

ललनलहरी ॥

अर्थात् ललनसागरके चौथेभागकाहिस्सादोयमकी भूमिका ॥

इस विभाग में अन्योक्तिक श्रेणीं अमित भाव सुख सृजेणीं तथा पक्षीविलास, व प्रसूनप्रकाश, बानाकिराना, व मसालादि अनुमाना, विटप वर्णना, व सागभाजी विवर्णना, व्याख्यानतरु फलानु, व रङ्गगणना विधान, पात्रणुशैली, व नकसिक गैली, तंडुलादि अनाजजाती वर्णन, व प्रकरण वस्त्रन, संख्या मिष्टान, व निमकीन सामान, पात्रसृजायक शस्त्रसूचनिका, व लोहपात्रस्य गणनिका, आभूषण प्रसंग, व रत्नादि तरंग, गोटा किनारी बाना, व भूमिका बिसांतखाना इत्यादि अनेक रँगीले ढँगीले, व छबीले फवीले, व चटकीले मटकीले, व रसीले सुखसरसीले भावों में अनूठे अनूठे कवित्त अनेकनायकालंकार सम्पन्नित मुद्रित हैं यह ललनचन्द्रिकाका उत्तरार्द्ध द्वितीयभाग है यथानामा तथा गुणा यह ललनलहरी क्या है आनन्द की छहरी है रसोंमें गहरी है और भावों में ज़हरी है, अर्थोंकी नहरी और गूढ़तामें क़हरी है, सोंगोंसे बहरी शुभ योगोंमें ठहरी है, भाआभरण पहरी और प्रभुपद सेवा की महरी है कि जिसको पढ़तेही मन लहराने लगता है प्रिय महाशयो लीजिये लीजिये इसकी लहरों में गोता लगाइये और अपने दुखरूपी तनमनका मैल धो बहाइये हरियश गुणगाइये मज़ेउड़ाइये कुछ बहुतमोल भी नहीं है मत सकुचाइये लोभको हटाइये मोल बिसाइये और इसे पढ़कर जो कुछ सुखउठाइये सो मुझे लिखपठाइये ता कि मैं आपको कोटिशय धन्यवाद दें अपने आपको कृतार्थ समझूं ज्यादा क्या लिखूं ॥ हरि ॐ तत्सत् ॥



अथ ललनचन्द्रिका का उत्तरार्द्धभाग
ललनलहरीका मङ्गलाचरण ॥

दोहा ॥

अग्रणीय अग्रहि सुमिरि गौरी ललन गणेश ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश पद नमो शारदा शेश ॥ १ ॥
गुरु गोविंद दशरथ ललन सिय रुक्मिणी धनेश ॥
वेद विबुध कमला चरण वन्दहुँ संत सुरेश ॥ २ ॥
ललनचन्द्रिकाजमकप्रिय द्वितियविभागविशाल ॥
रचहुँ ललनलहरीललित अन्योक्तिक पदमाल॥३॥
कृति नन्दन वन वाटिका कवित सुमनवर अङ्ग ॥
अलंकार सौरभ ललन हाव भाव रस रङ्ग ॥ ४ ॥
पात पुनीत प्रसंग भल अर्थअनुप हरियालि ॥
शाखाशब्द सुहावने ललन मनोहर चालि ॥ ५ ॥
भेद नायका रूपरस बहुप्रसंग शुभ ढंग ॥
ललन सुघरई सम्पनित मृदु मन मौज तरंग ॥ ६ ॥

अथवन्दनाश्रीगणेशजीकी ॥

कवित्त ॥ ७६ ॥

वंदत प्रथम गणईश ईशपुत्र पद ऋद्धि सिद्धि नवौ निद्धि दासी नित जाके हैं। विष्णु औ विरञ्चि शेश शंकर सुरेश देव अग्रणीय थापे सुख भौन बसुधाकेहैं॥ चारिफल मनशाके दाता नंत वित्त वर ज्ञानगूढ़ बृद्धिबुद्धि रक्षक लज्जाके हैं। ललन उमाके प्रभुताके सिन्ध बांके हम सेवक सदाके शम्भु लाड़िले ललाके हैं॥ इति॥ अथ सन्धि प्रकरणम्॥

दाता+अग्र+अनन्त=दातानन्त ॥ अर्थ दाता (देनेवाले) अर्थ अनन्त (अत्यंति अपार)

टीका ॥७६॥ पहिले गणन के स्वामी श्री महादेवजी के ललन (जो गणेशजी महाराजहैं तिनके) चरणोंको प्रणाम करतहूं (कैसे गणेशजी हैं) जिनकेपास आठो अणिमादिक ऋद्धि सिद्धि व नवो निद्धि सदैव चाकरीरहेंहैं। (और) विष्णुभगवान् व ब्रह्माजी वमहिभारधारी शेषजी व महदेवजी व तेंतीसकोटि देवता व देवराज इन्द्र ने आनन्दरूपी धनके स्थल (जो गणेशजी हैं तिन्हें) आदिपूजनीयकर स्थापित कररक्खाहै॥

(फेर गणेशजी कैसे हैं कि) अर्थ धर्म्म काम मोक्ष वाञ्छित फलोंरूपी श्रेष्ठ धन व विमलज्ञान व तीक्ष्ण सुमती के अत्यंति देनेवाले (और भक्तोंकी लज्जा जो) पति इज्जत रखनेवाले हैं॥ पार्व्वतीजी के पुत्र प्रताप में अथाह समुद्र ऐसे जो श्रीमहादेवजी के प्राणप्यारे कुंवर श्री गणेश जी महाराज हैं हम तिनके सनातन के दास हैं॥ इति॥

ललनचंद्रिका द्वितीयविभागः
ललनलहरीप्रारम्भः ॥

॥ ७७ ॥ मानवतीनायका मालिनी दूतिका प्रसंग पुष्पोंका ॥

अथपुष्पानुमान ॥ २४ ॥

जाही ॥ १ ॥ जुही ॥ २ ॥ वेला ॥ ३ ॥ केतकी ॥ ४ ॥ निवारी ॥ ५ ॥ चंपा ॥ ६ ॥ चांदिनी ॥ ७ ॥ विप्रगुक्रान्ता (व) कोइलिया ॥ ८ ॥ मालती ॥ ९ ॥ चमेली ॥ १० ॥ सेवती ॥ ११ ॥ इश्कपेंचा ॥ १२ ॥ मयूरपंखीव मोरपंखी ॥ १३ ॥ मोतिया ॥ १४ ॥ दोनामरुआ ॥ १५ ॥ वसंती व ज़र्द चमेली ॥ १६ ॥ गुलछब्बो व गुलशब्बो ॥ १७ ॥ गुलाब ॥ १८ ॥ मोगरा ॥ १९ ॥ कदंब ॥ २० ॥ गुलेदावली ॥ २१ ॥ गुलेहज़ारा ॥ २२ ॥ पियावांसा ॥ २३ ॥ गुलेकचनार ॥ २४ ॥ इति

अन्योक्तिककवित्त ॥

३ ४ ५ १ ७ ६ ८ २ १० ९
जाहीहू जुहीरी बेला केतकी निवारी वीर चंपतौ चांदनि विष्णु-
११ १२ १५ १४ १३ १६ १९ १७ १८ २०
क्रान्त छविछाईहै । रूपमाल तीं च मेली सेवती हरीति वर तेरे इश्क-
२१ २२ २३ २५ २४ २६ २७ ३० २९
पेंचा में मयूरपंखि न्याई है ॥ भनत ललन मो तिया वसंत ही गु-
२८ ३१ ३२ ३३ ३५ ३४ ३६ ३७ ३८ ४१
लाब बौरी गुलछब्बो मारूआ ली निठुराई है । मो गरा परो कदंब
४२ ३९ ४० ४३ ४४ ४६ ४५ ४७ ४९ ४८ ५०
दावदी हजारा बार पिया वास धा ना कचनारि ना भलाई है॥इति॥

प्रसङ्ग ॥ ७७ ॥ किसी एक समय चन्द्रावलि सखी कृष्णचन्द्र भगवान्से रूठि बैठी दिनभर होगया कि महाराजकी सेवामें न पहुँची सायंकाल के समय जोकि एक मालिनी सुमन आभूषण लेकर श्रीराधिकाजी के

वास्ते आया करतीथी तिसकी मार्फत श्रीकृष्ण महाराज उसे बुलवावते भये वो नारायण की आज्ञा ग्रहणकर उसके पास जाय कर यह कहती हुई कि अरी प्यारी तू ऐसी नादानी करती है कि बिना बातके वास्ते महाराज से रूठ बैठतीहै चल तुझे महाराजने बुलायाहै परन्तु क्रोधवश उसने उसके वचन का कुछ उत्तर नहीं दिया तौ दूतीने अपने मनमें ये अनुमान किया कि मालूम परैहै कि एकतो चन्द्रचांदनी छिटक रहीहै और दूसरे गर्मी का मौसमहै अपने अपने भवन द्वारपर सबलोग बैठेहुये हँस बोल रहेहोंगे उनके देखलेनेकी लज्जा से यह नहीं चलतीहै और न कुछ उत्तर देतीहै परन्तु उस समय घंटे सवाव घंटे में अँधियारी होजानेवाली थी ऐसा विचार कर संसारी वार्ताओंको कर उतना समय गुजारती भई जब अँधेरी रात होजाने परभी कुछ उसने चलने का विचार नहीं किया तबतो वो दूती चन्द्रावलि के प्रति फिर इस प्रकार कवित्त विरचि वचन कहती भई कि॥

सखि प्रति मालिन दूतिका वचनम्॥

टीका॥ ७७॥ अरी[१] प्यारी[२] यहवार्ता[३] भी[४] (तैंने) देखी[५] (कि तेरे पास आये हुये मुझे) कितना[६] समय[७] व्यतीतहोगया[८] कि चन्द्रउजियालीभी[९] समाप्तहो[१०] अँधेरा[११] होगयाहै[१२]॥ (परंतु फिर भी तू कुछ चलने का विचार नहीं करती) और[१३] (हे) सखि[१४] सुन्दरि[१५] कृष्णमिलापिनि[१६] (तू) केवलश्याम[१७] सुन्दरहीसे[१८] (प्रीति) सेवन[१९] करनेवालीहै सो (तेरे) सनेहरूपी[२०] जालमें[२१] (उन) मोरमुकुटधारी[२२] गोपाल लाल

का (मन फँसरहाहै और इसमें जो कुछ मेरा कहना झूंठ मानती होय तौ तू खुद) इंसाफ़ करलेनेवाली है ॥ (इतना दूतीके कहने पर भी कुछ उसने उत्तर न दिया तौ फेर वो इसप्रकार कहतीभई कि हे प्रिया तेरी प्रीति के बारे में तो जब कभी मुझसे महाराजसे बातचीत होती है तब वोतो तेरी बड़ी प्रशंसा किया करतेहैं और) नन्दललन (यह) कहाकरतेहैं (कि वो) मेरी प्रिया स्त्रियों में शिरोमणि (मेरे) हृदयमें बसीरहतीहै (सो अरी) नासमुझ रूपवती (तैंने) भली कठोरता धारण कररक्खीहै ॥ (देख तेरी खुशामद करते करते) मेरा गला पड़गया (और) हजारों वक़् (तेरे) पैर छुये (परन्तु तू न मानी अब भी सोच समझले) प्रीतम के निवासको चलु (औरजो) नहींचलैगी (तौ हे) नादान इस्त्री (इसमें) अच्छाई नहीं होयगी ॥ इति ॥

विप्रलब्धा नायका ॥

चिरीमारिनिदूतिका ॥

पक्षीविलास अथखगानुमान संख्या ॥ २४ ॥

लवा ॥ १ ॥ लाल ॥ २ ॥ तूती ॥ ३ ॥ फाक्ता ॥ ४ ॥ कैंवर ॥ ५ ॥ बटेर ॥ ६ ॥ बाज ॥ ७ झांक ॥ ८ कोकिला ॥ ९ ॥ चंडूल ॥ १० ॥ अगिन ॥ ११ ॥ बहिरी ॥ १२ ॥ समन ॥ १३ ॥ तीतुर ॥ १४ ॥ छौंना ॥ १५ ॥ मैंना ॥ १६ ॥ ममांख ॥ १७ ॥ तोता व सुवा ॥ १८ ॥ बया १९ ॥ काकातुआ ॥ २० ॥ मराली व हंसनी ॥ २१ ॥ मोर ॥ २२ ॥ भुजैला ॥ २३ ॥ तिलोरी ॥ २४ ॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ ७८ ॥

लवालाई लालकाहिं तू ती भईफाकतासो कैंवर बटेर बाजआईहूं न पाई भौन। झांके को किला गई चँडूल अग्न रीति जाहि

बहिरीगई समन ती तुरी मिताई छौन॥ मैंनाहीं ममांख समुहायगी ललनके न तो ते बया नेह का हरीसों रिपुताई बौन। काकातू मराली मोर सुयशु भुजैली घोर अपनो ति लोरी हित विरचै बुराई कौन ॥ इति ॥

प्रसङ्ग ॥ ७८ ॥ एक चिरीमारिनि दूतिका जोकि श्रीकृष्ण महाराज के दरबारमें नित्यप्रति हाजिरी दिया करतीथी उससे किसी एक सुन्दरी से स्नेह उत्पत्ति होनेसे रोज सत्संग होने लगा तौ दूती प्रतिदिन सखि प्रति श्यामसुयश वर्णन कर हरि अनुरागमें उसका मन रमण कराय देती भई तौ एक समय उस सखीने दूतीसे कहा कि ऐसीभी कभी कृपाकर कि मेरे यहां भी महाराज को बुलाय लाउ ऐसेही जब कभी वो हरि चरित्र सुनाया करै तब तब वो महाराजके मिलनेकी अभिलाषा जताया करै एक दिन कहीं दूतीने करारकर लिया कि आज मैं जाय महाराज को बुलाय तुझसे मिलायेदेतीहूं ऐसे कहकर वो तो महाराज के घरकोगई वहां बैठे२ उसे दो पहरव्यतीत होगये कि महाराजको एकान्तमें न पाउने से प्रार्थना करनेका अवकाश न मिला और उस सखीने हरि आगमनकी खुशीके मारे अपना घर चोवा चन्दनसे लिपाय सुन्दर सेज सजाय सोरहु शृंगार बत्तीसौ आभूषण सजकर बैठे बैठे हरिदर्शनाभिलाषामें दुइपहर बिताय देती भई महाराज के न आवने पर उस सखी के

मनमें यह निश्चय होता भया कि वो दूती मेरी मुँहदेखी कहिकर चलीगई जो महाराज को बोलाय लावना होता तौ अब तक दश दफा आय जाती मैंने नाहकके वास्ते इतना परिश्रम किया अब इस शृंगाररस का भोगने वाला कौनहै फिर मनै मन में सोचकर कहने लगी खैर न होय चलौ अपनी दूसरी सहेलीही से मिलिआऊं जो शृंगार करना तो सुफल होय घरमें ताला लगाय चलदेती भई अब जब उस दूतीने महाराज का एकाग्र चित्त देख अवकाश पाया तब उस सखी की प्रीतिरूपी बिकलता का हाल कहि सुनाया भगवान् तो भक्तवत्सल हैं अपने वियोग में व्याकुल जान दूती को संग लेकर उस सखीके घरपर जोई आये तौ क्या देखते हैं कि उसके घरमें ताला पड़ा है सखी का कुछ पता निशान न पायकर दूती प्रति रिसाय अपने घरको लौट चलते भये दूतीने कई एक दफे तीर पड़ोस में पुकाराभी उसे न पाउने से महाराज के पहुँचावने को गोकुलपुरी में आय श्रीहरि को पहुँचाय अपने घरको चलने लगी तो मार्ग में सोची कि ये सखी तो बड़ी ओछी है इस से प्रीति करना अच्छा नहीं अगर वो अपने मकान पर आगई हो तौ उसकी प्रीति को नमस्कार करदेना चाहिये कि इतने में सायंकाल होजाने पर वो सखी अपनी सहेली के यहां से अपने घर आवती भई दूती उसका खुला दरवाजा देख उस के घर जाय उसकी नादानी बताय समस्त व्यवस्था सुनाय

यों कहती भई कि तैंने जो मुझसे कहाथा कि कृष्ण महाराज को मेरे पास बुलाय लाइये सो मैंतो ॥

सखि प्रति चिरीमारिनि दूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ७८ ॥ लालजीमहाराज को बुलायलाई (और) तैं सखि कहीं अनत चलीगई मैं कितनीबार बड़ेजोर से पुकारकर थकगई (तुझे) मकानपर नहीं पाया(तब मैंश्रीगोपाललालको लौटार लेगई)॥अरी चांडालिनी तू किसकेघर मिलनेको चली गई थी आगीपरै इस बर्तावपर(बस अब तू श्यामके व मेरे)मनसे उतरगई सखी (तूने) नंदलालसे प्रीति तोरलई (तबमानी)॥ (ऐसा दूतीका वचनसुन सखि शंकित है विनयवत् समस्त हाल वर्णनकर यों कहतीभई कि) मैंने नहींजाना (कि तू इतनी देरकरके महाराजको बुलाय लावैगी तो मैं कहीं ना जाती खैर अब मेरा अपराध क्षमाकर अब तू कल महाराजको बुलाय लइये इतना सुन दूती बोलती भई कि मैं अब न बुलाय लावोंगी क्योंकि एकदफे तो मैं महाराजसे झूंठी पर चुकीहूं और अब) मेरी आंख नन्दलालके नहीं सामने होसकीहै तेरे संग(मैंने)प्रीति क्या करी (चपरे) कृष्णै महाराजसे दुश्मनाई भईजातीथी ॥ (और जो मैं तेरे साथ फेर ऐसा करूं तौ) हे मेरी गोरी क्याक्या तू (मुझे) बहुतसा इनाम बकसीस दैदेयगी -(हे) सखि (ऐसी)प्रीति तो अपनी घरमें उठाय रक्खो (मैं दरगुजरी तुम्हारे पीछे नारायण से) विरोध बिगार कौन पैदाकरै ॥ इति ॥

विरह निवेदन भाव ॥

प्रोषितपतिकानायका ॥

पंसारिनि दूतिका ज़िला किराने का ॥

अथमसालानुमानसंख्या ॥ ३१ ॥

नून (व) निमकपांचो ॥ ५ ॥ राई ॥ ६ ॥ स्याह मिरच ॥ ७ ॥

सुर्ख मिरच ॥ ८ ॥ सफेद जीरा ॥ ९ ॥ कालाजीरा ॥ १० ॥ आ-जमोद व अजमोद ॥ ११ छोटी हड़ ॥ १२ ॥ बड़ी हड़ ॥ १३ ॥ काकरासिंही ॥ १४ ॥ सोंठ घारकी ॥१५॥ सोंठ बैतरा ॥१६॥रस-वत (व)रसौत ॥ १७ ॥ छोटी पीपल ॥ १८ ॥ बड़ी पीपल ॥१९॥ कस्तूरी ॥ २० ॥ बालछड़ ॥ २१ ॥ मुलहट्टी (व) मुरैठी ॥ २२ ॥ तून ॥ २३ ॥ तज ॥ २४ ॥ कत्था ॥ २५ ॥ सुपियारी (व) सुपारी ॥ २६ ॥ हालों ॥ २७ ॥ किसमिस ॥ २८ ॥ धनियां ॥ २९ ॥ जाफ़ल (व) जायफल ॥ ३० ॥ करपूर (व) कपूर ॥ ३१ ॥

अन्योक्तिककावित्त ॥ ७९ ॥

१२ ११ ४ ३ ६ ५ १ २ ९ ८
वारुंनोंनराईमिर्चजीरा तो उदास किमि सखिआज मोदमोर
७ १० १४ १६ १३ १५ १७
हरिसौं हिरायगो । का करा सिंहिककुल सोंठिहुयबैठरहि रसवत्
१८ २१ २० १९ २२ २६ २५ २४ २३ २७ २९ ३० २८
कहु जी पी पर वसआयगो ॥ ललन कस् तू री बाल मुलहट्टी तू
३१ ३२ ३४ ३३ ३६ ३५ ३७ ३८
न तज कत्थो सुपियारी हाल किस्मिस् छिपायगो । धनियां
४१ ४० ३९ ४२ ४३ ४५ ४४ ४६ ४७ ४८ ४९
ह्वौ न मोहिं जा फल चहैंगी तैं सो करपूरद्वंगी शोच सगरो
५०
नशायगो ॥ इति ॥

बिरहिनी प्रति पंसारिनि दूतिका वचनम् ॥

प्रसङ्ग ७९ ॥ एक पंसारिन दूतिका और किसी एक परमसुंदरी से परस्पर परममित्रता थी रोज सत्संग रहा करताथा एकदिन पंसारिन दूतिका उसके घर आनि उसका मन उदास देखकर अपने मनमें शंका करती भई कि मालूम होताहै मेरी सुकुमारि सहेलीको

किसीकी नज़र होगई है उसकी नज़र उतारने के वास्ते इरादा कर यूं पूंछती भई कि ॥

सखिप्रति पंसारिन दूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ७६ ॥ (हे) प्यारी इससमय तेरा मन क्यों मलीनहै नारायण की कसम (तुझे उदास देखकर) मेरे(भीमनका) सुख जाता रहा (तुझे किसी की नज़र तो नहीं होगईहै) नोंनराईमिर्च उतारदूं (बताउतो)॥ मर्दानेकुलकी (जाई यह) कौनचरित्र रचकर चुपचाप खामोश हुई बैठी है ख़ुशीसे (मुझे) जतायदे (तेरा किसी) पराये पिया से तो मन नहीं फँसगयाहै॥अरी तैं कैसी नादान स्त्री है जो तैं अपनी जिदको नहीं दूरकरती (हे) लाड़िली (मुझसे) कहिदे (ये) भेद कौनवहानेसे छिपसकैगा॥ सखि मुझसे मन छिपाउ जिस बातकी तू चाहना करती होयगी उसे (मैं)पूराकर देउँगी (और ये तेरा) दुःख सब दूरहोजायगा॥ इति ॥

प्रौढ़ा परकिया नायका ॥

मालिनिदूतिकाजिलावृक्षों का ॥

अथ विटपानुमान संख्या ॥ २१ ॥

आम ॥ १ ॥ इमली ॥ २ ॥ आमिला ॥ ३ ॥ शरीफा ॥ ४ ॥ सरस (व) सिरस (व) सिरसा ॥ ५ ॥ बड़ (व) बरगद ॥ ६ ॥ पाकर (व) पकरिया ॥ ७ ॥ सरों ॥ ८ ॥ सफरी (व) अमरूद ॥ ९ ॥ बेरझरबेरी (व) बेल ॥ १० ॥ जामुन ॥ ११ ॥ अनार ॥ १२ ॥ अनेक प्रकारिक नीबू यथा बिहारी ॥ १३ ॥ कठा ॥ १४ ॥ कशमीरी ॥ १५ ॥ कागदी ॥ १६ ॥ खट्टा ॥ १७ ॥ गलगल ॥

१८ ॥ बिजौरा ॥ १९ ॥ इत्यादि तोर (व) तिनस ॥ २० ॥ सैजन (व) सैंजना ॥ २१ ॥ इति ॥

अन्योक्तिक ॥ कवित्त ॥ ८० ॥

जानैंनाहिं आमजन इमि लीलानूप रचु तोर आमिलेते मन मोर दून ह्वैगयो । चाल जो शरीफी सुख सरसै सजनि बड़ पाकरके तोहि जी अँदेश न्यून ह्वैगयो ॥ सरो अवकाज गम साफरी बँधायनाथी बेरबेर कहूंथी ये का जिमून ह्वैगयो । गो आनारिको मिलैगो नन्दको ललन किमु हौलदिल मुहि विहारी विदून ह्वै गयो ॥ इति ॥

(मालिनि दूतिका प्रति सखि वचनम्)

प्रसंग ॥८०॥ एक सखी नारायण की परमदर्शनाभिलाषिन उस मालिनदूती से जो कि श्रीकृष्णजी से मिलनेके वास्ते प्रतिदिन कहा करती थी उससे यह कहतीभई कि ॥

टीका ॥ ८० ॥ (अरी बीर कोई) ऐसा सुन्दरउपाय करु (कि जिसमें) कोई आदमी जाननपावै तेरे आनमिलनेसे मेरे जीको हिम्मत बँधगई ॥ (क्योंकि) हे सखि भलमंसीही के चलन में अत्यंत आनन्द उपजैहै तुझे मिलकरके (मेरे) मनका खटका जातारहा यानी थोड़ा होगया ॥ (बस मैंने जानलिया कि मेरा) अबकाम सिद्धहोजायगा मेरेतो कुछ बनाये नहीं बनता था वारंवार कहा करती थी (कि) यह क्या खराबी पैदा होगई है ॥ (काहेसे कि) मुझसरीखी कुबु-

३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२
ड्ढिनीको नंदलाल काहेको मिलैंगे मेरे तो मनमें गोपाललाल विना हौला समाय
४३
गयाथा (यानी मैं उनके बगैर सिड़नसी होरहीथी) ॥इति॥

प्रोषितपतिका नायका ॥

पनसारिन दूतिका प्रसंग किराने का ॥

अथ किरानानुमान संख्या ॥ २९ ॥

जावित्री ॥ १ ॥ कामराज ॥ २ ॥ सज्जी ॥ ३ ॥ सनाय ॥ ४ ॥ अगर ॥ ५ ॥ तगर ॥ ६ ॥ त्रिफला याने हड़ बड़ी ॥ ७ ॥ बहेरा ॥ ८ ॥ आमला ॥ ९ हड़छोटी ॥ १० ॥ सरफोंका ॥ ११ ॥ लोहवान (व) लोबान ॥ १२ ॥ तेजपात ॥ १३ ॥ मैंनसिल ॥ १४ ॥ करपूर (व) कपूर ॥ १५ ॥ छोटेबड़े गोखुरू ॥ १६ ॥ सोंफ ॥ १७ ॥ नोंनपांचौ यथा सेंधा ॥ १८ ॥ काला ॥ १९ ॥ साम्हर ॥ २० ॥ छोटा (व) खारी ॥ २१ ॥ विड़नोंना ॥ २२ ॥ जीरास्याह ॥ २३ ॥ जीरा सफेद ॥ २४ ॥ जरिश्क ॥ २५ ॥ आजमाइन (व) अजमाइन ॥ २६ ॥ मैंनफल ॥ २७ ॥ अजमोद ॥ २८ ॥ तोतिया (व) तूतिया ॥ २९ ॥ इति ॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८१ ॥

११ १० ९ २ ४ ३ १ ५ ७ ६
जावि त्री री कामराज सज्जी है सेना अगर त्रिफलादि सर फोंका
८ १४ १५ १६ १७ १२ १३ १८ २१
दार लैहद्दाय कै। लोहबानते तगर तेजपाते मैनाशिल उर करपूर
१९ २० २२ २७ २८ २५ २६ २३
देंगे गोखरू से जाय कै ॥ सोंफियानी नून भई जीरा जरि इश्क
२४ ३४ ३० २९ ३१ ३२ ३३ ३६ ३८ ३९ ३७ ३५
माहिं आजमाइन री हाय मैनफल तायकै। आजमोद हो तोतिया
४२ ४० ४१ ४३ ४४ ४७ ४६ ४५
पास जो ललनपियाकारो निमकैहराम करतोका आयकै ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ८५ ॥ एक बिरहिनी जोकि अपने पतिके वियोगमें अत्यन्त खेदित यौवन उमंगसे भर रहीथी तिसको कामोद्दीपन करनेवाली जो वर्षाऋतु वृन्द बलाहककोंसे पूरित उस समय उस रूपवती नवयौवना को देख कर उसकी मित्र मालिन दूती ने अपने मनमें यह विचार किया कि कहीं इस सुकुमारि पर किसी रसिक जनकी दृष्टि न पड़जाय तो फिर ये हाथ से बेहाथ हो जायगी इसी कारण उसकी सहायक बनकर उससे ये कहिती भई प्यारी देखु इस समय जो घनघुमंडनि सुखमंडनि छवि नभमंडल छाई है और इसी दल बादल के साथ ॥

सखिप्रति पंसारिन दूतिकावचनम् ॥

टीका ॥ ८१॥ [१]जो [२]कामदेवने (अपनी) [३]सैना (ऐसी) [४]सजाई है (कि) [५]तीन २ फलके (पैनी) [६]धारवाले [७]बाण [८]ग्रहण कियेहै [९]अरी [१०]अबला (तू इस वक्त यहांसे) [११]चलीजा ॥ [१२]मदनके [१३]बाण [१४]लोहे के [१५]बाणों से भी [१६]अत्यंत [१७]पैने हैं (वो तेरे) [१८]हृदयको [१९]गऊके खुरों के [२०]समान (दागों से चिह्नित कर) [२१]पूर्ण बिदीर्ण करदेयँगे ॥ (ऐसा सुनकर वो) [२२]नाजुक बदनी (जिसका कि) [२३]चाहरूपी (विथा) [२४]में [२५]जी [२६]जलाहुआ (दुखितहुई अपने मनै मनमें) [२७]छोटी व थोरी [२८]होजाती भई [२९]ठंढी श्वासें भरकर (कहिती भई कि) [३०]अरीवीर [३१]मन्मथने (अपने) [३२]बाणोंको [३३]पैनाय कर (मुझ जली हुई को आनकर फेर) [३४]जलाया (तथा आजमाया क्या करूं अफसोस है)॥ [३५]प्यारी [३६]इस समयतो [३७]तब [३८]सुख [३९]प्राप्तहोता [४०]जो कहीं (मेरा) [४१]प्यारापिया (मेरे) [४२]तीं-

४३ ४५ ४६
रहोता (तौफिर यह) कालेमुहका दगाबाज (मनोज) यहां आनकर (मेरा)
४६ ४७
क्या बनायलेता ॥ इति ॥

॥ शीक्षाभाव ॥

॥ मध्या धीरानायका ॥

॥ कबड़िनि दूतिका प्रसंग सागतरकारीका ॥

अथसागानुमानसंख्या ॥ २५ ॥

बैंगन ॥ १ ॥ तोर (व) तोरई ॥ २ ॥ आंवला (व) औंरा ॥ ३ ॥ आसकी फलियां ॥ ४ ॥ सलगम ॥ ५ ॥ भिंड ॥ ६ ॥ भिंडी ॥ ७ ॥ बंधागोभी ॥ ८ ॥ आलू ॥ ९ ॥ परबर ॥ १० ॥ करेला (व) करेल ॥ ११ ॥ अरवी (व) घुइँयां ॥ १२ ॥ सागपालक ॥ १३ ॥ कचनारकीकली ॥ १४ ॥ लौकी ॥ १५ ॥ वाहु वाहु की छियां ॥ १६ ॥ करमकल्ला ॥ १७ ॥ सोयाका साग ॥ १८ ॥ लहसुन ॥ १९ ॥ पियाज ॥ २० ॥ मूलकंद यथा सकरकंद ॥ २१ ॥ जिमीकंद ॥ २२ ॥ खंत ॥ २३ ॥ मोरी (व) मूली ॥ २४ ॥ सागचूका ॥ २५ ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ८२ ॥

२ ७ ६ ३ ४ ६ १३ ११ ८ १२
वै गन रहेहैं दिन तोर आमिले की आस सलगम हीय भिन्ड
१० ९ १ १४ १६ १६ १८ १९ १७ २३ २० २१ २२
बन्ध गये आलरी । पर वर लेखु ही करेल उनको री तैं तो अरबी
२४ ५५ २६ २८ २७ ३० ३४ ३२ २९
मिली पै वो पालक कचनालरी ॥ लौकी कहु वाहुवाहु ललन
३१ ३३ ३६ ३६ ३७ ३८ ४१ ४२ ४० ३९
लागी सराहु कर्म्म कला सोया नीक लहि सुनी वालरी । अबतो
४४ ४३ ४५ ४७ ४८ ४६ ४९ ५० ५१ ५३ ५४
पि आज मिलु मूलि वात मोरी सुनु चूका जो समय न हाथआवै
५२
तिहुँकालरी ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ८२ ॥ एक समय ललिता सखी श्रीकृष्ण महराज से मानकर बैठती भई उसको मनावने के वास्ते कबड़िन दूती आन कर यह कहती भई कि ॥

॥ सखि प्रति कबड़िन दूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ८२ ॥ अरी प्यारी गोपाललाल जी महाराज तेरे आनमिलने की आशाके दिवस शुमार कर रहेहैं (और ये हाल हो रहाहै कि जिनके) हृदयमें बाल बांधें दुखोंके दृन्द बिधगये हैं ॥ परंतु देखु (इतनी खैरियत व) कुशल (है कि) कृष्ण महाराजका हृदय कड़ाहै तू ऐसी अजूबा स्त्री (उनके) पालेपड़ी है तिसपरभी वह (तुझसरीखी) नादानसे निबाह करने वाले हैं॥ (मैंतेरी कुछ भी बड़ाई नहीं करतीहों वो जो तुझसे) नन्दलाल की लगन लगगई है (उसकी) भलाई वा बड़ाई करु (और तेरी) करनी का फल वह अच्छाहै (याने तू नशीब वरहै) अरी भिया (तैंने मेरी वात) देखी सुनी ॥ (खैर जो कुछ भया सो भया) अबतो (तू) इस समय पिया से (चलकरके) भेंटकरु मेरे मुख्य वचनपर ध्यानदे (क्योंकि) गया वक्त (फिर) तीनोंकाल नहीं मिलसक्ताहै॥इति॥

॥ विश्रब्ध नवोढ़ा नायका ॥

॥ काछिन दूतिका ॥

॥ प्रसंग ऋतुफलानि ॥

॥ अथ फल अनुमान संख्या ॥ २० ॥

मकुईयां ॥ १ ॥ फ़ालसे ॥ २ ॥ सरफारेवड़ी ॥ ३ ॥ खिरनी (व) खिन्नी ॥ ४ ॥ करौंदरा (व) करौंदा ॥ ५ ॥ अंगूर ॥ ६ ॥ पेंवदी (व) बेर झरबेरी ॥ ७ ॥ जामुन (व) जमुनी ॥ ८ ॥ नींबू ॥ ९ ॥ अम्बु (व)

आम ॥ १० ॥ अमरूद ॥ ११ ॥ मीठा (व) मिट्ठा ॥ १२ ॥ बिही ॥ १३ ॥ सेव ॥ १४ ॥ नास्पाती ॥ १५ ॥ नारंगी (व) नरंगी ॥ १६ ॥ अनार ॥ १७ ॥ बेल ॥ १८ ॥ खरबूजा ॥ १९ ॥ चकोतरा ॥ २० ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८३ ॥

नाहीं तो मकैयां फालसे न सफरीरेउड़ी न खिरनी करौंदा ना अँगूर गदराने हैं । बेरपैंवदीहू नाहिं जामुनी न नींबू नाहिं अम्बु अमरूद नाहिं मीठा मनमाने हैं। बिही सेव नासपाति निपट नरंगी नाहिं नोखी ना अनार है न बेल गुठलाने हैं। खर्बुजा सूजाने हैं चकोतरा न ध्याने अलि ललन पनै में स्यान रतिक हढ़ाने हैं ॥ इति ॥

नवोढ़ाप्रतिकाछिनिदूतिकावचनम् ॥

प्रसंगार्थ ८३ ॥ कोई एक लघु अवस्था वाली सखी जोकि रतिभाविक चिह्नों से रहित उसकी अत्यन्त चालांकीकी चतुरई देखकर एक काछिनि दूतिका जोके निम्नलिखित इसकवित्तमें फलोंके नामहैं तिनकी अंतसे आदि के फलकी समता देकर उससे इस प्रकार प्रश्ण करती भई ॥ कि हे सखि इन समताओं मेंसे एक चिह्न भी तेरे शरीर पर भाषित नहीं होते हैं परंतु तुझे लड़कपनमेंही रति संबंधी चतुरई याद होगई है सो तुझे कौन चतुरके सतसंगसे ये गुण प्राप्त हुआहै ॥ इति ॥

॥ अज्ञात यौवना नायका ॥

॥ मुगलानी दूतिका प्रसंग मेवाका ॥

॥ अथ मेवानुमान संख्या ॥ १३ ॥

अकरोट ॥ १ ॥ किसमिश ॥ २ ॥ मूंकफली (व) मूंगफली॥

३ ॥ पिस्ता ॥ ४ ॥ बादाम ॥ ५ ॥ छुँआरा ॥ ६ ॥ चिलगोजा ॥ ७ ॥ मीठा (व) दार्मी अनार ॥ ८ ॥ अंजीर ॥ ९ ॥ गरी (व) गोला ॥ १० ॥ आबजोश ॥ ११ ॥ अंगूर ॥ १२ ॥ लीची ॥ १३ ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८४ ॥

अकरोटै किसमिसि इद मूक फली वाल पिस्ताँ ठां बदाम भइँ छूआरा सी शालेरी। चिलगोजौं है अनारि मायके जननि तातु होंय अनजीरा रहें फेरनासम्हाले री ॥ गोरी गरियात हाय पीर तो सहीनजाय आब जोश हानी कहा फोड़ा अंगुराले री। ललनि निकाम मोरि लीचीभई बात गोरि के कछु यतन वीर वैद्य धौं दिखाले री ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ८४ किसी एक केलिरस भाव भेदके न जानने वाली सुन्दरी को अपने उरोज आदरसहो आउने पर इस्तन इस्थलके खेदकी व्यथासे पीड़ितहो एक अपनी परम सनेहिन मुगलानी दूतिकाके पास आनकर एकांतमें उससे ये पूंछती भई कि ॥

मुगलानीदूतिकाप्रतिसखिवचनम् ॥

टीका ॥ ८८ ॥ हे सखि (कुछ मुझे समझ नहीं पड़ताहै कि मेरा) उरस्थल कौन कारण से दुखताहै (मैं) मौन गहे (बैठी सकाय सी गईहूं मेरी) छातियोंकी जगह (बदअर्थ सूजना खराबी आम अर्थ सब बिलकुल बद अग्रे आम तिस्का हुआ बदाम अर्थ) सबसूज गईहैं छुइजाने पर (हृदय पर) आरा सा चल

जाय है आरा एक लोहे का शस्त्र है जिस्से काष्ठादिक चीरा जाता है॥ अरी[१७]-वीर (जो मैं) नादान[१८] बनकर[१९] रुदन करूं[२०] (तो मैं) नैहर[२१] (में अपने बाबुल की परम लाड़िली हूं जो कहीं मेरी व्यथा को जान पावैं तौ मेरे) माता[२२] पिता[२३] घब[२४]-राय जावें[२५] फिर किसी के समझाये नहीं समझैं ॥ अरी[२६] सखि[२७] (मैं) ठंढी श्वासैं[२८] भरा करती हूं दईरेदई[२९] (अब मुझसे) दुःख[३०] नहींसहनकियाजाता है[३१] (मेरी मुख की) शोभा[३२] (तनुकी) उमंग[३३] घटगई[३४] है क्या जानें[३५] (मेरे दो) फुड़ियां[३६] निकल[३७] आई हैं ॥ अरी[३८] प्यारी[३९] सखी[४०] वृथाकेवास्ते[४१] मेरी बदनामी[४२] हुई जाती है[४३] (तू) सखि[४४] कोई[४५] उपाय[४६] बताउ[४७] या[४८] (कोई) हकीम[४९] को दिखवाय दे[५०] ॥ (कि जिस में मेरा दुख दूरि होजाय) इति ॥

॥ शंकाभाव ॥ परकिया नायका ॥

॥ रंगरेजिन दूतिका प्रसंग रंगोंका ॥

॥ अथ रंगानुमान संख्या ॥ १८ ॥

सेवती ॥ १ ॥ गुलाबी ॥ २ ॥ और गुलाबी शब्दमें से गुल अलग करदेने से निकला आवी ॥ ३ ॥ अरुण यानी गहिरागुलाबी ४ ॥ शर्वती ॥ ५ ॥ बांसी ॥ ६ ॥ सेत (व) सफेद ॥ ७ ॥ लाल (व) सुर्ख ॥ ८ ॥ सुन्हैला ॥ ९ ॥ अबीरी ॥ १० ॥ स्याम (व) काला ॥ ११ ॥ पियरो (व) पीला ॥ १२ ॥ पड़ोरी (व) पिंडोली १३ ॥ गेहुंआं ॥ १४ ॥ किशमिसी ॥ १५ ॥ सोसनी ॥ १६ ॥ कसीसी ॥ १७ ॥ सुलेमानी ॥ १८ ॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८५ ॥

सेवती[१६] गुलाबी[६] हरी[७] अम्बुज[१३] अरुण[२२] पाद[१४] शर्वती[८] वचनवारि[९]

बंशुरी बजैयाको ॥ सेतमेत लाल सुन हेरी ए आ वीरि बर मदन जगावै श्याम बर्जे यदुरैयाको ॥ पियरो पड़ोरी गात गेंहुआं हो रंग मोर किस्मिसी मिलौंगी नंदललनै कन्हैयाको ॥ दुखसों सनीक शीश आफत चढ़ी है मोर सांचु सुले मानी मोहिं डरहै घरैयाको ॥ इति ॥

॥ रंगरेजिनि दूतिका प्रति सखिवचनम् ॥

टीका ॥८५॥ येरी सुन्दर सखी आउ (मेरी विथाको) समुझकर देख(मेरा जो)गुल अग्रे आबी इन दो शब्दों का एक शब्द बना ॥ गुलाबी ॥ गुल×अर्थ फूल यहां फूल की कोमलता लीगई और गुल शब्द को उरदू में माशूक तथा यार के वास्ते बांधते हैं तौ गुल शब्द का अर्थ हुआ फूल से कोमल शरीरवाला मित्र और आबी + अर्थ श्यामवर्ण क्योंकि आबी रंगभी कुछ श्यामताई लियेहुये होताहै तौ अब दो शब्दों से बनाहुआ जो एक शब्द गुलाबी तिसका अर्थ हुआ श्यामवर्ण वाले मित्र श्रीकृष्ण शर्बत सरीखे मीठे शब्दोंवाली वंशी के बजानेवाले (तिनके मैं) लाल कमल सरीखे चरणों को सेवन किया करती हूं (सो उन के वियोग में) मेरा (जो) गेंहूंकी रंगत सरीखा शरीर था (वो) पीला पड़गया है (अब उस पर बांसुरी बजाय सुनाय कर) मनमोहन वृथा के वास्ते (मेरे तन में) काम उद्दीपन किया करै है (इस से हे प्यारी तू) गोपाल लाल यदुवंशमणि को मना करदे (कि यहां पर मुरली ना बजाया करैं वैसेही मेरे तो) शिर पर खेद से भरी हुई विथा सवार है मेरा (वचन) सत्य ही जानना (क्योंकि अपने) घरवालों

का मुझे (ऐसा खौफ) तथा भय है (कि) कौन बहाने से नन्दनन्दन श्रीकृष्ण महाराज से भेटूंगी (तू कोई ऐसी यतन कर कि जिस में मुझे श्याम सुन्दर मदनलाल का दर्शन होजाय ॥ इति ॥

॥ उद्दीपन बिभाव ॥

॥ अनुसयना नायका ॥

॥कसेरिन दूतिका प्रसंग बरतनों का ॥

॥ अथ पात्रानुमान संख्या ॥ १४ ॥

कलछी ॥ १ ॥ लोटा ॥ २ ॥ चिमटा ॥ ३ ॥ बटुआ ॥ ४ ॥ घंटा ॥ ५ ॥ घड़ियाल ॥ ६ ॥ कड़ाही ॥ ७ ॥ पतीली ॥ ८ ॥ कटोरी (व) कटोरा ॥ ९ ॥ पान्दान ॥ १० ॥ शमेदान ॥ ११ ॥ परात ॥ १२ ॥ थाली ॥ १३ ॥ आचमनी ॥ १४ ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८६ ॥

कल छीकही मिलन आजै मन लोटा काह चिमटायआई
हरि बटुवा प्रसाद री ॥ घंटाघरियाल करे शुभ ना कड़ाही कर
पतीलीकरत बात नेकही प्रमाद री ॥ काटोरीकपट जिन पानदान
पायो तिन समै दान मोद हेत देत लेत शाद री ॥ आजकी पै-
रात घनि थाली सुख आचमनि नंदकोललन मेलो मेटिकै बि-
खाद री ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ८६ ॥ कोई एक कशेरिन दूतिका एक परम सुंदरीकी शोभाको देख मोहितहो यह विचार करती भई कि इस सुशीलाका महराजसे दरश परश होयतो

वो बड़ाही मोद मानें इससे प्रीति प्रचार अमृत रूपी हरि चरित्रों का रस चखाय उसका मन अपने हाथ में लेकर सोचती भई कि अब इससे प्रभु समीप चलनेके वास्ते कहना चाहिये उधर और पड़ोस वाली स्त्रियोंने उस प्रपंचिन से सुकुमारी का अत्यन्त सतसंग देखकर उसके भवनमें जाय कर उससे कहती भईं॥ कि हे प्रिया तू इस प्रपंचिन के फंदों न पड़जैयो यहतो तेरा बखानी कलंककी निशानीहै खबरदार हमसब तुम्हे चिताय देती हैं उनका वचन सुन उस सुकुमारी का मिलना प्रेम प्रीति उस परधा सब जाता रहा अब उसकी संगति त्याग करनेमें चिन्तित होती भई दैवयोगसे उस दूती ने दूसरेही दिन कहीं सुकुमारिकासे कहिदिया कि चल सखी आज तुम्हे श्रीकृष्ण महराजकी भेंट कराय लाऊं तौ उस सुकुमारीने वही अवसर उचित जानकर उस को फटकारा बतलाया कि खबरदार अब ऐसा मुंह से वचन मत निकालना मैंक्या किसी परपुरुषसे मिलनेवालियों मेंहूं मेरे यहां अब कभी न आउना वह अपना सा मुख लेकर महान शोकोंमें भरकर उठि चलती भई रात्रि भर उसे इस सोचमें कि प्रात समय कृष्ण महराज के पास चलकर उसके प्रसन्न होनेका कोई उपाय पूंछूंगी ऐसेही सारी रात बीत जाती भई इधर इस हरि दरशनाभिलाषी सुकुमारिकाने विचारा कि यह मौका महराजसे मिलनेका बड़ाही अच्छाहै क्योंकि आज तो मैंने उसे ललकारही दियाहै अगर भली मानस होगी

तबतो मेरे घरही न आवैगी और जो आवैगी भी तौ अब जल्दी उसका कोई बात कहनेका मुझसे मुंह न पड़ैगा अतएव सुघर शृंगार साज सायंकालही को श्याम सुन्दरके सदनमें पहुंचती भई तौ कृष्णचन्द्र महराज उसदूतीके मुखसे प्रशंसा सुनीहुई सखीको जान आदर देतभये रैनिभर युगुलावास में निवास कर प्रातःकाल तारौंकी छांह छांहित समयमें लोकलाजके डरके मारे वह सुकुमारिका महराज से घरजानेकी आज्ञा मांगती भई कि हेभगवन जैसे कि मैं अपने घरसे छिपकर आई हूं वैसेही मुझे अँधेरेहि अँधेरे घर पहुंच जाना चाहिये तौ महराजकी आज्ञानुसार मंदिरको सिधारती भई उधर दैव योगसे वह दूतीभी निज भवन से चली हरि समीप जातीथी मारगमें दोनोंका भेंटा होताभया दूती उसकी चतुराई व स्यानपन को देख चकितहो अँगुरी दसन दबाय उसके सन्मुख आय यों कहती भई कि ॥

॥ सखिप्रति कलेरिणि दूतिका बचनम् ॥

टीका ॥ ८३ ॥ [1]अरीप्यारी [2]कल्ह (तुझने श्रीकृष्ण महाराज से) [3]मिलाने के वास्ते [4]मिलानधारणकीरही (और मेरे) [5]चलेआउनेहीपर [6]क्या (तेरा) [7]जी [8]लोटपोट होगया [9]कृष्णमहाराजको [10]मिलआई (आज तो कुछ) [11]मिठाई [12]बटवावनी चाहिये ॥ [13]हे सखि (तू बड़ी बुद्धिवान् है देखु जौन) [14]थोड़ेही [15]घमण्ड में [16]हृदय को [17]पुष्ट [18]करके (अपनी फजिहत कराय लेते और) [19]मुनादी [20]फिरवाय देते हैं (सो) [21]अच्छा [22]नहीं [23]करने (उन की) [24]पद्धति [25]घटजाती है ॥ हे सखि (और जौन तुझ सरीखी चतुर

हैं) जिन्हकामन साफ है उन्हींको (तुम शरीखा) सनमान मिलता है (क्योंकि जो कोई किसी को) आनन्दरूपी रसको देताहै पुण्यके समतुल्यहै (उस को प्राप्त करते ही मन) मोद को ग्रहण करता है ॥ (बस मैं तुझ से और ज्यादा क्या कहूं यही वारंवार कहती हूं) अरीवीर परन्तु आज के दिन की रात्रि परम सुखदाई रही (कि तैंने अपने मन की) दुबिधा दूरकर नारायण से मिलकर आनन्द की थाह ली (और अमित सुख) ग्रहण किया ॥ ऐसेवचनों को सुनाय दूती उस सखी से अपना मेल कर लेती भई ॥ इति॥

॥ उपदेश ॥

॥ युक्ता उत्कंठा नायका ॥

किसानिन दूतिका प्रसंग तंडुलजातियों का ॥

॥ अथ तंडुलजातिकानुमान संख्या ॥ ८ ॥

चाउर (व) चावल ॥ यथा ॥ अंजना ॥ १ ॥ स्यामजीरा॥२॥ गोरिया ॥ ३ ॥ केतकी ॥ ४ ॥ रहिमुनियां ॥ ५ ॥ हंसराज ॥ ६ ॥ वांसमती ॥ ७ ॥ साठी ॥ ८ ॥ इत्यादिक ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८७ ॥

धारे चाउ रहु वीर अंजनादि साजकर श्याम जीरा मोहिबेको बानकै बनाउ री ॥ गोरिया यह बात में केतकीहु बार कही रहि मनु वाँ न तोर कस तो स्वभाउ री ॥ जीवन को सुख बोल हंस राज मन को जो मीतैं ते कहब वास मती अनखाउ री ॥ साठी बाँकी प्रीति जोहै नन्दकेललन सन धीर राखु मिलिहैं री जो तो सत भाउ री ॥ इति ॥

प्रसंग ८७॥ कोई एक परम सुंदरी श्याम सुन्दरके वियोगमें भरी श्रृंगारको त्याग कियेहुये अपने गृह में मलीन मन करे बैठी थी कि उतनेमें एक उसकी परम मित्र किसानिन दूतिका आनकर उसका हाल बेहाल देख यह उपदेश दे कहती भई कि अरी प्यारी इन बातोंमें क्या रक्खाहै कि जो तूने अपना शृंगार करनाभी छोड़ दियाहै क्या इस कृत्यसे भगवान् प्रसन्न होयँगे नहिं २ ऐसानहीं करना चाहिये देखु ॥

सखिप्रति किसानिन दूतिका वचनम् ॥

॥टीका॥ ८७ ॥ अरी सखि(अपनेमनमें) काजर आदिविविध शृंगारों के(सजने का)उत्साह ग्रहण कियेरहु कृष्णमहाराजका मन वशीभूतकरनेको उपायतो करु॥ हे सखि मैंने अनेकोंहीं दफे येही शीक्षा करी (परन्तु) तेरे चित्तमें (मेरीसिखावनकुछ) नहीं ठहानी (यह) तेरी कैसी आदतहै॥ अरी वीर (इस) जिन्दगी का आनन्द हँसना बोलनाही है (और अपने) जीका जोकि भेदहै (सो अपने) मित्रही से कहाजाता है (मुझसे) छिपाउनेपर आमादा यानी आरूढ़ न हो ॥ अरी प्यारी जबके (तुझने) नन्दनन्दन से सुन्दर प्रेम कियाहै (तौ सावधानरहु यानी) हिम्मत बांधु जोके तेरी सच्ची लगन है (तो निश्चय रखु तुझे जरूरही महराज) मिलजायँगे ॥ इति ॥

॥ उपदेश ॥

॥ धीरानायका ॥

॥ किसानिन दूतिका प्रसंग अनाज नामानि वर्णन ॥

॥ अथ नाजानुमान संख्या १२ ॥

मका व मकाई१ जुन्हरी२ बाजरा३ धान४ तिल५ गेंहू६

जउ ७ अरहर ८ चांवल ९ उरद १० सामा ११ मसूर १२

॥ अन्योक्ति सिंहावलोकन कवित्त ॥ ८८ ॥

छोरिये मकार ना अपंचताहि सूंन हरी वा जरा कुहृदय धान्य
तिलहू नजोरिये ॥ जोरिये सनेह उरगेहु जउ चहैहै सुख अरि
हरि रोप हनु मदनु दटोरिये ॥ दटोरिये री चाउरलि ललनै मिलाप
को उर दर्शनाभिलाप लै ना मुख मोरिये ॥ मोरियेन सामाभर
जीहै चित चोरिये री चोरिये मसूर आंट माषैं न छोरिये ॥

प्रसंग ॥ ८८ ॥ एक समय खिशारचासखी श्रीकृष्ण महराज रो रुष्टित होय मान मनाय बैठी तिसको एक किसांनिन दूतिका आयकर यों उपदेश देती भई कि ॥

सखिप्रति किसानिन दूतिका वचनम् ॥

॥ टीका ॥ ८८ ॥ (अरीसखि न तो तू कुछ) नादानके न फोरित है जोके बेढंगापनको नहीं छोड़ती ऐसे खोटे धन के (चाल चलन को) ढूँढ़छान तिलभर यानी जराभी नहींजनाकरनाचाहिये ॥ (औरजो तू कुछ नया इकट्ठीही किया चाहती होइ या) जोकुछ आनन्द भोगने की इच्छा होइ (तो अपने) हृदयरूपी घर में प्रीतिको इकट्ठाकर (और) कृष्ण महाराजका बैरी (यानी उनके अनुचित जोहै) गुस्सा (है तिसको) दूरकरके सबसुखों को ग्रहणकरिये ॥ (अथवा) हे सखि (अपने) प्यारे के मिलने के वास्ते (जो) प्रीति रूपी लग्न है (तिसको) धारण करु (क्योंकि) मनमें हरिदर्शनों की चाह रखकर मुंह नहीं फेरना चाहिये (याने रुची वा लालसा ना हटानी चा-

हिये)॥(सब अनाजों में सांझा नामक अनाज का दाना बहुतही छोटा होता है सो दूती कहनी भई कि) हे [३७] सखी [३८] सांझा भरभी याने थोड़ा भी (मनको) म[३९]तीहटाउना [४०] चित्तलगायकर (उनका) मन [४१] अपने [४२] हांथसें लैले (और तेरे जो मनमें बसाहुवा) [४३] मुक्य [४४] खिचावट रूपी सैलहै (उसको) [४५] निकालडाल (परन्तु तेरेजो सनेही) श्री [४६] कृष्णचन्द्र भगवान् हैं (उनको कभीं) [४७] नहीं [४८] त्याग करना चाहिये ॥ इति ॥

॥ चित्र दर्शन ॥

॥ प्रेमवतीनायका ॥

समता सकेतिक उदाहरलीय ॥

अथ समतानुमान संख्या ॥ २८ ॥

मधुप (व) भौंरा १ अभिथल यानी अगूठका चबूतरा २ केसर ३ मकराकृत ४ धनुं (व) धनुष ५ मैन (व) कामदेव ६ मीन (व) मछली ७ कंज (व) अम्बोरुह (व) कमल ८ जादू (व) टोना ९ विशिष यानी बाण कामदेवी १० शुक (व) सुवा ११ मोयनी कनौरी १२ बिम्बाफल यानी कुंदरु १३ गजमुक्ता १४ किकनी (व) चिकनावट १५ अनूपता १६ कंबु (व) संख १७ वृषभ यानी बैल १८ मृनालि (व) कमलनाल १९ चंपककली (व) चमेलीकी कली २० दुति (व) झलकारा २१ चन्द्रमा २२ मृगपाद २३ त्रिबलिका (व) त्रिबली २४ कुंड (व) गढ़हा २५ सुधा (व) अमृत २६ सिंह (व) शेर २७ केल यानी केला २८ ॥

नख शिख वर्णन अन्योक्तिक कवित्त ॥ ८९ ॥

[१] मधुप [२] गणा[३]भिथल [४] केसरतिलक छाप [५] कुंडल [७] मकर[६]कृत [९] धनु

खंड मैनके ॥ मीन कंज ग्रहजादू विशिष मनोज शुक मोयनीक चौरि बिम्ब मुक्ता मकुनैनके ॥ चीकनी अनूप कम्बु वृषभ मृनालि चंपकलि द्युति अर्धचन्द्र भृगुपादजैनके ॥ ज्वलित कुंड सुधा सिंह केल अम्बोरुह ललन पिछान चित्र येही प्रदचैनके ॥इति॥

प्रसंग ॥ ८९ ॥ जिस समय बाणासुरकी पुत्री ऊषा ने श्रीकृष्णात्मज श्रीप्रद्युम्नपुत्र श्रीअनरुद्धजी महराज को स्वप्न में देख व्याकुल होती भई उस समय उस्की परम सहायक स्यान सागरी चित्रलेखा चाकरी ने भेद जाना तब उसै समस्त देवनाओं वा मुनिजनों वा राजाओं की तस्वीरों को खींच खींच कर दिखलाय फेर पीछेसे श्रीरूपराज राजेश्वर श्रीअनरुद्धजी महराजका चित्र लिख दिखलाय पूंछतीभई कि हे प्यारी देखु पहिचानु तेरा चित्त चुरावनेवाला यह तो नहीं है तिस चित्रकी विचित्र छटा वर्णन ॥

ऊषा प्रति चित्रलेखा दूती का वचन ॥

॥ टीका ॥ ८९ ॥ भौंरों सरीखे काले भँवराले बाल महाअभूनका चबूंनरा ऐसा मस्तक (तिसपर) केसर के टीकेका चिह्न (कानों में) मगर के आकार सरीखे बाले (विराजमान मानों) कामदेव के धनुषके (दो) टुकड़े होंय ऐसी भौंहें॥ मछली से चंचल कमलसे सुन्दर नैन जादूटोनाकापर ऐसी चितवन मदनके बाणों सी पलकैं सुवा कैसी नासिका मोइनदार कचौरी से मफुल्लितगाल कुंदुरू

के फलसे अधिक अरुण अधर (होंठ) [१९]हाथियों से (उत्पत्यभयेहुये) [२०]मोती याने गजमुक्ता सरीखे दांत॥ चिकनी [२१]चांगिली चिबुक (ठोंड़ी) [२२]अलबेली मुसक्यान [२३]शंख सदृश सुडौल गरदन [२४]बैलसे विशाल ऊंचे ऊंचे कंधे (शाने) [२५]कमलकी डांड़ीसी लंबी लंबी भुजा (बांहें) (कोमल कोमलसे हाथ) चमेलीकी [२६]कलियोंसी अंगुलियां (नखों की) [२७]शोभा (मानों अष्टमी की रात्रि सरीखे) [२८]आधेअङ्गवाला चन्द्रमा (तिसका समूह सोहायमान) [२९]भृगुमुनि चरण चिह्नित (भगवान् के जाये हुये श्रीप्रद्युम्नजीके पुत्र श्रीअनरुद्धजी महाराज जिनके पेट पर) तीनतीन [३०]बल पड़े हुए (तोंदीमानों) [३१]अमृत का [३२]तालाब [३३]चीते (शेरसे पतली कमर) [३४]केला सरीखी चिकनी जांघें [३५]कमलसरीखे कोमल चरण (इसप्रकार श्री अनरुद्ध जीका चित्र लिखकर चित्रलेखादूती ऊषाको दिखाय पूंछनी भई कि हे प्यारी) [३६]परख ले (तेरे) [३७]सुःखदेनेवाले (प्रीतम) [३८]प्यारे की [३९]यहीं [४०]तसवीर है॥ इति॥

॥ मानीनायक॥

॥ बजाजिन दूतिका प्रसंग कपड़ोंका॥

॥ अथ वस्त्रानुमान संख्या १९॥

तन्जेब॥ १॥ मार्कीन॥ २॥ पिलाम॥ ३॥ तूल व दूल॥ ४॥ नैनसुख॥ ५॥ दरेस॥ ६॥ गाढ़ा॥ ७॥ अतलस॥ ८॥ जाली॥ ९॥ निवाड़ (व) निवार॥ १०॥ कमरख॥ ११॥ डोरिया॥ १२॥ कामदनी॥ १३॥ मलमल॥ १४॥ नाखूना॥ १५॥ खासा॥ १६॥ दुशाला॥ १७॥ मालीदा (व) मलीदा॥ १८॥ साठन॥ १९॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त॥ ९०॥

[७]हीनी [९]तन [६]जेब [१]मार [४]कीनहै [३]पिलाम [२]तूल [११]नैन [१०]सुख [११]निदरेसै [११]

दरश तिहारे को ॥ गाढ़ा विरहा दुसाह अति लसि शोक मांहि जाली ना ललन बात तो बिनु निवारे को ॥ कम रखी डोरि यार काम दानियां विचारु मलमल पाण तीं ना खूनै करडारे को ॥ खासा है दुशाला माल साठनी जरूर चही बाला यों रसाल नाहिं मिलिहै निहारेको ॥ इति ॥

प्रसंग ॥९०॥ कोई एक परम सुकमारि सलोनी सुंदरी श्रीकृष्ण महराज के दरशन वियोगसे दुखित एक अपनी सगीसहेली सनेहिन बजाजिन दूतिका की मार्फत महराजके पास सँदेसा भेजकर बुलवावतीभई वह दूती अपनी सहेलीकी पठाईहुई श्री गोपाललाल महराजके समीप आनकर यह कहती भई कि हे भगवान् जल्दी चलकर अब अपनी दर्शनाभिलाषिन वियोगिनीको दर्शन दीजिये आपके मारे उसकी यह दशा होरही है कि॥

हरिप्रति बजाजिन दूतिका वचनम् ॥

॥ टीका ॥ ९० ॥ कामदेवकी (विथा ने जिसको) अत्यन्त पीला कर दियाहै शरीर की शोभा जातीरही है आपके दरशनरूपी आनन्दसे निरादर कियेहुयेसे (जिसके) नेत्र (होरहे हैं) ॥ जुदाईरूपी कराल बिथासे महा दुःख में भरीहै (सो हे) प्यारे (मेरा) वचन झूठ मत (जानियो) आप के बगैर (उस का दुःख) कौन दूरकरेगा ॥ (हेमित्र अपने)सनेहियों की कामना पूरीकरनेवाले सोचलीजिये (जो मेरे कहनेपर आप)कमती ख्याल करोगे (तो मुझे दोहशग

है कि आपके दुःखमें वो) नारि हाथ मींज मींजकर कहींकुछ उत्पात न करै ॥ (दुशाला अर्थ दो वस्तु जिसै सालैं व सतावैंहैं क्या लज्जा और काम ये मध्या को सतावैंहैं तो दुशाला कहिने से यहां मध्यानायका जाननी चाहिये सो दूती कहती भई कि हे महराज ये ऐसा) सुन्दर मध्यानायका (सरीखा) धन निश्चय कर प्राप्त (व) कबजे करलेना चाहिये ऐसी सुन्दर स्त्री (फिर कभी) नहीं आपके हाथआवैगी ॥ इति ॥

॥ क्रिया विदग्धानायका ॥
॥ हलवाइन दूतिका प्रसंग मिठाईका ॥
॥ अथ मिठाईनामानुसंख्या ॥ १२ ॥

रसडोबी ॥ १ ॥ अमृती (व) अमिरती ॥२ ॥ कपूरकंद॥३ ॥ बरफी ॥ ४ ॥ मोहन भोग ॥५ ॥ हलवा ॥ ६ ॥ गुलाबजामुन ॥७॥ मोदक यानी लड्डू ॥ ८ ॥ निवासा (व) अंदरसा ॥ ९ ॥ मिसरी ॥ १० ॥ बतासे ॥ ११ ॥ मीठा (व) बूरा ॥ १२ ॥

अन्योक्तिक कवित ॥ ९१ ॥

रस डोबी वाके अस अमृती सुनाये बैन वचन क पूर कंद कीन्हों बस हालही ॥ जोहती अबर फी नकी मोहनभोग बात हलवेहिसे प्रतीत आपुन सो घालही ॥ गुले आब जामुन री मोदको निरासाभयो सोई नंदललनने घाल यह चालही ॥ बातन के मिस री यों दबतासे आन ढिग बरबस मीठा मुख लैलियो सुपालही ॥ इति ॥

हलवाइन दूतिका प्रति सखि वचनम् ॥

॥ टीका ९१ ॥ अरीसखि (आज मैं) श्रीकृष्ण के प्रेम में ऐसी मोहित होगई (कुछऐसे) सुधासरीखे वचन कहे (सो वह) बातैं क्या (थीं मानों) मिठाई से भरी हुई होंय (तिनकरिकै मेरामन) तुरतै वशीभूत करलिया ॥ और (जो कहूं कि कुछ मुझे) शुभाशक मालूम पड़ा हो (सो कुछ) गोपाललाल ने विषय रूपी प्रसंग चलायानथा धीरे २ अपना विश्वास (मेरेमन में) बँधाय दिया ॥ (गुल अग्रे आब तिसका हुआ गुलाब + गुल अर्थ=मित्र और आब अर्थ शोभा (अदा) और गुल शब्दको उरदूमें मित्र (व) यार के वास्ते बांधते हैं तो गुलशब्दका अर्थ हुवा कृष्ण सो हे सखि) कृष्ण की शोभा (मेरेमनमें) बसगई (और) सुख प्राप्तहुआ इतनेमें नन्दनन्दन ने ऐसी घात करी (कि)॥ बातों २ के बहाने अरीसखि ऐसे ढंगसे (मेरे) पास आयकर कृष्णचन्द्र ने अचानक (मेरे) मुँहका चूँमा लेलिया ॥ (हे सखि वो नन्दललन तो बड़ाही नटखट है) इति ॥

॥ संघट्टन भाव ॥

॥ मानवती नायका ॥

॥ हलवाइन दूतिका प्रसंग मिठाई का ॥

॥ अथ मिठाईनामानु संख्या ॥ १४ ॥

मनोहरी (व) रसफेनी ॥ १ ॥ खाझा ॥ २ ॥ लड्डू ॥ ३ ॥ खोवा ॥ ४ ॥ रसगुल्ला (व) जलाव ॥ ५ ॥ पापर (व) पापड़ ॥ ६ ॥ सेउ ॥ ७ ॥ तिकोना ॥ ८ ॥ मठरी ॥ ९ ॥ स्वाल ॥ १० ॥ बरफी ॥ ११ ॥ गुपचप ॥ १२ ॥ जलेबी ॥ १३ ॥ पेड़ा ॥ १४ ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ६२ ॥

लेमान मनोहरी हरीसों जानि खाझाकर लाय हित लड्डू वर खोयारसचाहेहै ॥ पा परों कहोतो हौंतो सेउ सुख स्यानी भई ललन पिया को त्याग तीको नाहिं लाहे हैं ॥ मठ्ठरीका बुधि तोरि स्वाल यह तोसों मोर वर फी न कोऊ अस जाको तुहि डाहे है ॥ गुप्चुप जा ले बी आउ साज पट शोक ढाउ मोरे सँग चालु प्रभु पेंड़ा तुव गाहे है ॥ इति ॥

प्रसंग ॥ ६२ ॥ एक समय वृषभान किशोरी श्री राधिकाजी श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् से रूठकर मानकर बैठतीभई तौ प्रभुने अकुलाकर एक परमचातुरी हलवाइन दूतिका को प्रिय महरानी के मनावने के वास्ते भेजा वह दूती श्री कीरतिकुमारी हरिप्यारी के पास आनकर यह उपदेश देती भई कि ॥

प्रियपति हलवाइन दूतिका वचनम् ॥

॥टीका॥ ६२ ॥ मनके हरनेवाली (मेरी सीखको) ग्रहणकरु गोपाललालजीसे मत तकरार कर (देखु) लड्डू तथा मोदक (सरीखामीठा) श्रेष्ठ सनेह जोड़कर (उसका) स्वाद नहीं चाखैहै॥ (तू) कहै तौ मैं (तेरे) पैरों पडूं मौज उड़ाउ (आनन्दभोग) चतुरा (ह्वैकर फिर) नादान बनीजाती है स्त्रीको (अपने) पतिको छोड़देना नहीं उचितहै ॥ मेरा तुझसे यह प्रश्नहै (यानी मैं यह तुझसे पूंछूंहूं) क्या तेरी मति कुंद होगई है (क्या तेरी अकिल जातीरही बुद्धि पथरायगई है) ऐसा हरेक कोईका

३५ ३६ ३७ ३८ ३९
पिया नहीं (होयगा) जिसको कि तू जलावैहै॥ (खैर जो कुछ हुआ उसे भूलजा व
४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६
अब) प्यारी चुपचुपाते से जायकर कपड़ोंको उठाय पहिरकर आयजा (और
४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५
सोचको दूरकर मेरे साथ चल कृष्णमहाराज तेरा आसरा ताक रहेहैं॥ इति।

परकिया नायका॥

ठठेरिन दूतिका प्रसंगपात्र रचनीय शस्त्रोंका॥

अथ पात्र शस्त्रानुमान संख्या ॥ १४॥

सांचा॥१॥ ढाल॥२॥ डोल॥३॥ मटीना (व) मटकैन घड़ा (व) गगरा॥ ४॥ निहाई॥ ५॥ परकाल॥६॥ ढक्कन ॥७॥ घर्रानेकी (व) फुकनी॥ ८॥ केरी (व) कैंची॥ ९। हथोड़ी (व) हांथोड़ी॥ १०॥ सारिबा (व) सून (व) डोरा ॥ ११॥ छेनी॥ १२॥ चीतैकी (व) चीतकी (व) कमल॥१३। कतरनी॥ १४॥

अन्योक्ति कवित्त॥ ६३॥

१ २ ४ ५ ३ ९
सांचा ढालि आऊं डोलबांधि आऊं मिलवेको माटीनाकरीजै
६ ८ ७ १३ ११ १२ १० १७
वचतूल दै प्रतीतैको। होइना निहाईतै वदीहू परकालकहूं ढक्कन
१८ १४ १५ १६ २१ १९ २० २४ २२
परैगोना क्यहूते वा फजीतै को॥ बेटी तैं घरानेकी वहूहै अमीराने
२३ २५ २९ २६ २८ २७ ३० ३१
केरि हां थोरीनबात बीर सारिबो सुप्रीतै को। अछेनीक चीतैको क-
३३ ३२ ३५ ३६ ३४ ३८ ३७
तरनी कुरीतै को ललन सों सुनीतैको पुराइबो सुरीतैको॥ इति॥

प्रसङ्ग॥ ६३॥ कोई एक नवीना यौवना सुन्दरी श्यामसुन्दर के बियोगमाती अपनी परमसनेहिन ठठे-

रिन दूतिका से यह कहती भई कि हे सखि अबतो मुझसे यह श्रीकृष्णके बिछोहरूपीदुःख सहन नहीं किया जाताहै कोई यत्नसे तू मुझे उनको मिलायदे नहीं तो मेरेप्राणोंपर बीतती मालूम होती है उसने उसकी आकुलता को देखकर यह कहा कि हे प्यारी नारायण से मिलाय देना यहतौ कोई बड़ी बात नहींहै परंतु काम वो करना कि जिसमें मेरा तेरा दोनोंका फजिहता न होने पावे क्योंकि मैं पचास घरकी जानेवालीहूं आजतक किसीने मेरे ऊपर अँगुली नहीं उठाय पाईहै लेकिन खैर मैं तेरी व्याकुलता देखकर और तेरे कहनेपर मैं कुछ तेरे वास्ते उपाय करूंगी और कृष्ण महाराजसे मिलाय भी दूंगी लेकिन अपने मनकी बात किसी को प्रगट न करना इस भांति उसको धीर बँधाय समझाय बुझाय यों कहकर चलदेती भई कि हे सखि ॥

सखिप्रतिठठेरिनदूतिका वचनम् ॥

टीका ॥ ९३ ॥ सीजा[१] लगाय[२] आऊं (औरउनके) मिलनेका[३] ढँग[४] जमायआऊं[५] (तब तुझसे कहूंगी लेकिन हे प्यारी कहीं मुझको इसतरह की) लम्बी चौड़ी[६] बातों से विश्वास[७] को दिलाय[८] (मेरीबात में कहीं) धूरमति[९] मिलाय दीजिये ॥ (काहेसे यह बातैं बहुत कठिन हैं मैं) ठीक[१०] २ कहती हूं (कहीं) अत्यन्त[११] बदनामी[१२] न होजाय[१३] (तौफिर) किसी[१४] से उस[१५] बदनामी[१६] वा फजिहतपर परदा[१७] भी डाले[१८] ना डाला जायगा ॥ (क्योंकि) तू[१९] नामजद[२०] कुलीन की पुत्री[२१] है (और) अमीरोंके घर[२२] की[२३] पतोहहै[२४] (हां शब्द आश्चर्य को दरशाता है इसीसे कहागया है कि) देखु

समुझले सखी स्नेहका करना (कुछ) हँसी खेल नहीं है॥ (क्योंकि) भलाइयों का विचारना बुराइयों से बचना नेक चाल चलनों से प्यारे से सच्चा बरतावकर निबाह करना (कुछ लड़कों का खेल नहीं अपना मन देकर पराया मन बस करना यह बड़ी मुशकिल बात है) ॥ इति ॥

परक्रिया प्रोषितपतिका नायका ॥

लोहारिन दूतिका प्रसंग लोहपात्रोंका ॥

अथ लोह शस्त्र व पात्रानुमान संख्या ॥ १३ ॥

सूजा ॥ १ ॥ कीली (व) कील ॥ २ ॥ तकुवा ॥ ३ ॥ कड़ाही ॥ ४ ॥ कुंजी ॥ ५ ॥ कुफल (व) ताला ॥ ६ ॥ जंजीर ॥ ७ ॥ सँड़सी ॥ ८ ॥ चलनी ॥ ९ ॥ तवा (व) तावा ॥ १० ॥ तसला ॥ ११ ॥ कबजा ॥ १२ ॥ कल हरेक प्रकार की ॥ १३ ॥ कुल्हाड़ी ॥ १४ ॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ ९४ ॥

उन सूं जाकहु इमु कीलिकोउमेठु बीर तक वाके हाथहै कड़ाही तुम राखिये। युक्तिकुंजिसों टटोल कुफल कठिनाई खोल प्रेम की जँजीरसों सँड़सि रस माखिये ॥ कीजैना कुचलनीहि तवा लीजै तस लाय घात कबजामें मन लै यों अभिलाखिये । हैना वाहि कल छिन नन्दकेललन सुनु विरहाकुल्हाड़ी हनि ताहि सुख माखिये ॥ इति ॥

लोहारिन दूतिका प्रति सखिवचनम् ॥

प्रसंग ॥ ९४॥ कोई एक विरहिनी सुन्दरी नारायण

के वियोग में अतिव्याकुल है एक अपनी सुखद सहेली लोहारिन दूतिका से हाथ जोड़ विनती करके यह कहती भई कि अब मुझसे विरह वेदना का दुख नहीं सहन किया जाताहै आज तू जाकर श्रीगोपाललालको बुलाय लाउ ॥

टीका ॥ ९४॥(हे) [१]सखि (कुछ उनकी) [२]ऐसी [३]मति फेरदे (और) [४]श्रीकृष्ण महाराज [५]से [६]जायकर कहु (कि) भलाई बुराई वा [७]ताकघात (सब) [८]उसके [९]जिम्मेहै [१०]आप अपना [११]जी [१२]मजबूत [१३]रक्खो ॥ (परंतु) [१४]यतनरूपी [१५]तालींसे [१६]ढूंढ़कर (उन के रुकावटरूपी) [१७]कठिन [१८]ताले को खोल [१९]नेहरूपी [२०]सांकरमें [२१]फांस (तब अपना) [२२]मतलब [२३]जाहिर करना ॥ (देखकहींकुछ) [२४]अनुचित [२५]नकरबैठिये (अपने) [२६]वश में (उनका) [२७]जी [२८]करके (खूब) [२९]अजमाय लेना [३०]तैसाही [३१]दांव [३२]लगाय (तब कुछ) [३३]ऐसी [३४]प्रार्थना करना (कि)॥ [३५]सुनो [३६]नन्दनन्दन(तुम्हारे बिना) [३७]उसको [३८]घड़ीभर को [३९]चैन [४०]नहीं है [४१]जुदाईरूपीकुल्हाड़ी से [४२]घायलहै [४३]तिसको (अब आप चलकर) [४४]आनन्द(देनेको) [४५]चाउ करिये ॥ इति ॥

मध्यमानलाजवती नायका और ॥

उत्साहवर्द्धक परकियानायका ॥

सुनारिन दूतिका का संघट्टन प्रसंग आभूषणोंका ॥

अथआभूषणानुमान संख्या ॥ १४॥

झूमड़ १ कटियां २ बेना ३ बाली ४ वाला ५ पात. पत्ते ६ तरकी ७ मुरकी ८ हैकल ९ जुगुनू १० चन्दनसेनीहार ११ धुकधुकी १२ बहूंटा १३ जोसन १४ ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ९५ ॥

२ १ ३ ४ ५ ७ ६ ८
नासमुझु मरककीवात कटिया जीतौल वे ना है अजान स्यान
१० ९ १३ १४ ११ १२ १६ १७ १९ १९
गाठरी गँभीरता। वारीही रही री बाला पातरही बुद्धि तोर तरक
१८ २१ २० २४ २५ २६ २७ २९ २८
मुरक रसकी नजांच शीरता॥ हैकल जु गुनु न चन्दनमे निहार
३० ३१ ३२ ३३ २३ २२ ३८ ३६ ४०
गात उर धुकधुकी वासि तकैना अधीरता। बहू टाल देतिरही
३४ ३६ ३९ ३७ ४१ ४३ ४२ ४४
जो सनित नेहसन नन्दकोललन मेलु यही नारि वीरता ॥ इति॥

सखिप्रति सुनारिन दूतिका वचनम्।

प्रसंग ॥ ९५ ॥ कोई एक नायक किसी एक परम सुन्दरी से प्रीति करनेको महाव्याकुलथा अनेकों उपाय किया करै परंतु वो उसके हाथ नहीं आवै एक दिन वो सुनारिन दूतिका जोकि बड़ी होशियारथी उसे बोलाय कर अपने दुःखकी व्यवस्था सुनावता भया तब वो दूती उसको अपने साथमें उसी सुकुमारी के मकान पर लैगई नायकने सब कुछ संकेतिक वचनोंसे अपनी प्रीति प्रगट कर दिखाई परंतु उस चातुरी ने उसका आदर नहीं किया औ न कुछ मुंह से बोली ऐसा बरताव देखकर दूतीने नायकको तो इशारा देकर उसके घरसे उठाय दिया और उसके बाद दूती उस सुकुमारी को एकांतमें लेजाय यह कहती भई कि॥

१ २ ३
टीका ॥९५॥ (हे सखि तू) पंचकी बातको नहींसमझती (अपने) तराजूरूपी
४ ५ ६ ७ ८ ९
मनमेंअजमाय देखु अरी (अब तू कुछ) अनारिन नहीं है चतुरता (व) गरु-

आपनकी [१०]गठरी है॥(परन्तु फिरभी) हे [११]सखि [१२]नादान [१३]ही [१४]बनी है(तू कुछ आदिमी नहीं)[१५]तेरी [१६]ओछीही [१७]मति है(तू) [१८]प्रीतिकी [१९]छेंड़छांड़ (व) [२०]रसाई(सुशीलता) को [२१]जानतीही नहीं॥ (हे प्यारी तू अपने चाहनेवाले के मनकी) [२२]घबराहट को [२३]नहीं देखती है(उसे) [२४]चैन [२५]जोकुछ [२६]विचारती होय(सो) [२७]नहीं है [२८]देखु [२९]चन्दन सरीखा सफेदरँग तो [३०]शरीरका (होगयाहै और तेरी जुदाई की बिथा के मारे उसके) [३१]कलेजे में [३२]धकधका [३३]समाय रहा है॥ (अरी सखि आदमी का चोलापायकर कुछ पराये दुख दर्दकोभी विचारना चाहिये देखु अब कुछ मेरे आवनेका भी ख्याल कर जो कुछ मैं कहूं उसको मान सुनु) [३४]जोकि (तेरी) [३५]प्रीति से [३६]भरा [३७]नंदका प्यारा (जिसको कि तू) [३८]बहुलसा [३९]टालाबाला [४०]बतलावती रही है (उस्सेअब) [४१]मिनु [४२]गोरी (तेरी) [४३]येही [४४]सूरबीरता वा भलमंसी है॥ इति॥

उत्साहवर्द्धक नायक॥

सुनारिनदूतिका प्रसंग आभूषणों का॥

अथ आभूषणों अनुमान संख्या॥ ६॥ धातुनाम २॥ सोना १ कुंदन २ बाला १ तर्की २ त्रिचकन्नी ३ बिजुलीका बाला ४ मछली ५ बाली ६ सञ्जा ७ कुटिला (व) करनफूल ८ पात ६॥ ॥ अन्योक्तिक कवित्त॥ ६६॥

ललन [४]सोवर्ण [५]रंग [६]कुन्दन सों [७]भूर [८]भाह [१३]जिलाकीन्ह [१४]मानों [९]
[१०]मंजु [११]गातकी [१२]गुरोलीमें। [१]बालवोहै [२]बाला [३]बाल तर्किजात [२०]नैकहीमें [१९]
[१७]मुखलावै [१८]विचकन [१६]तुरतै [१५]ठठोली में॥ [२१]बिजुलीसी [२२]चम्कजात

आवैनाहींहाथ छांह मीन मतिवारी भारी चातुरता बोलीमें।
देख स वजाकी झांकी कुटिलानो मोर मन पातपात वारूं ठोली
मिलै जोवो होली में ॥ इति ॥

अथ सुनारिनदूतिका प्रति नायक वचनम् ॥

प्रसंग ॥ ९६ ॥ एक समय श्रीकृष्ण महराजने कहीं एक अत्यंत सुन्दरी चातुर्य्यागरी चंचलता सागरी रूप नव नागरी को देख प्रसन्नहो एक सुनारिन दूतिकासे यह कहते भये कि आज मैंने एक ऐसी अनोखी अबला अवलोकी है कि जिसकी निकाई कुछ कही नहीं जाती

टीका ॥ ९६ ॥ (हे) सखि वो (ऐसी) सुंदरि अबलाहै (कि) प्यारा सोने सरीखा (तो शरीरका) वर्ण (और) कुंदन से भी ज़्यादा चिमत्कारी (छबि) साक्षात मालूम होताहै (कि) सुंदर शरीर की गुरावट पर सिकल कीहुईहोवै॥ (और फिर उसका तीक्ष्ण स्वभाव कैसाहै यानी तुनुक मिज़ाज ऐसीहै कि) हँसी करतेही उसीसमय मुंहको बिगाड़ लेती (और) थोड़ीहीसी बात में चिड़ जाती (व) खफा होजाती है॥ (वा) चपलासी छिपजाती परछाहीं (जिसकी) पकड़े न पकड़ाई देती मछली सरीखीचंचल बुद्धिवाली बोलचालमें अत्यन्त चतुराई (भरीहुई ऐसी)॥ सहित वज़हदारी याने शोभावारी सूरत देखकर मेरा जी चलायमान यानी उसपर डिगजाताभया (सो हे सखि मैं अपना) तनमनधन अर्पण तथा निछावर करदूं जोकिवो अबला (मुझेइस) फाग के मौसम में मिलजाय ॥ इति ॥

गणिका सामान्या मानवती नायका ॥
सुनारिनिदूतिका प्रसंग गहिनोंका ॥
अथ अभरण अनुमान संख्या ॥ १४ ॥

कड़ा १ चूड़ी २ पछेली ३ पहुंची ४ चुहेदन्तीकी पहुंची ५ आर्शी ६ मुँदरी वा अंगूठी ७ छल्ला ८ तोड़ा ६ जंजीर १० माला ११ दुलरी १२ हमेल १३ करधनी १४ ॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ ६७ ॥

३ २ १ ४ ५ ६ ८
नाकरु कड़ाकुड़ी री रूपमद चूरभई हैपछेलिमतिकी नपहुंची
७ १६ १३ १४ ११ १२ १० १६ १७ २० ९ १९
वावातको । चही दत्त दीवो गृह आवै जो आरस तजु मूंद री न
१८ २३ २४ २१ २२ २६ २७ २५ २८ २९
मुख छलु कैना कछु घातको ॥ तोड़ै नहिंथोड़ै मन प्रेमकी जंजीर
३० ३१ ३२ ३३ ३६ ३४ ३५ ३८ ४० ३९
गांस मालनिधि मीत पाइ कीजै रस नातको । दुलरी दुलारी तैं
४१ ४२ ४६ ३७ ४५ ४६ ४४ ४३
वोनंदकोललन प्यारो लीजै री हमेल कर धनी रतिजातको ॥

प्रसंग ॥ ९७ ॥ किसी एक समय चन्द्रावलि सखी के वहां गये हुये भगवान् को श्रीराधिका जी महारानी ने कहीं जान लिया तौ इस बात पर क्रोध कर खटपाट लै रोषभवन में जाय प्राप्त होती भई तो श्रीकृष्ण चन्द्र महाराजने एक परम चातुरी चालांक सोनारिन दूतिकाको बुलवाय हाल सुनाय महारानी के मनावने (व) बुलवावने के वास्ते उससे कहा वह दूती महाराज को धीरज बँधाय अपने संग में लेकर श्रीप्रियाजीके घर पर पहुंचती भई महारानी को कोपमंदिर में पड़ा देख बड़ी सावधानी और बुद्धिमानी की चतुरता से

श्री वृषभानदुलारी से विनयवत प्रार्थना कर यों कहती भई कि ॥

टीका ॥९७॥ अरीप्यारी[१] (तू अपने पिय प्यारे से बहुत) तनातुनी[२] मतकर[३] (अपने) स्वरूपकेगुमानमें[४] बेहोशहुई है[५] (तेरीऐसी) पिछली[६] बुद्धिहै यानें जिस काम को ना करके फिर उसीको करती है (और पहिले) उसख्याल[७]को यानीपरणामको नहीं[८] बिचारती ॥ हेप्यारी[९] (देखतेरे मनाउने और अपना अपराध क्षमापन करावने को तेरेपास साक्षात् महराज आयेहैं उठकर महराज का सत्कार करु क्योंकि) जो[१०] कोई (अपने) मकानपर[११] चलकरआवै[१२] (तौ फिर उसको तो जरूरही) सनमान[१३] देना[१४] चाहिये[१५] (अबइस) आलस्यरूपीरुकावट[१६] यानी अपने मनके मैलको दूरकरदे[१७] मुंहको[१८] मत[१९] छिपाउ[२०] (उनकेमनको) कोई[२१] यत्नसे[२२] अपनेवसमें[२३] क्योंनहींकरलेतीहै[२४]॥ (प्यारी प्रीतिको) छुड़ायकर[२५] (उनका) जी[२६] नथोड़ाकरु[२७] नेहरूपी[२८] सांकरमें[२९] फांसकर[३०] (ऐसे) गुणरूपीतालेवर[३१] मित्रको[३२] प्राप्तकर[३३] (उससे) हितरूपी[३४] लगावट[३५] (व) नातेदारी ही करनीचाहिये[३६] ॥ हे[३७] पिय[३८] तू[३९] (उनकी) प्यारी[४०] (हैऔर) वोनन्दजीकोकुँवर[४१] (तेरा)दुलाराहै[४२] (सोऐसे) प्रीतिरीतिके[४३] स्वामीकोतो[४४] (हृदयकी) माला[४५] करलेना[४६] चाहिये ॥ इति ॥

॥ धीरामानवती नायका ॥

॥ सुनारिनि दूतिका प्रसंग भूपणोंका ॥

॥ अथ आभरण अनुमान संख्या ॥ १४ ॥

पायजेब १ कड़ा वा खडुआ २ चूरी ३ तोड़ा ४ छागल ५ बिछुवा ६ नहिंयां ७ पलनियां ८ बोर ९ चुटकी १० तोर ११ भलका १२ मोर व मोरनी १३ टुरी (व) टोर १४ ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ ६८ ॥

पाय जेब परिबो तिहारोही सकलभांति कड़ाकुड़ी भल का भलाई किन्ह पाई है ॥ परचूं री सब कृत्य तोड़ा जिन्ह नेह जोर छाग लीन कुयशु बिछूवन बुराई है ॥ नहिंयां असत्य गोरि पालनियां झूलैं वो रि मीतैं नन्दकोललन येही सुघराई है॥देखु शिशुपन तोर चुटकीले मन मोर मो सिख बटोर तोर मान अनन्याई है ॥ इति॥

प्रसंग ॥ ९८ ॥ एक सखी के मनाउने से जब वृषभान नन्दिनी कीर्तिकुमारी श्रीराधिकाजी महरानी नहीं मानी तब दूसरी स्यान सदनी सुनारिनि दूतिका प्रियाजी के पास जायकर यों प्रार्थना सुनाय कहिती भई कि हे प्यारी अबकी बार तो तैंने बड़ीहठ कीन्हीं है अब तेरे मन में क्या है देखु कृष्णचन्द महराज तुझे मनाउने के वास्ते तेरे पास चलकर खुदही आये और तैंने उनको निरासकर लौटाल दिया फिर अब क्या तू चाहतीहै कि वह मेरे पैरों पड़ैं तो यह बात तुझे उचित हैनहीं ऐसा नहीं चाहिये वो तेरे स्वामी हैं ॥

टीका ॥ ६८ ॥ (हेप्यारी, सब तरहसे (अपनेपतीके) पांउ पड़ना तुझी को शोभादेय है (बहुत) तनातुनीमें कौन अच्छाई है (और कलेशको करके) किसने नामवरी प्राप्तकीहै॥ अरीप्रिया (मैं) सबतरहके वर्ताव देखचुकीहूं जिन्होंने प्रीति करके छोड़दीनी (उनको) खानेको बदनामी (और) बिछाने को बदी(व)खुटाई ही मिलती है ॥ हे प्यारी (मेराकहिना) झूठ नहींहै वोही (सुखरूपी) पालनोंमें

बिराजा करती हैं (जोकि) नन्दलालजी से प्रीति किया करती हैं (और इससंसार में नारायण से जो हेत रखना है सबतरहकी) इसी में अच्छाई है ॥ तेरा लड़कपन देखकर मेरा जी खसोटा करैहै यानी दुखाकरता है (इस्से अब) मेरी शिक्षाको ग्रहणकर तेरा (इस तरहका) रूठना न्याय से बाहरहै॥ (आगे जो तुझे अच्छा लगै सो कर तू अपने मनकी मालकिनहै और मैं क्याकहूं ॥ इति ॥

रतिप्रिया नायका ॥

जौहरिनि दूतिका प्रसंग धातुरत्नोंका ॥

अथधातु रत्नानुमान संख्या ॥ १५ ॥

पैसा १ रुपिया २ गिन्नी३ अशर्फी४ चुन्नी५पन्ना६हीर(व) हीरा ७ पुपराज ८ गौमेदक ९ नीलक व नीलम १० फिरोजा ११ लाल १२ लैहसुनियां१३ मुक्तामोती१४प्रवाल (व) मूंगा १५ इति ॥

दुग्ध गुण ॥

चौ०॥ स्वादिक सुखद विपुल बलदाई। पैसमान औषध नहिंभाई॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ ६६ ॥

पै सारु पियाके हित गिन्निये अशरफी ना पैहै व्यय व्याज युति रतिको अनंद री ॥ चुनी बात चितैदीन पन्नामें ललनि टीपु हीर सुख लाहै तब भानिये जो कंद री॥ पुष्पराजआननि गौमेदक प्रताप घन नातो बल नीलकीहो मदन गयंद री ॥ चाहिये फीरोजा वीर लालकाहिं लहि सुनी मुक्ता बलदा प्रवाल रंग हो अमंद री॥ इति ॥

प्रसंग॥९९॥श्रीभगवान् तो सनातन भक्तवत्सल हैं जभीं कोई सखी सच्चे प्रेमसेऽस्मरण करै तभीं उसके घरमें जाय पहुँचे तब श्रीराधिका जी महरानी की जो प्रिय सहेली किसी के यहां कृष्णमहराज को देखपावैं उसीसमय प्रियाजी से जाय कहि सबहाल सुनायाकरैं अपने प्रीतमका भेद और २ सखियों को जानलिया देखि खेदित है जबमहराज रात्रिको सुख शय्यापर हुआकरैं तब श्री प्रियाजी महरानी महराज की सेवा करते पर ये प्रार्थना करि कहाकरैं कि हे भगवन् आप पराये घरों में क्यों जाया करते हौ मुझे इस बात को सुन करिके बड़ाही खेद होताहै क्योंकि परनारियों से रतिकरने में कामकी हानी औ बल बुद्धी औ मुखकी शोभा जाती रहती है तो उससमय पर कोई महरानी की साखी सहाई तो होती न थी महराज प्रियाकी बातों को हँसी में उड़ाय झूंठी बनायदिया करते थे एकदिन कहींकोई एक प्रियाजीकी चाकरी कहीं चन्द्रावलिसखी के यहां गई तौक्या देखा कि वो अपनी सेज सजाय चुकी थी और अपना शृंगार कर रहीथी उसको मालूम पड़ गया कि इस के यहां आज महराज की अवाई मालूम होती है सोई वहांसे चुप चुपाते चलकर महरानी से आय खबर करती भई कि देखुप्यारी आज तो कृष्णचन्द्र महराज चन्द्रावलिके यहां जानेवाले हैं उसको मैं सेज सजाये शृंगार करते हुई देखआई हूं तअज्जुब नहीं की मुझे वहांसे आने २में इतनी देरहुई है चाहेवो वहां पहुंच

भी गये हों ऐसा सुन महरानी श्रीश्यामसुन्दरको पकड़ लेने की ताक में उसीदम सखी के संगमें चन्द्रावली के मकानको चल देती भई जो चन्द्रावलिने महारानी को आउतेहुये पहिले तो दूरसे देखा तब तो उसे मालूम हुवा कि महराज आवते हैं बड़ी प्रसन्न हुई फूली ना समावे थोड़ी दूर चल आवने पर क्या देखती है कि महराज तो हैं नहीं ये तो प्रिया जी मालूम होती हैं तबतो उसके प्राण हवा होगये और इसने ये समझा कि ऐसातो नहीं हुवा कहीं महरानीजी को आज श्रीकृष्णचन्द्र का मेरे यहां का आउना मालुम होगया होय तभी तो मेरे घरको आरही हैं आज नारायण कुशल करै तौ मेरी लज्जा बचै नहीं तो आज कुछ मेरे वास्ते बुराई जरूर होने वाली है होश फाका होगये सक्ते के आलममें आगई दिल धड़कने लगा हाथ मलने लगी परन्तु अपनी स्वामिनी समुझ कर और कुछ मनको सावधान कर पचास कदम चलकर बड़ेही आउ आदरसे महरानी जी का हाथसे हाथ पकड़ अपने घरमें लाय रत्नजटित सिंहासन पर बैठार बड़े सत्कार युक्ति सेवामें ततपर होकर यों कहिती भई कि हे प्यारी आज तो मेरे बड़ेही भाग हैं जो आपने मुझे घर बैठे दरशन दिये आज किधरको यह चन्द्रमा उदयहो आया और महरानीने जो उसके यहां देखा तौ महराजका कुछ पता निशानही न था अब तो वो अपने मनै मन में शोचने लगीं कि मैं तो पकड़ने महराजको आई थी सो वोतो

हैं नहीं और मेरे बैठे पर, वो आयभी गये तौ क्याहोगा वो उल्टघड़ा मेरेही ऊपर बांधैंगे मुझे देख वो यही कहिने लगैंगे कि मैं तो तुमारे ही कारणसे यहां चला आयाहूं ये तो कुछभी न हुआ अब क्या करनाचाहिये परंतु प्रियाजी तो बड़ी चतुरथीं उसी छिन चतुराई के साथ एक अद्भुत युक्ती रचकर कहने लगीं कि हे सखि राति मैंने एक ऐसी सुन्दर बात श्रीकृष्णचंद्र महराजके मुखारविन्दसे सुनीरही सो उस खुशीके आनन्दको तुझे सुनाउने आईहूं तबतो इसकी घबराहटका खेद सब जातारहा और अत्यन्त खुशी होइ महरानीके पीछे पड़जाती भई कि वो कौनसी बातहै आप मुझे जरूर सुनाइये प्रियाजीने उसका मन अपनेकाबूमें करके कहा कि हेसखि तू नहींमानती है तोमैं तुझेसुनाऊंहूं सुनु यह बातहै कि मैं महराजसे हमेशः उरहनादिया करतीथी कि आप परस्त्रियोंके यहां जाया करतेहौ तौ वो सदैव मुझे झुंठाय दिया करतेथे कलके दिन फिर मैंने कुछ हाल सुनकर रातको उनसे कहा तौये मेरे भाग्यकी बातहै कि रात उन्होंने अपने मनका सच्चाभेद मुझसे कहिदिया कि हे प्रिया औरतो मैं कहीं नहीं जाताहूं जोकभी जाताभीहूं तो तुम्हारी जो परम प्रिय चन्द्रावलि सखीहै वो मुझसेभी सनेह मानती है जब तब कभी उसके घरतो मैं जरूर चला जाताहूं और ये भी कहाथा कि कल मैं उसके यहां जाऊंगा सो अभीतक महराज तेरे यहां आये नहीं इसका क्या कारणहै मैंतो उनकेही सबबसे आज

तेरे यहां आईहूं तो चन्द्रावलि को प्रियाजीका वचन सुनकर यह निश्चयहुआ क्या आश्चर्य्य है जो महराजने यह बात कहिदीहोय क्योंकि वोतो रसिक शिरोमणि हैं ऐसा जानकर हँसपड़ी और हाथ जोड़कर महरानीजी से कहिने लगी कि हे प्यारी सच है जैसी कि आप की ममता मेरे ऊपर रहा करती है वैसिहि आपकी सगी समझकर मेरे ऊपर महराज भी कृपा किया करते हैं आने को तो जरूर कहाथा लेकिन अभी आये नहीं हैं ऐसा उसके मुखसे सुनकर सोई महरानी उससे पूंछने लगीं कि भला सखी यह तो मुझे बतलाव कि हमारे महराजको अपने यहां बुलायकर कुछ उन की खातिर भी करती है या कि उनको वे सनमानहीं भेज दिया करती है चन्द्रावलि हाथ जोड़ कर कहिने लगी कि महरानी जी आप कैसी बात कहिती हैं ऐसी भी कोई मूर्ख होयगी कि जिसके यहां साक्षात् महराज पधारें और फिर उनकी कोई खातिर वा सन्मान न करे महरानी पूंछने लगीं तोतू क्या खातिर उनकी करती है सो बतलाउ महरानीकी बातों में आनकर चन्द्रावलि हँसिकर प्रियाजी का हाथ पकड़ उठ खड़ी हुई और कहनेलगी चलो दिखलाऊं जहां के रंगमहिल में महराजके वास्ते शय्या सजीथी और खातिरदारीके अनेकसामान मेवा मिष्ठान इतर इलाची पान रखेथे जाय दिखलाये महरानीने सब सामानों पर नजर डाली तो क्या देखा कि और सब चीजें तो मौजूद हैं परंतु रति

कराके वास्ते जौन बलदायक पदार्थ जो दूधहै सो नहीं है ऐसा देख उसको धिक्कार दै कहिती भई कि बस इसी तरह की खातिरदारी कीजाती है तू केलि रसके स्वाद को क्या जानैं तू बड़ी गँवारहै वो मुसिक्यायकर कहिने लगी कि महरानी कौनसी बात की कमताई है सोतो कहिये तब प्रियाजी उस्से यों कहतीभई कि

टीका ॥ ६६ ॥ [१] अरीसखि [२] दूधतो [३] मँगाउ [४] महराज के [५] वास्ते (वोकुछ रुकनेलगी तो महरानीने कहा नहीं २ वह कुछ) [६] निसप्रयोजनीय (वस्तु) [७] मती [८] समझिये (जो कुछके तेरा खर्चा पड़ैगा सो वह) [९] खर्चा [१०] भोग संयोग का [११] सुखरूपी [१२] सूद [१३] सहित (तुझे) [१४] मिल जायगा॥ [१५] अरी [१६] प्यारी (मैंनेतुझे लाखों बातोंमेंसे) [१७] छटीहुई (यहएक) [१८] शिक्षारूपीऔषधी [१९] बतलायदीहै (अपनी पुस्तकवा बहीके) [२०] पत्रा व [२१] पन्नामें लिख [२२] रखु जो कुछ के गोपाललालको (दूधके पिलानेमें तुझे) [२३] आनन्द का [२४] सार [२५] प्राप्त होय [२६] सोतो (कलह मिलकरके मुझसे) [२७] कहिना (कियह) [२८] मजाथा ॥ (पुष्प एक नक्षत्र कानामहै और नक्षत्रोंका राजा चन्द्रमा है तिस सरीखा जिसका मुख होय उसे कहिये पुष्पराज आननि सोई महरानी कहितीभई कि) [२९] हेसखि [३०] चन्द्रमुखी गोमेदक कहिये गऊके मेदेका निकसा हुआ जो [३१] दूधहै (उसमें) [३२] बड़ा ऐश्वर्य (व) [३३] गुणहै (और जो स्त्री अपने मित्र को रतिके पश्चात् दुग्ध गृहण करावती) [३४] नहींहै तौ (उसके पतिके शरीर का जो) [३५] हाथी (सरीखा बलवान) [३६] कामदेवका [३७] बल व ताकत है (सो थोड़ेही दिनोंमें) [३८] निर्बल होजाताहै (यानी जो पुरुष रतिकरने के पीछे दूध नहीं पीता है सो थोड़ेही दिनोंमें नपुंशक होजाताहै इस्से)॥ [३९] हे [४०] सखि (यह शिक्षावन कुछ मैं तुझे आजकेही वास्ते नहीं देतीहूं) [४१] देखु [४२] सुनले

लालजी महराजको प्रतिदिन (दूध पिलावना) उचितहै (वोदूध कैसा गुणदायकहै कि) अत्यन्त ताकत देनेवाला (और) मूंगे के समान लालरंगत (करके बदनकी ताकत पर) चिमित्कार कर देताहै ॥ इति ॥

परिहास्य शिक्षा ॥

गुप्तानायका ॥

गोटेवारी दूतिका प्रसंग गोटा किनारी ॥

अथ गोटा किनारी जात्यानुमानसंख्या ॥ १० ॥

गोटा १ पट्टा २ दाख (व) डोरी ३ पट (व) पटनी ४ किरन ५ बादला ६ धनुप ७ कैतून ८ बनत ९ कलावत्तू ॥ १० इति ॥

॥ अन्योक्तिक कवित्त ॥ १०० ॥

गुटियाले दाम पट गंगयमुनी विहारु पठिया लेसंग गोटवाल नवचालकी । बादला किरन होपैरंगो रसिकौं दृगनु धनु शर रूप साज चालैं चढ़ पालकी ॥ कई तूने सुन्दर बनतके बनाये जोड़ सो सज कलावतूरी यौवनरसालकी ॥ जलविहारमांहि जोहि नंदकेललन मिल करिहैं गुपाललालजूसौं जैगुपालकी ॥ इति ॥

अथ संधिप्रकरण ॥ कल+अग्र+आवतू=कलावतू ॥ १ ॥

सखिप्रति गोटेवारी दूतिका की उक्ति ॥

प्रसङ्ग १०० ॥ कोई एक गोटेवारिन दूतिका एक नवयौवना सुशीलासुकुमारीपर अपनी मतलबकी रङ्गत चढ़ाउतीभई उसकी बहुतसी प्रशंसाकर यहकहती भई कि हे सखि कलकेरोज जलविहारका मेलाहै सो नहीं दे-

खनेको चलैंगी वहांतो बड़े बड़े अच्छे रसिकजन और अनेकों एकसे एक रूपवतीस्त्रियां अपने २ परम अनूठे शृंगारादिकों को साजकर आया करती हैं और कृष्ण महाराजभी अपनी सलोनी शोभा सजायकर आवते हैं ऐसा सुन कर उसने कहा तबतो जरूर चलूंगी दूती उसकी मंशा पायकर बोल उठी तौ मैं बतलाऊं तिसढंग से चलु कि ॥

टीका ॥ १०० ॥ (हे सखि खर्चके वास्ते जो कुछ) [1]रुपये [2]गोटमेंघुरसने (और) गंगायमुनी यानी [3]सुनहिले रूपहिले कामके [4]कपड़े [5]पहिनले (औरकोईएक) अपनी [6]साथवाली [7]थोड़ीउम्रकी नई [8]शोभावाली स्त्री [9]साथ में लेले ॥ [10]काहेसे (कि वा मेला है) [11]उस [12]समाज में रसिकों कहिये [13]इश्कबाजों की [14]आंखोंसे [15]चोटैं [16]होवेहींगी (सो) [17]यौवनरूपी [18]धनुष [19]बाण [20]सजायकर [21]पीनसवार [22]सवारहो (हम तुम सबजनी) [23]चलैं ॥ (और) हे [24]सखि [25]तुझने [26]कईएक जो [27]अच्छी २ [28]बनावटकी [29]पोशाकें [30]बनाई [31]हैं तिनमें से [32]पहिरकर (मेरेघरपर) तैं [33]कलह[34]आउ (तौ हे) [35]सुन्दर रूपवाली ॥ (उस) [36]जल विहारके [37]मेलेमें [38]नन्दकुँवर कन्हाई को [39]ढूंढ़कर [40]मिलकरके (उनसे हम तुम भी) [41]रामराम [42]करैंगी ॥

उपदेश ॥

उत्साहवर्द्धनीनायका ॥

बिसातिन दूतिका ॥

प्रसङ्ग बिसातखानेका ॥

वस्तुअनुमान संख्या ॥ १३ ॥

कंघी व ककही १ डोरी डोरा २ आइना व शीसा ३ सिंगरफ

व सेंदूर ४ डबिया ५ काजर व सुर्मा ६ मिस्सी व मंजन ७ मोती ८ जोर व चूड़ी ९ बट्टा १० सूई ११ पेंचक १२ तक्की १३ ॥

अन्योक्तिक प्रश्णोत्तरी कवित्त ॥ १०१ ॥

लीजिये बिसातनु का कहीं प्रेम डोरी मन आई गाहिं ध्यान बात मोर जा निहोरेकी । शुभ संग रक्त डबियाले उर वाक्य मोर कज राखे कौन मिसी मो ती मनजोरेकी ॥ बट्टा जो लगाहि सुई सीख ना सिखैबेकी हौं येंचपेंच की कहनजानिये छोरेकी । तर कना मोरीही ललन यह पक्षकी कि मो ती बिनुप्रीति वृथा जानि जग थोरेकी ॥ इति ॥

सखिप्रति बिसातिन दूतिका वचनम् ॥

प्रसङ्ग ॥ १०१ ॥ कोई एक नवयौवना सुकुमारी को कहीं किसी बिसातिन दूतिका से जान पहिचान होगई जब किसी राह बाट में मिलजाया करे तो राम रमौअल होनेपर वह सुकुमारीसे हमेशा श्रीकृष्ण महाराजके मिलनेको कहाकरै परन्तु वो सुनकर चुप रहिजाया करतीथी एकदिन कहीं वो दूती बाजारमें किसी बिसाती की दूकानपर कुछ सौदालेरही थी इतनेमें कहीं वो सुकुमारी उसके नजर पड़ी तो उसको देखकर वो बिसातखाने के ज़िलेमें उससे यह कहतीभई कि ॥

टीका ॥ १०१ ॥ (हे सखि तूभी) कुछमोल लैले (उसनेकहा) क्या कहती है

(दू०व०) प्रीतिरूपी सुन्दर डोरी (जिसमें बांधने को उसने कुछ उत्तर नहीं दिया तौ फिर दूतीबोली कि) मेरी यह बिनती का वचन (तेरे) ख्यालमें नहीं आया॥ (पुनः सखीबोली क्या कहा दू०व०) सुन्दर सूक्ष्म सत्संग (यह) मेरा वचन मन में रखले (हे) मेरी प्यारी (महाराजसे, प्रीति करनेमें (तू) किस कारणसे (अपने मनमें) आंट (व)रुकावट रखती है॥ (इस बात में तू निसाखातिररहु कि) जिसमें बदनामी होजाय सो सलाह मैं (कभी) नहीं देऊंगी (और, पेंचपेंच व ओछी सलाह देना ओछीबुद्धिवालोंका कामहै॥ (फिर) मेरी प्यारीनारि मेरीतो छेड़छांड़ इस प्रसंगकीहै यानी (कोई) प्यारे मित्रके स्नेहबिना (यह) संसारमें थोड़े दिनोंकी मनुष्यके चोलेकी जिन्दगी निष्फलही है॥ इति॥

प्रसंग कविजनानु॥

अथ पुराचीन कविजन नामानि वर्णनानुमान॥ ३०॥

बेनी १ देव २ भगवन्त ३ द्विजदेव ४ पदमाकर ५ शम्भु ६ सुन्दर ७ नवीन ८ ठाकुर ९ नाथ १० नौनिधि ११ अनन्त १२ सुखदेव १३ दयानिधि १४ घनआनँद १५ तुलसी १६ निवाज १७ दास १८ ब्रह्म १९ गणिदेव २० महादेव २१ अजबेश २२ हरिचन्द २३ चन्द २४ शेखर २५ अधारि २६ गंग २७ शिव २८ दयाल २९ ललन ३०॥ इति॥

अन्योक्तिक कवित्त॥ १८२॥

बेनीके सुदेव भगवन्त द्विजदेव सेवी पद्माकर अभी शम्भु चक्र धर पायो है। सुन्दर नवीन ठाकुरसु दा ललन नाथ नौनिधि अनन्त सुख देवन सुहायो है॥ दयानिधि घनानन्द तुलसी नि-

बाजै दास ब्रह्म माणिदेव महादेव जिन्ह ठायो है। अजवेश हर चन्द्र शेखर अधारि गंग शिव सो दयाल देव दूजो ना गनायो है ॥ इति ॥

श्रीमहादेव प्रभाव वर्णन ॥

टीका ॥ १०२ ॥ (कैसे महादेवजी महाराज हैं कि जिनको) वह श्रेष्ठ सुन्दर स्वामी पृथिवी के देवता ब्राह्मणों को पूजनेवाले भगवान् ने कमल पुष्पसमूह से पूजकर महादेवजी से सुदर्शनचक्र वरदानमें प्राप्तकिया ॥ (और फिर कैसे महादेव जी हैं) उत्तम (व) पुनीत ऊंचीपदवी (व) पुत्र के देनेवाले स्वामी (व) नवों निद्धी और अथाह सुन्दर आनन्द के देनेवाले हैं ॥ (तथा) कृपाकेसागर अत्यन्त आनन्द स्वरूप जचै हैं (अरु) सेवकोंपर कृपा करें व उद्धार करै हैं जिन को पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दने देवतों में शिरोमणि भारी देवता स्थापित किया है ॥ अपूर्व स्वामी महादेव चन्द्रमा ललाट गंगाजी के धारण करनेवाले (ऐसे जो) शङ्कर हैं तिन सरीखा दया करनेवाला दूसरा देवता नहीं कहागया है ॥

प्रसंगकविजनानु ॥

अथ कविनामानि वर्णनानुमान ॥ १५ ॥

श्रीपति १ रघुराज २ ऋषिनाथ ३ कविराज ४ श्रीधर ५ सरदार ६ मुबारख ७ आलम ८ द्विज ९ पण्डित १० नरेन्द्र ११ छ-निपाल १२ परमेश १३ ललनेश (व) ललन १४ पारस १५ इति ॥

अन्योक्तिकसवैया ॥ १०३ ॥

श्रीपति श्रीरघुराज करै ऋषि नाथ वही कवि राज करैया। श्री

धर औ सरदार मुबारख दा कुल आलम आश पुरैया ॥ धौं द्विज पंडित बोध नरेन्द्र सिंहो छतिपाल सुमेरु सृजैया । वो परमेश सदा ललनेश प्रदा सुख पारस पुंज पुजैया ॥ इति ॥

श्रीरामचन्द्र प्रताप वर्णन ॥

टीका॥ १०३ ॥ श्रीरामचन्द्र महाराजही धनवान कारके हैं । तथा सन्तों में शिरोमणि व कवियों में प्रधान वोही करनेवाले हैं ॥ और मुखिया चिरंजीवों में लक्ष्मी के स्वामी समस्त संसार की मनसा पूरी कर देनेवाले (और मुबारख यानै अचल आनंदका सुख) देनेवाले हैं ॥ अथवा ब्राह्मण व ज्ञानज्ञ (व) बुद्धिमान साक्षर व विवेकी व शूरा व बलवान् व छत्रधारियों में शिरोमणि पैदा करनेवाले हैं ॥ व पितारूपी परमेश्वर सदैव आनन्दरूपी पारस का समूह के प्राप्त कराय देनेवाले हैं ॥ इति ॥

प्रसंगकविजनानु ॥

अथ कविनामानि वर्णनानुमान ॥ २२ ॥

प्रेम १ मकरन्द २ बलदेव ३ वीर ४ श्याम ५ रामनाथ ६ रसखानि ७ राज ८ महाराज ९ देवकीनन्दन १० गिरिधरदास ११ विनोद १२ महाकवि १३ शिव १४ शेषजी १५ नरेश १६ मण्डन १७ दिगपाल १८ प्रमोदकवि १९ ललन २० भूपण २१ गोपाल २२ ॥ इति ॥

अन्योक्तिक कवित्त ॥ १०४ ॥

प्रेम मकरन्द सों पसन्द बलदेव वीर श्याम राम नाथ रसखानि निधि मोदके । राजन के राज महराज देवकीनँदन गिरिधर दा-

सनकी आश दा विनोदके ॥ महाकवि बानी शिव भुजँगनेश
भनि मरडनकरत दिग पालहू प्रमोदके । अवधललन भक्त भूषण
गोपाल माहिं भेद जौन मानैं तासु नाशैं सुख गोदके ॥ इति ॥

श्रीरामचन्द्र व कृष्णचन्द्र महिमा वर्णन ॥

टीका ॥ १०४॥ शेषावतारी बलदाऊजीके भ्राता श्रीकृष्णचन्द्र व श्रीरामचन्द्र जी स्वामी सर्व्वरसोंकेस्थल व आनन्द के सागर प्रीतिरूपी बासना सेहीं प्रसन्न होते हैं ॥ राजन के राजा महाराजन के महाराजा देवकी के पुत्र गोवर्द्धन पर्व्वत के धारण करनेवाले सेवकों की आनन्दरूपी कामना के देनेवाले हैं ॥ महान् कवि, सरस्वती, महादेव, शेषजी वर्णनकरतेहैं व दशोंदिशानके पालक आनन्दपूर्व्वक सिद्ध करते (व) मानते हैं ॥ रामचन्द्रजी व दासों के आभूषण कृष्णचन्द्र में जोकोई फर्क समझताहै तिसके सर्व्वआनन्दभोग और गोदी के पुत्र विनाश होजाते हैं ॥ इति ॥

दो० श्रीनन्हेमत गुरुके शिष्य भतीजे ख्यात ॥
पितु ज्वालापरसादमम ललन नाम द्विजगात ॥ १ ॥

इति श्रीललनचन्द्रिकापरिडतललनपियाशर्म्मासारस्वत
अष्टवंशभारद्वाजीफर्रुखाबादमुहल्लामिश्रकूंचानिवासी
कुमारीसनायकप्रसिद्धकविविरचितकवित्तललनिका
सम्पूर्णमगमत् ॥
